जनवरी-जून 1998 10 रूपये

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

लोक सभा चुनाव'98 पर विशेष
लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ
फिर बेताल उसी डाल
ब्राह्मणवाद बनाम समाजवाद
डॉ० राजनारायण की कहानी - नई पीढ़ी
कंप्यूटर युग 'वर्ष 2000'-एक समस्या

राष्ट्रीय विचार मंच, पटना

GOLDEN

GOLDEN POLYMEX (INDIA) LIMITED

Regd. Office :

Uma Shanker Lane, Mogalpura, Patna City-800008

Ph. : 640212, 640015, Fax : 0612-644525

Mfrs. Of :

High Barrier - Extruded Multilayar Films

H.M., LLDPE, LDPE Bags, Gravure

&

Flexo Printing etc.

राष्ट्रीय विचार
पत्रिका

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित
मंच का वैचारिक मुख-पत्र
वर्ष-2, जनवरी-जून, 1998 अंक-2

पत्रिका-परिवार

संरक्षक :
मान्य. न्यायाधीश श्री बनवारी लाल यादव
पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि
श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.

प्रधान संपादक :
सिद्धेश्वर

प्रबंध संपादक :
डॉ. एस. एफ. रब

संपादक :
डॉ. हीरालाल सहनी

सह संपादक :
कामेश्वर मानव

सहायक संपादक :
राधेश्याम, सुधीर रंजन

संपादन सहायक :
मनोज कुमार, शिव कुमार सिंह

संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना – 800 001

विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक :
राम प्रताप सिंह

सहायक प्रबंधक :
अरुण कुमार गौतम

साज-सज्जा :
सुतेन्द्र कुमार, एन. रहमान

कार्यालय सहायक :
विष्णुदेव प्रसाद, दिलीप कुमार

मूल्य : एक प्रति 10 रुपये

आजीवन सदस्य : एक हजार रुपये

प्रकाशक :
राष्ट्रीय विचार मंच
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001
दूरभाष : 228519

कम्पोजिंग :
कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट
फ्रेजर रोड, पटना, फोन : 231708

मुद्रक :
वैशाली प्रिन्टर्स
श्रीकृष्णपुरी, पटना, फोन : 220568

सृजन और सृजनहार

पाठकीय पन्ना 2-5

सम्पादकीय 6

लोकसभा चुनाव , 1998 7

आमुक आलेख
फिर बेताल उसी डाल ❒ सिद्धेश्वर 7

त्रिशंकु संसद ❒ डॉ. शिवनारायण 9

चुनाव परिणाम एवं विश्लेषण 10

विचार/चिन्तन
- लोकतन्त्र के समक्ष चुनौतियाँ ❒ प्रो. वीरकेश्वर प्र. सिंह 15
- ब्राहमणवाद बनाम समाजवाद ❒ रामाधार सिंह 18
- गांधी और साम्यवादी विचार-धारा ❒ विनय कुमार सिन्हा 19

समाज :
- भिक्षावृत्ति : एक सामाजिक कलंक ❒ कृष्ण कुमार राय 20

राष्ट्र :
- सुभद्रा जी एवं उनकी कविता : ❒ डॉ. लक्ष्मण प्र.नायक 22
- आजादी के 50 साल; उपलब्धियाँ ❒ संजय कुमार मंगलम् 23

समाचार-दर-समाचार :
- मराठी भाषा के शीर्षस्थ कवि-नारायण सुर्वे 24
- क्या साहित्यकार जाफरी के जीवन से सीखेंगे ? 25
- रचनाधर्मियों की संवेदनहीनता का एक नमूना 26
- काश ! नेता गुलजारी लाल नंदा के पदचिह्नों पर चले ? 27
- चुनाव जो सुन्दर लाल बहुगुणा ने देखा 27
- कहानी डाक टिकट की 28

साहित्य :
- साहित्यकार समय की चुनौती को स्वीकारें ❒ सुशीला झा 30
- कहानी-नई पीढ़ी ❒ डॉ. राजनारायण राय 32
- रेणु की कथाओं में विचारधारात्मक संघर्ष ❒ प्रो. लखन लाल सिंह 'आरोही' 34

लेखक के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं

काव्यांजलि :
- अटल जी की तीन कविताएं, परदेशी की दो कविताएं 36
- दो चार क्षण मैं हांफ लूंगी, दिल्ली की गद्दी 37
- दोहे नए दौर के, मेरा देश, गजल 38
- दो गजलें, क्षणिकाएं, गीत 39
- हवस कुर्सी का, वन्दे मातरम् 40
- बचपन, जिंदगी, दो कविताएं 41
- गीत, स्वर्ण वर्ष, गीत 42

हास्य-व्यंग्य :
- संप्रभुता ❒ प्रो. डी. आर. ब्रह्मचारी 43
- महिला मुक्ति मोर्चा ❒ कृष्ण प्र. 'किशु' 44
- जुलूस की ठेकेदारी ❒ चितरंजन भारती 45

न्याय-जगत् :
- न्यायपालिका की उपयोगिता ❒ कामेश्वर मानव 46

नारी जगत् :
- कदम उठाती औरत की पदचाप ❒ रूबी भूषण 47

गतिविधियाँ :
- मंच के कार्यकलापों की एक झलक ❒ दिलीप कुमार 49

सेहत-सलाह :
- योग की उपादेयता ❒ गंगा प्र. 'गंगेश' 52
- माँ, बच्चा और स्वास्थ्य ❒ डॉ. अवधेश प्र. सिंह 52

विज्ञान-जगत् :
- कंप्युटर युग 'वर्ष 2000'-एक समस्या ❒ सुधीर रंजन 53
- नई खोज– हू मैन क्लोनींग 53

पर्यावरण :
- इन्हें भी चाहिए स्वच्छ पर्यावरण ❒ समीर कु. सिन्हा 54

संस्मरण :
- मुम्बई की एक सुखद यात्रा ❒ सिद्धेश्वर 55
- एक अकिंचन नौजवान ❒ शारदा नंद 57

समीक्षा :
- सार्थक, यथार्थ, सामयिक, सर्वोपयोगी ❒ के.बी. सक्सेना 58

फिल्म :
- 29 वाँ अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह ❒ अजय कुमार 59

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रवेशांक पर सुधि पाठकों के ढेर सारे पत्र एवं शुभकामनाएं प्राप्त हुई हैं जिससे पत्रिका-परिवार को प्रोत्साहन मिला है क्योंकि पाठकों के स्नेहिल दृष्टि ही पत्र-पत्रिकाओं के प्रेरणा के स्रोत और सम्बल होते हैं । तो यहाँ प्रस्तुत हैं प्राप्त पत्रों के कुछ अंश । -प्रधान संपादक

साहित्य का आगार

"राष्ट्रीय विचार पत्रिका" साहित्य का आगार है ,
सद्भावमय सौहाद्र का यह बोधित आधार है ॥

चिंतन समाहित लेख, कविता सुधारे परिवेश,
देश-समाज, राजनीति, कला, खेल और व्यापार है ॥

उपभोक्ता, विज्ञान, नारी, समीक्षा, संस्मरण, न्याय,
कला, संस्कृति, स्वास्थ्य, सिने, साहित्य, समाचार है ॥

परिमार्जित भाषा, सुमुद्रण, आवरण नयनाभिराम-'पत्रिका',
यह शारदा पुत्रों पर एक उपकार है ॥

श्याम, बनवारी, जिया, सिद्धेश्वर की कोशिशे,
मानव, रब, राम, शिव, मनोज एकाकार है ॥

साधना हो सफल, मन्वन्तर तलक यह हो अमर ताजगी,
तुहिना सी, अर्पित 'सलिल' का आभार है ॥

आदमी इन्सान बन पाएं, यही हो लक्ष्य एक,
राष्ट्रीयता अस्तित्व का मन-प्राण सदाचार है ॥

हिन्द के मस्तक की बिन्दी, फले-फूले सदा हिन्दी-
नवारूप, नव जागरण साहित्य का सहकार है ॥

इ. संजीव वर्मा 'सलिल'
जबलपुर

प्रयास पवित्र और उत्तम

आपके प्रयास पवित्र, उत्तम और सराहनीय हैं । हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं । ईश्वर आपको सफलता और कीर्ति प्रदान करें !

शिवेन्द्र प्र. सिंह
बोकारो इस्पात नगर

पत्रिका पठनीय एवं संग्रहनीय

पत्र के साथ 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का प्रवेशांक मिला । अंक देखकर प्रसन्नता हुई । आपने इसमें काफी पठनीय सामग्री एकत्र कर इस अंक को संग्रहनीय बना दिया है ।

संभवतः आपकी अस्वस्थता के कारण इस अंक में मुद्रण संबंधी भूलें रह गईं । अब आपका स्वास्थ्य कैसा है ? ऐसी सुन्दर पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाइयाँ ।

प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद
राज्यपाल, त्रिपुरा

उज्ज्वल भविष्य का संकेतक

आपका आयोजन निश्चित रूप से अत्यन्त विराट स्तर का है । राजनीति, साहित्य, संस्कृति, समाज तथा विज्ञानादि को इस अंक में जो व्यापक प्रतिनिधित्व मिला है, वह इसके उज्ज्वल भविष्य का संकेतक है । मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें । मैं पत्रिका को अपने रचनात्मक सहयोग का वचन देता हूँ । यथाशीघ्र मैं आपकी पत्रिका के लिए कुछ-कुछ भेजूँगा ।

राजेन्द्र गौतम
बी-226, राजनगर, पालम,नई दिल्ली

हर वर्ग के हर तरह की सामग्री

आपने बहुत कुछ समेटने, परोसने का प्रयास किया है । हर वर्ग के हर तरह की सामग्री है । वैसे पत्रिका को किसी 'विशेष' पर केन्द्रित करते तो मेरे विचार से अधिक उत्तम होता ! क्योंकि सबकुछ साथ कर तो ढेर-सी रंगीन चमकदार पत्रिका निकल रही हैं । उन पूंजीपतियों का मुकाबला कर पाएंगे क्या ? बहरहाल आगाज अच्छा है, बधाई लें । नियमितता की ईश्वर से प्रार्थना है ।

अशोक अंजुम
नई कॉलोनी, अलीगढ़

पत्रिका में विविधता

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का अक्तूबर, 1997 अंक मिला । सामग्री की विविधता पत्रिका को पठनीय और संग्रहनीय बनाती है । पटना (बिहार) की वर्तमान स्थिति भी पत्रिका में दिग्दर्शित होती है । सत्प्रयास सफल हो, यही मेरी मंगलकामना है ।

डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी
संपादक : 'नवनीत' हिन्दी डाइजेस्ट
क.मा. मुंशी मार्ग, मुम्बई-400006

रचनाएं विचारोत्तेजक

धीर गंभीर राष्ट्रीय विचार धारा वाली पत्रिका का संपादन आप जैसा विचारवान व्यक्ति कर रहा है, यह देखकर प्रसन्नता हुई । सभी रचनाएं गंभीर और विचारोत्तेजक है । आशा है यह पत्रिका शीघ्र ही समाज में सम्मानजनक स्थान बनाएगी, साथ ही सामाजिक क्रांति में अपनी महती भूमिका अदा करेगी । हमारा सहयोग एवं समर्थन राष्ट्रीय विचार मंच एवं राष्ट्रीय विचार पत्रिका के साथ सदैव रहेगा ।

चितरंजन भारती
पंचग्राम, असम

आशा और विश्वास का संदेश

आज की जातिगत राजनीति, वर्ग, वर्ण, धर्म और भाषा के लगाव ने राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम और मानवता को एक किनारे कर दिया है । 'कुर्सी' और 'सत्ता की लगाम' का मोह ही सर्वोपरि हो गया है । संशयों के ऐसे धुंधलकों के बीच राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित यह 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' निश्चित रूप से देश की अखण्डता और राष्ट्रप्रेमियों के लिए एक नया संदेश लेकर आई है आशा का, विश्वास का । पत्रिका में कोई विषय अछूता नहीं रह गया है । सभी को इससे चहुंमुखी भरपूर सामग्री मिलती रहेगी, ऐसी आशा है । इस अच्छे प्रकाशन के लिए आपको बधाई ।

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

युग-परिवेश का प्रतिबिम्ब

आपने दृष्टि सम्पन्न, संकल्पित, समर्थ विचार को-सुधीजनों एवं साहित्यकारों का सद्भाव-सहयोग प्राप्त कर युग एवं परिवेश की समग्रता को ध्वनित-प्रतिध्वनित करती राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया है । प्रवेशांक आश्वस्त करता है कि यह अपने उद्देश्यों में सफल होगी । इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

निर्मला जोशी
अरेरा कॉलोनी, भोपाल

कहानी उपेक्षित क्यों ?

आपने कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक राष्ट्रीय विचारों को अपने विविध स्तम्भों के माध्यम से उजागर किया है । भाई, कहानी का प्रकाशन क्यों नहीं ? हो सकता है तकनीकी बाधा हो । किन्तु साहित्यिक पत्र-पत्रिकारिता का विकास एक प्रक्रिया के अनुकूल होता है । कोई प्रयास एक बारगी सफल हो जाय, संभव नहीं । किन्तु प्रवेशांक ही साबित कर देता है कि प्रकाशन-परिवार के सदस्यगण अपने-अपने दायित्वों के प्रति सजग एवं समर्पित हैं तो कोई कारण नहीं बनता कि राष्ट्रीय विचार की संवाहिका सरित प्रवाह में कोई अवरोध हो, पृष्ठभूमि में चाहे जो अवरोध हो ।

उम्मीद ही नहीं अपितु मुझे पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय विचार पत्रिका पत्रकारिता जगत् में मील का पत्थर साबित होगी ।

रवीन्द्र ठाकुर
पूर्व मध्य रेलवे, समस्तीपुर (बिहार)

सामग्री उत्कृष्ट एवं प्रेरणादायक

मैंने पत्रिका का आद्योपान्त अवलोकन किया। इसमें प्रकाशित सामग्री उत्कृष्ट एवं प्रेरणादायक है । संपादकीय विचारपूर्ण है । प्रजातन्त्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब पत्र-पत्रिकाएं निष्पक्ष, निडर और मजबूत हों । सुसंपादन के लिए पुनः बहुत-बहुत बधाई ।

सुशीला झा
हनुमान नगर, पटना

कथा-साहित्य स्तम्भ हो

पत्रिका-परिवार के इस साहसिक सत्प्रयास के लिए हार्दिक बधाई । गेटअप भी आकर्षक है । पत्रिका में विभिन्न स्तम्भों को स्थान देकर उसे काफी उपयोगी और पठनीय बनाने का प्रयास किया गया है । फिर भी मेरा एक सुझाव है कि साहित्य-जगत् स्तम्भ के अन्तर्गत अथवा कथा-साहित्य के शीर्षक से एक अतिरिक्त स्तम्भ भी सृजित कर उसे और रोचक और पठनीय बनाया जा सकता है । साहित्य-जगत् स्तम्भ के अन्तर्गत साहित्य की अन्य विधाओं की रचनाएं भी छापी जा सकती हैं । मैं पत्रिका को अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूँ ।

कृष्ण कुमार राय
अर्दली बाजार, वाराणसी

विस्मयकारी एवं स्तरीय पत्रिका

आपके इस सफल प्रयास के लिए अनेकानेक साधुवाद । पत्रिका के अंतरंग और बहिरंग दोनों आकर्षक हैं । पटने में ऐसी स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन विस्मयकारी भी है । आपके संपादकीय का यह कथन-वैचारिक संकट का सबसे दरिद्र प्रदर्शन संस्कृति और साहित्य के ताबेदारों द्वारा ही किया जा रहा है-सर्वथा सत्य है । इस विचारोत्तेजक संपादकीय के लिए आप धन्यवादार्त हैं । डा. राठौर, श्री हृषीकेश पाठक, प्रो. रामबुझावन सिंह की रचनाएं विशेष आकर्षित करती हैं । स्व. तोमर पर लिखा आपका संस्मरण भी स्वागत योग्य है । काव्यांजलि में श्री चन्द्र प्रकाश माया का गीत और वसुन्धरा दास की गजल उल्लेखनीय है । आशा है पत्रिका के स्तर को आप बनाए रखेंगे ।

डा. भगवतीशरण मिश्र
289, एम.आई.जी., लोहिया नगर, पटना-20

पत्रिका के विभिन्न स्तम्भों में छपी सामग्रियों पर आपके विचारों का स्वागत है । आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं । पता-सहायक संपादक, 'पाठकीय पन्ना' रा.वि. पत्रिका 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001

सच के लिए संकल्पित

संपादकीय एवं न्याय-जगत् के अन्तर्गत कामेश्वर मानव जी का लेख पढ़ा तो मेरे दबे हुए विचार उछाल मारने लगे । क्योंकि अभी तक मैं यही समझ रहा था कि इस देश में समाज के उत्थान के लिए सही एवं खरी-खोटी बात ईमानदारी पूर्वक बोलना एवं करना ही बेवकूफी है लेकिन इस पत्रिका को पढ़ने के उपरान्त मैंने महसूस किया कि मेरी सोच गलत थी । आज भी ऐसे लोग हैं, ऐसा मंच या संगठन है जो समाज की प्रगति के लिए केवल सच, कटु ही क्यों न हो, बोलने के लिए संकल्प किए हुए है चाहे वह बात व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं यहां तक कि न्यायपालिका के ही खिलाफ क्यों न जाती हो ।

अन्त में एक सुझाव यह कि पत्रिका के प्रत्येक अंक में एक स्थायी स्तम्भ आपके पत्र के लिए भी होना चाहिए ताकि पाठक भी अपनी बात पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुँचा सकें ।

डा. अरुण कुमार
राँची रोड, बिहार शरीफ (नालन्दा)

भाव-प्रधान एवं आकर्षक आवरण

इसके आकार-प्रकार तो अनुकूल हैं ही, बाहरी आवरण का ग्लेजिंग भी आकर्षक है । इस पर इंगित चिह्न-तिरंगा झंडा, गाँधीजी को पीठ घुमाकर रहने का अर्थ मूल्य विहीनता तथा स्वतन्त्रता की 50वीं वर्षगांठ पर गांधीजी को शून्य का तात्पर्य उनकी अप्रासंगिकता तथा सरदार पटेल के चित्र आदि भाव प्रेरक हैं । संपादकीय विचारोत्तेजक तथा डा. राठौर के आलेख 'क्या सरदार पटेल भारत- विभाजन के लिए उत्तरदायी रहे हैं?' शोधपूर्ण हैं । समाचारों में महारानी एलिजाबेथ की भारत यात्रा', 'बिहार में नून से सस्ता खून' तथा 'समता पार्टी के समक्ष एक सवाल' और उस पर की गई टिप्पणियाँ अधिक हृदयग्राही हैं ।

इसी प्रकार डा. सहनी की 'चेतावनी', प्रभाकर की 'दलित मानवता' कविताएं समसामयिक एवं रोचक हैं । प्रवेशांक ही जब इतना अच्छा और आकर्षक है तो आगामी अंक तो उत्तम होगा ही ।

पत्रिका के प्रकाशन में आपका,
भगीरथ प्रयत्न रहा है द्वेश्वर ।
परिश्रम कभी विफल नहीं होगा,
हीरा लाल सहनी साक्ष्य है दिनेश्वर ।

गंगा प्र. रोसड़ापुरी 'गंगेश'
रोसड़ा, समस्तीपुर

खेल-कूद का स्तम्भ क्यों उपेक्षित ?

पत्रिका में समाविष्ट सभी आलेख अपने आप में प्रासंगिक तथा सारगर्भित हैं । खेल-कूद का स्तम्भ क्यों उपेक्षित रहा ? पत्रिका का साज-सज्जा नयनाभिराम है । पत्रिका अपने नाम के अनुरूप राष्ट्रीय विचार की उद्घोषिका बने, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है ।

रामबाबू राज
'धरोहर' शिवाजी नगर, दरभंगा

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित पत्रिका

पत्रिका का आवरण बड़ा ही आकर्षक लगा । अन्दर के पृष्ठों के अधिकतर आलेख, कविताएं, समाचारों पर की गई टिप्पणियाँ आदि सामयिक एवं प्रासंगिक हैं । यह पत्रिका वस्तुतः राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित है । ऐसी ही पत्रिका की आज अनिवार्यता है ।

वैद्य जगदीश साह
भंडार चौक, कटहलबाड़ी, दरभंगा

बहुविध संभावनाओं से ओत- प्रोत

बहुविध संभावनाओं से ओत-प्रोत 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रवेशांक को देखा। लगभग सभी रचनाओं को देख चुका हूँ। मनोरथ के बीज को जब उद्यम का उर्वर धरातल प्राप्त हो जाता है तो बिरवा के यथेष्ट विकास में विलम्ब का अवकाश नहीं रह जाता। यही रीति है। श्लाघनीय प्रयास के लिए धन्यवाद।

प्रो. डी.आर.ब्रह्मचारी
मोहनपुर, समस्तीपुर

नई चेतना लाने का सुन्दर प्रयत्न

आज का युग प्रतियोगिता, प्रगति एवं समाज के तरह-तरह के परिवर्तनों का युग है। इस प्रकार की पत्रिकाएं निःसंदेह ऐसे वातावरण में मानव के पथ-प्रदर्शक का कार्य करती हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि सरदार पटेल जैसे व्यक्त्वि का समाज को स्मरण कराया जाय और उनके द्वारा अंकित किए गए जीवन-मूल्यों को समाज एवं अपने जीवन में ढाला जाए। आज आवश्यकता है कि हम सब अपने अन्दर के सरदार को जगावें तथा सरदार पटेल के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर इस देश के निर्माण में हम सब अपना-अपना योगदान दें।

आपकी पत्रिका का यह अंक सामाजिक एवं राजनीतिक पहलुओं पर भिन्न-भिन्न लेखों से सुशोभित है तथा सुन्दर प्रयत्न किया गया है समाज में एक नई चेतना लाने का। मैं आपके इस बहुमूल्य प्रयत्न के लिए आपको बधाई देता हूँ और इस पत्रिका में उत्तरोत्तर विकास के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ। धन्यवाद।

नन्दलाल
महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-I, बिहार, पटना

अभियान श्लाघ्य

आपके प्रेमिल सौजन्य से राष्ट्रीय विचार मंच की 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का नूतन अंक मिला, कृतज्ञ हूँ। पंफलेट के माध्यम से आपके राष्ट्रधर्मी एवं रचनात्मक विचारों को पढ़कर प्रभावित हुआ। साम्प्रतिक संदर्भ में आपकी उक्त भूमिका वंदनीय है। बुद्धिजीवियों की आँखें खोलने जैसा अभियान श्लाघ्य है। हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित हैं।

राजा चौरसिया
उमरियापान, जबलपुर (म.प्र.)

बधाई

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के लोकार्पण एवं प्रकाशन के लिए आपको बधाई। आपकी सेवा अनवरत इस पत्रिका को मार्गदर्शन के रूप में मिलती रहे, यही हमारी आकांक्षा है।

जनार्दन सिंह
मनकापुर, नागपुर (महाराष्ट्र)

'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'

साज-सज्जा अति उच्च कोटि की है। विषय विविधता, संपादन की सिद्धहस्तता जगमगाता है। संपादकीय लेख सटीक है। अठारह स्तम्भ मन-मस्तिष्क को झकझोरने वाले हैं। साथ ही पाठक के मन में 'त्वरा' की सृष्टि करता रहेगा। राजनीतिक नजरिया के अन्तर्गत 5-वेद का कदम सामयिक है, विचारोत्तेजक है। ये हमें सोचने को बाध्य करते हैं कि हमारे नेताओं में विचार शक्ति कहाँ लुप्त हो गई। वे भूल जाते हैं, गए हैं कि उन्हें जनसाधारण ने कुर्सी हथियाने के लिए नहीं भेजा, सेवा करने के लिए भेजा है।

पत्रिका का हर स्तम्भ किसी न किसी जनसमुदाय के लिए उपयोगी है जो मंच की गुणवत्ता को सार्थकता प्रदान करता है। पत्रिका दिनोंदिन उन्नति करे, यही कामना है।

डा. लक्ष्मण प्र. नायक
खैरपाली, बरगड (उड़ीसा)

बहुआयामी पक्षों को आवृत करती पत्रिका

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रवेशांक की सूचना पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। यह पहल किसी पक्ष विशेष पर केन्द्रित न होकर बहुआयामी पक्षों को आवृत करती है। बधाई। कृपया प्रवेशांक-प्रेषण से कृतार्थ करेंगे, ताकि मैं भी अपने लेखन-सहयोग से जुड़ सकूँ। पत्र-सम्पर्क भी बने। पक्ष विशेष पर दें तो कुछ भेजूँ आगामी अंकों के लिए।

डा. वीरेन्द्र कुमार बसु
एल.के.कॉलेज, सीतामढ़ी

विभिन्न विधाओं से जुड़ी पत्रिका

ज्ञान व त्याग की भूमि बिहार से प्रकाशित होने वाली 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रवेशांक पर आप तमाम पत्रिका-परिवार बधाई के पात्र हैं। 25 दिसम्बर, 97 को 'हिन्दुस्तान' दैनिक के साहित्य पृष्ठ पर इस पत्रिका की समीक्षा पढ़कर मैं दंग रह गया। विभिन्न विधाओं से जुड़ी पत्रिका के बहुआयामी रूपों से भी मैं प्रभावित हुआ।

पत्रिका की जितनी बड़ाई की जाय वो कम है, हर पन्ना में मनोहारी ज्ञानवर्द्धक स्तम्भ है।

राजेश 'चंदन'
ग्रा.-पत्रा.-शूजापुर, कटिहार

स्तरीय सामग्री एवं संपादन

सामग्री का चयन, संपादन स्तरीय है। पत्रिका अपने नाम को सार्थक करेगी। ऐसी झलक अभी से मिल रही है। मेरी शुभकामनाएं। पत्रिका निरन्तर प्रगति पथ पर मजबूती से आगे बढ़े। मेरे योग्य सेवा लिखियेगा।

प्रदीप नारायण सिंह
संपादक : 'प्रताप शोभा' हिन्दी त्रैमासिक
अचलपुर, कादीपुर, प्रतापगढ़ उ.प्र.

ज्ञानोन्मेषमूलक युगीन आकांक्षाओं की पूरक पत्रिका

आस्वाद-वैविध्य का परिवेषण करनेवाली यह पत्रिका संपादक परिवार के तनोऽधिक सम्पादन-श्रम का साक्ष्य तो उपस्थित करती ही है, आपके सारस्वत व्यक्तित्व के बहुव्यापकत्व को भी प्रमाणित करती है, तभी तो राष्ट्रीय स्तर के लेखकों का सहयोग आपने सहज ही आयात कर लिया है। भिन्न रुचि पाठकों की ज्ञानोन्मेषमूलक युगीन आकांक्षाओं की परिपूर्ति करनेवाली यह पत्रिका हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में क्रोशशिला की स्थापना करे, यही कामना है। सद्‌भावसहित।

डॉ. श्री रंजन सूरिदेव
भिखना पहाड़ी, पटना

वैचारिक दिशा बिहार के बीहड़ों से ही

राष्ट्रीय विचार मंच का गठन तथा पत्रिका का प्रकाशन दोनों ही सही दिशा में उठाए गए सार्थक कदम कहे जा सकते हैं। यह सच है कि बिहार ने हमेशा अव्यवस्था का अभिशाप झेला है, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि पूरे देश को हर युग में वैचारिक दिशा बिहार से ही मिली है। भविष्य में भी कोई रास्ता बिहार के बीहड़ों से ही मिलेगा– संकेत तो मिलने ही लगे हैं।

लेकिन राष्ट्रीय विचार मंच और पत्रिका में बिहार के बाहर का एक भी नाम न देखकर आश्चर्य हुआ। क्या आप राष्ट्रीयता को बिहार तक ही सीमित रखना चाहेंगे? क्या मैं भी कोई रचना भेजूं? पत्र देंगे।

डा. रामनिवास 'मानव'
हिसार, हरियाणा

मानवोत्थानिक उद्देश्यों के निकष पर खरी

पत्रिका के प्रवेशांक को शुरू से अंत तक पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। आलेखों के साथ अन्य रचनाओं ने भी प्रभावित, उत्प्रेरित किया। एक स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ प्रकाशित यह पत्रिका अपने मानवोत्थानिक उद्देश्यों के निकष पर खरी है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत यह पत्रिका राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव को मजबूती प्रदान करेगी, ऐसा विश्वास है। आज के विचारहीन होते माहौल को एक नई वैचारिक ऊर्जा देने में यह पत्रिका सक्षम हो, यही कामना है।

रामयतन प्रसाद यादव
मकसुदपुर, फतुहा, पटना

संपूर्ण रचना-सृजन के केन्द्रीय भाव पर ही रचनाकार का मूल्यांकन

दलित साहित्य को केन्द्र में रखकर लिखे गए दो आलेख इस अंक में शामिल हैं । डा. ब्रह्मदेव प्र. कार्यी का लेख 'हिन्दी साहित्य में दलित चेतना' कई सवालों को उठाता है । 'प्रसाद' को वे दलित चेतना का साहित्यकार स्थापित करते हैं । किसी छिटपुट रचना के आधार पर किसी रचना की वैचारिक प्रतिबद्धता तय नहीं हो सकती । उनके संपूर्ण रचना सृजन का केन्द्रीय भाव क्या है ? यह देखना आवश्यक है । उसी आधार पर रचनाकार का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए । 'कामायनी', 'आंसू', ध्रुवस्वामिनी' आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में वे किन मूल्यों और आदर्शों को स्थापित कर रहे हैं यह ज्यादा जरूरी है । यही बात 'उर्वशी' के भी संदर्भ में लागू होती है ।

'दलित का सच' आलेख में आपने दलित-साहित्य की आंतरिक ऊर्जा पहचानने की कोशिश की है जो नि:सन्देह स्वागत योग्य है । पत्रिका के दृष्टिकोण और सोच को बिखरने से बचाएं, तभी विचार की मारक शक्ति अपना प्रभाव छोड़ पाएगी ।

आशा है भविष्य में और बेहतर अंक पढ़ने को मिलेंगे । शुभकामनाएं ।

ओम प्रकाश वाल्मीकि
4, न्यू रोड स्ट्रीट, कलालों वाली गली
देहरादून-248001 (उ.प्र.)

सारस्वत महायज्ञ का सूत्रपात

दिनांक 25 दिसम्बर, 97 के 'हिन्दुस्तान' दैनिक में साहित्य परिशिष्ट पन्ने पर 'पत्रिकाओं के बाजार में राष्ट्रीय विचार' शीर्षक समीक्षा पं. विनय कुमार जी की पढ़ी । आपका यह प्रयास सराहनीय है । इस अर्थ युग में आपने राष्ट्रीय स्तर के सभी समाचारों को संकलित करके पत्रिका को नियमित प्रकाशित करने का संकल्प लेकर सारस्वत महायज्ञ का सूत्रपात किया है । मेरी ओर से अमित शुभकामनाएं । परस्पर सेवा एवं सहयोगी की भावना बनाए रखेंगे ।

डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिन्हा
व्यवस्थापक 'लेकिन'
गिद्धौर, जमुई (बिहार)

पर्यावरण पर आलेख आवश्यक

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका एक लंबी यात्रा तय कर अपने मंजिल पर पहुंचे, ऐसी कामना है । पत्रिका में लेखों एवं विचारों का अत्यधिक समावेश प्रतीत होता है । पत्रिका की स्तरीयता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि इसमें कम पर सशक्त लेख हों । हरीन्द्र विद्यार्थी जी की कविता 'नालन्दा' सराहनीय है । डा. जगदीश सिंह राठौर एवं डा. एस.एफ.रब के लेख सराहनीय एवं प्रभावशाली हैं । आज के समय में पर्यावरण एक गंभीर मुद्दा है । अत: आप इस पर लेख जरूर प्रकाशित करें । पत्रिका में फोटो को भी उचित स्थान देने की कोशिश करें । प्रुफ रीडिंग पर ध्यान देने की जरूरत है ।

समीर कुमार सिन्हा
न्यू लालजी टोला, पटना

राष्ट्रीय अवधारणाओं से ओत-प्रोत

आज जबकि राष्ट्र, समाज, परिवार व्यक्तियों में बंटते चले जा रहे हैं–'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का अवतरण निश्चय ही स्वागत के योग्य है । राष्ट्र संकट के इस संक्रमण काल में राष्ट्रीय विचारों, राष्ट्रीय संकल्पों एवं राष्ट्रीय अवधारणाओं से ओत-प्रोत यह पत्रिका अपनी यथार्थता और उपस्थिति को दर्ज कराती है । संपादकों ने परिश्रमपूर्वक इसे उपयोगी बनाने का सफल प्रयास किया है । डा. जगदीश सिंह राठौर का दो-टूक आलेख एवं हरीन्द्र विद्यार्थी की पारदर्शी कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

नलिनीकान्त
अण्डाल, पं. बंगाल

निष्प्राण होती साहित्यिक चेतना में जान

बिहार की प्रख्यात साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'राष्ट्रीय विचार मंच की 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का नयनाभिराम प्रवेशांक आद्योपांत मनोयोग पूर्वक पढ़ा । डा. जगदीश सिंह राठौर, प्रो. रामबुझावन सिंह, डा. रवीन्द्र उपाध्याय, डा. ब्रह्मदेव प्र. कार्यी आदि के निबंध इस अंक को पठनीयता से संपन्न करते हैं । सुविख्यात समाजसेवी, सहृदय जागरूक कवि श्री सिद्धेश्वर जी दलित साहित्य को परिभाषित और उसके वैशिष्ट्य को उद्घाटित करने का जो प्रयत्न अपने 'दलित साहित्य का सच' निबंध में किया है वह वैचारिक दृष्टि से गंभीर है, अत: ध्यानाकर्षी है । संकलित कविताएं स्तरीय व संग्रहनीय हैं । आज समाज में राजनीतिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना निष्प्राण होती जा रही हैं । इस अंक को देखकर आशा बंधती है कि समाज में फैले अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, विसंगतियों और विडम्बनाओं को दूर करने के लिए वैचारिक क्रांति पैदा होगी । श्री सिद्धेश्वर जी और राष्ट्रीय विचार मंच के उत्साही सदस्यों ने जो सारस्वत प्रयास किया है वह हर दृष्टि से सराहनीय है । प्रात: स्मरणीय सरदार पटेल की 122वीं जयंती के शुभ अवसर पर जन्मी यह विचारोत्तेजक-मोदक पत्रिका विश्व को आलोकित करे, यही शुभकामना है ।

डा. राजनारायण राय
पूर्व प्राचार्य, भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून, उ.प्र.

आपने भारतीय जनता एवं कृषक समाज के सच्चे नेता लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मृति में प्रवेशांक निकालकर प्रशंसनीय कार्य किया है

विशेषकर भारत की स्वाधीनता की स्वर्ण जयंती के संदर्भ में यह प्रवेशांक सार्थक, स्वागतार्थ और सामाजिक भी है । पूरा अंक मैंने मनोयोग के साथ पढ़ा, उन विचारों पर मनन किया, प्रत्येक रचना एक से बढ़कर एक है ।

सर्वप्रथम लिच्छवी वंश ने बिहार में गणतंत्र की स्थापना की थी । बुद्ध, महावीर, जैन, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, अशोक आदि महापुरुषों तथा नालन्दा, विक्रमशिला विश्वविद्यालयों ने भारतीय संस्कृति, शिक्षा, शासन, अर्थव्यवस्था के वैभव का आदर्श प्रस्तुत किया था, वहाँ पर आज की दयनीय स्थिति का भी - अंकन हुआ है । क्या सरदार पटेल भारत विभाजन के उत्तरदायी रहे ? गणतंत्र के बनते - बिगड़ते चेहरे, समाज के उन्नयन में हमारा दायित्व इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय है । कुल मिलाकर सारी सामग्री पठनीय एवं संग्रहनीय बन पड़ी है । अत: आपके इस कुशल संपादन के लिए हार्दिक बधाई प्रेषित कर रहा हूँ । स्वीकार करें ।

डा॰ बाल शौरि रेड्डी
अध्यक्ष, तमिलनाडु हिन्दी अकादमी
27, वड़िवेलुपुरम, वेस्ट माम्बलम,
चेन्नई–600063 फोन : 489305

वैचारिक दरिद्रता के वर्तमान परिवेश में आपने एक सार्थक आन्दोलन प्रारम्भ किया है, बधाई । सरदार पटेल का पुण्य स्मरण समग्र राष्ट्र के लिए प्रेरक होगा ।

मेरी शुभकामना है कि पत्रिका दिनानुदिन लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर हो ।

डा॰ बच्चन पाठक 'सलिल'
अध्यक्ष, काव्यलोक, जमशेदपुर

सभी विधाओं का दस्तावेज

रचनाओं के स्तर तथा मुद्रण को देखकर सहज अनुमान लगा लेना कठिन था कि यह पत्रिका का प्रवेशांक है । राजनीति, समाचार, साहित्य, समाज का चित्रण विज्ञान पर चर्चा तथा विविधता लिए हुए अन्य विधा की रचनाएं आदि सब कुछ तो है इस पत्रिका में । यह महज पत्रिका ही नहीं बल्कि इसे सभी विधाओं का दस्तावेज कहना ही उचित होगा । विचार, मूल्य, दृष्टिकोण सभी कुछ तो बदल रहा है । गुटबाजी चाहे साहित्य में हो या समाज में, राजनीति में हो या धर्म में प्रगति में सदैव रोड़ा अटकाती है । निश्चित रूप से यह पत्रिका एक नई परम्परा स्थापित करते हुए अच्छे संस्कार गढ़ेगी ।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ।

विजय प्रताप सिंह
संपादक, 'पंखुड़िया', विलासपुर, म.प्र.

संपादकीय..............................

सर्वप्रथम हम उन रचनाकारों और पत्रिका-परिवार के सदस्यों के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिनके प्रयास की वजह से पत्रिका का प्रवेशांक बेहद सफल रहा इस माने में कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों से अनगिनत सुधि पाठकों एवं प्रबुद्धजनों ने अपनी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों से हमारा मार्गदर्शन किया है ।

जहाँ तक सजग समीक्षकों और साहित्यकारों का सवाल है उनकी प्रतिक्रिया मिली जुली रही । किसी ने इसे सराहनीय प्रयास कहा तो किसी ने इसे धीर-गंभीर राष्ट्रीय विचार धारा वाली ज्ञानोन्मेषमूलक युगीन आकांक्षाओं की पूरक पत्रिका बताई । लोकप्रिय दैनिक 'हिन्दुस्तान' में छपी समीक्षा में इसे अनूठी तथा पत्रिका के बाजार में विचारों की पत्रिका कही गयी ।

संस्करण के इस नए कलेवर में राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के पाठकों की अभिरुचि को देखते हुए पठनीय रचनाओं के साथ-साथ 12वीं लोकसभा चुनाव'98 से सम्बन्धित सामग्रियों का समावेश किया गया है । प्रयास यह भी हुआ है कि समाज में मौजूद नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला जाय ।

चलिए, अब लोकसभा चुनाव पर भी हम कुछ चर्चा कर लें । मुद्दाहीन इस चुनाव में न तो आमजन की ज्वलंत समस्याओं से सम्बन्धित कोई मुद्दा उछाला गया और न गरीबी मिटाने की बात कही गयी । किसी ने स्थिरता के नाम पर वोट मांगा तो किसी ने साम्प्रदायिकता मिटाने के नाम पर । यह पूरा चुनाव स्थानीय स्तर के चुनावी एवं जातीय समीकरणों तथा उम्मीदवारों की व्यक्तिगत क्षमता पर लड़ा और जीता गया । भाजपा तथा कांग्रेस ने जहाँ स्थिरता की बात कही, वहीं संयुक्त मोर्चा के घटक दलों ने साम्प्रदायिकता को मिटाने की बात कही । हाँ, भाजपा-समता गठबन्धन की समता पार्टी ने भ्रष्टाचार के मुद्दे को सामने लाकर घोटालेबाजों को बेनकाब करने की बात की । कांग्रेस की सोनिया गांधी की तो कुछ अजीब ही बात रही । उन्होंने अपने हर चुनाव भाषण में अपनी वंश परम्परा की बखान कि या फिर ऑपरेशन ब्लू स्टार तथा अयोध्या हादसे के लिए क्षमा याचना करती देखी गयी । पर उससे भी आश्चर्य यह कि पूरे चुनाव प्रचार के दौरान देश के प्रबुद्धजन से लेकर समाज के पिछली कतारों में बैठे लोग सोनिया जी के पाखण्ड पर चुप्पी साधे रहे । किसी ने यह सवाल नहीं उठाया कि उनका भारत में क्या योगदान रहा है । पर इस सवाल पर आगे आनेवाली पीढ़ियाँ अवश्य पूछेंगी ।

सच तो यह है कि राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं ने धर्म,भाषा, क्षेत्र और जाति के नाम पर हमारे समाज को इतने छोटे-छोटे टुकड़ों में बांट रखा है कि कोई दल स्थाई सरकार देने की बात कर ही नहीं सकता । फिर इस देश में हर दल का मुखिया प्रधानमंत्री का दावेदार बन बैठा है । अब तो हर दल की पहचान किसी न किसी जाति से की जाती है और जो अपने स्वार्थ के लिए आपस में सिद्धान्तहीन तालमेल करते और तोड़ते रहे हैं । हमें बांटकर अपनी-अपनी दूकान लगाकर बैठने वाला अब फैसले करने वाला नहीं सिर्फ तय किए गए फैसले सुनाने वाला रह गया है । पूर्व प्रधानमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल केवल इशारे पर नाचते रहे या चुप्पी साधे रहे ।

ऐसी विकट स्थिति में आम मतदाता आखिर करे तो क्या करे ? किसी एक पार्टी ने भी ऐसा कुछ करके नहीं दिखलाया जिसके बल पर जनता उसे मौका दे । चाहे कांग्रेस हो या भाजपा, सभी एक ही सिक्के के दो पहलू निकले । कोई विकल्प न देख जनता ने वही त्रिशंकु लोकसभा परोस दिया । इस चुनाव से एक बात तो अब साफ उभरकर आई है कि केन्द्र में शासन चलाने के लिए किसी एक पार्टी पर मतदाताओं को भरोसा नहीं रह गया है । दूसरी बात यह कि मुस्लिम, दलित एवं पिछड़े वर्गों को दरकिनार कर राज्य या केन्द्र में सत्ता हासिल नहीं की जा सकती । बहुमत के आधार पर सरकार बनाने का विरोध करनेवाली मानसिकता को हमारे देश में भी कहीं कोई स्थान मिल रहा है जो लोकतन्त्र के लिए यह बहुत अच्छा संकेत नहीं है । बार-बार सरकार बनाने और फिर उसे उखाड़ फेंकने से जनता भी लोकतन्त्र के प्रति निराश होने लगती है । कट्टरपंथी दल इसी बात का फायदा उठाते रहे हैं और भविष्य में भी उठाएंगे । जब राजनैतिक दल अपने सिद्धान्तों और कार्यक्रमों को तिलांजलि देकर सत्तासुख के लिए किसी के गले में भी बाहें डालने लगते हैं और सुविधाभोगी गठबन्धन चलाते हैं, तो देर-सबेर जनता प्रयोगों से तंग आकर हिंसक तरीकों से व्यवस्था बदलने का प्रयास करती है, यह हमें जान लेना चाहिए ।

सत्तालोलुपता की परिधि में अब न तो संविधान का कोई मतलब रह गया है और न ही राजनैतिक नैतिकता का । किसी भी दल के नेता की कथनी और करनी में समानता नहीं रह गयी है । जो पार्टी कल तक नैतिकता के नाम पर सबसे ज्यादा हल्ला मचाती थी, वही आज वास्तविक अपराधी साबित हो रही है । संसद के प्रस्ताव की स्याही सूखने से पूर्व ही प्रायः सभी पार्टियों ने इसकी उपेक्षा कर इसे अंगूठा दिखा दी है । सबों ने दल-बदल प्रक्रिया को अपनाया है । वामपंथी इसमें अपवाद है । आज हमें राजनीति की इस दोमुंही नीतियों एवं उसके अन्तर्विरोधों पर न केवल विचार करना होगा वरन् उस पर कड़ी नजर रखनी होगी । अन्यथा राजनीति के प्रति फैला निषेध भाव और भी मजबूत होगा जो लोकतन्त्र को नष्ट कर सकता है । अतएव जिसके हाथों अपने राष्ट्र का पतवार सौंपते हैं उनके आचरण पर हमारा ध्यान जाना समय का तकाजा है । आज देश में राजनैतिक दलों एवं उसके नेताओं के प्रति जनता की अनास्था इतनी गहरी होती चली जा रही है कि भविष्य हमारे हाथों से फिसलता नजर आ रहा है । हालांकि यह भी सच है कि हम अंधेरों से लड़ना जानते हैं । जब अंधेरा हमें निगलने के लिए बढ़ता है तो दीये की लौ जलाकर हम उसे भगाने का प्रयास करते हैं । यह आशावाद हमारी संस्कृति की देन है-"तमसो माँ ज्योतिर्गमय" ।

यह पत्रिका वार्षिक होगी या अर्द्धवार्षिक या फिर त्रैमासिक, प्रवेशांक में हमने इस बारे में चुप्पी लगा ली थी सिर्फ यह जानने के लिए कि पाठक क्या चाहते हैं । किन्तु पाठकों की जैसी प्रेरणा मिली है, हम अब आपको यह बताने में प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं कि वर्ष 1997 में यह वार्षिक रही; इस वर्ष यह अर्द्धवार्षिक होगी । इसका अगला अंक अक्टूबर में निकलेगा और अगले वर्ष यानी 1999 से यह पत्रिका नियमित रूप से त्रैमासिक होकर आपको मानसिक खुराक देती रहेगी । 'खेल-खिलाड़ी' स्तम्भ अगले अंक से प्रारम्भ हो रहा है ।

हम उन समस्त रचनाकारों एवं संवाददाताओं के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं एवं रिपोर्ताज से इस अंक को समृद्ध किया । इसके अतिरिक्त हम कृतज्ञ हैं उन विज्ञापन दाताओं, पत्रिका-परिवार के सदस्यों तथा शुभचिन्तकों जिनकी सहृदयता से इस अंक को निकालने में हमें सफलता मिली ।

– प्रधान संपादक

फिर बेताल उसी डाल

❒ सिद्धेश्वर

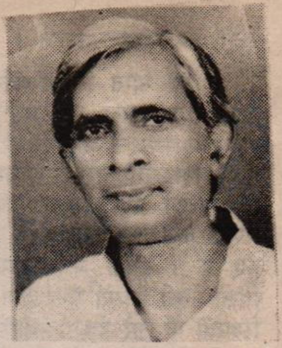

1998 के लोकसभा चुनाव के परिणाम हमें बताते हैं कि संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र का दावा करने वाले भारतीय राजनीति के किसी भी दल के पास अब इतनी भी कूबत नहीं रही कि वह सिर्फ अपने दमखम पर केन्द्र में सरकार बना सके। भारतीय राजनीति में गठबन्धनों और साझा सरकार की अनिवार्यता अन्ततः स्वीकार कर ली गयी। कारण कि राष्ट्रीय स्तर पर किसी एक सशक्त राजनैतिक दल के मौजूद न होने और केन्द्र में बहुमत जुगाड़ने की विवशता ने चुनाव के पूर्व चुनावी गठबन्धन तथा चुनाव के बाद की साझा सरकार को आखिर अपरिहार्य बना दिया। मसलन पूर्व की भांति एक बार फिर वैशाखियों का सहारा लेने को बड़ी पार्टी बाध्य हुई। दिल्ली दरबार का रास्ता स्वयं के बलबूते नहीं, बस वैशाखियों के सहारे तय करने पर विवश हो गई राजनीतिक पार्टियां। यानी फिर बेताल उसी डाल पर आ बैठा।

कांग्रेस सिंहासन में दीमक लगने के उपरान्त यहाँ की राजनीति में शिरकत करनेवाले दलों में भारतीय जनता की नजर भाजपा अथवा भाजपा-समता गठबंधन पर आकर टिक गयी थी। भाजपा कांग्रेस के विकल्प के रूप में दिखने लगी थी। और सच है कि भाजपा यदि कट्टरपन छोड़ अपनी मूल नीतियों-रीतियों में समय के अनुसार परिवर्तन कर चलती तो कोई कारण नहीं कि आम जनता में उसकी पकड़ न हो जाती तथा वह अकेले भी कांग्रेस का विकल्प बन सत्ता पर काबिज हो जाती। पर आमजन की ज्वलंत समस्या-रोटी, कपड़ा, मकान और हर हाथ को काम की बात न कर हिन्दुत्व और अयोध्या में मंदिर निर्माण की वही घिसी-पिटी बात कर तथा शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, पिछड़े तथा अल्पसंख्यक को सत्ता तथा संगठन से दरकिनार कर और उसके लिए मात्र घड़ियाली आंसू बहाकर भाजपा भी औरों की तरह नक्कारा साबित हुई। उसने भी अभी तक वही किया जो कांग्रेसी किया करते थे। उसके सारे सिद्धान्त, वसूल व अनुशासन प्रियता के दावे खोखले निकले। अन्ततः भारतीय राजनीति के खिलाड़ी सत्ता के सियासी दौड़ में साझा सरकार की शरण में जाने को विवश हुए। यद्यपि पूर्व का अनुभव बताता है कि कई बार गठबन्धन की परम्परा नाकामयाब सिद्ध हो चुकी है। इनका हर प्रयोग पतन के कगार पर खड़ा अपने दुर्दिन के आँसू बहाता नजर आता है। चौधरी चरण सिंह की सरकार अपनी जीवन यात्रा के दूसरे पड़ाव पर पहुंचने के पूर्व ही दम तोड़ दी। विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार को भी बीच मझधार में डूबना पड़ा। चन्द्रशेखर भी बैतरणी को पार करने में नाकामयाब रहे। देवगौड़ा को भी रास्ते से वापस आना पड़ा। इन्द्र कुमार गुजराल भी अन्ततः अपनी मंजिल तय नहीं कर पाए। इसी प्रकार राज्यों में भी खासकर उ.प्र. में मुलायम सिंह यादव हों या मायावती या फिर कल्याण सिंह सभी के सभी गठबन्धन या समर्थन के नाते पूर्णोदय से पहले अस्त हो गए। उ.प्र. में रोचक नाटक के बाद पुनः कल्याण सिंह के सत्तासीन होने से स्थिरता की गारंटी नहीं कही जा सकती।

आखिर इसके क्या कारण हैं ? इसकी खामियों और त्रुटियों से बचने के लिए इतिहास के पन्नों पर एक सरसरी नजर डालना आवश्यक है। जब विभिन्न मतों, सिद्धान्तों एवं विचारधाराओं वाली पार्टियाँ गठबन्धन कायम करेंगी, तो इनमें एकजुटता की भावना कहाँ से आएगी ? इसकी तो बुनियाद ही बेढंगी है फिर बेढंगी बुनियाद पर हम ढंग के महल खड़ा करने का उपक्रम करेंगे, तो महल को शीघ्र ही खण्डहर में तब्दील होना तय है जैसा कि अब तक होता आया है। अब यही देखिए न भाजपा-समता का गठबन्धन हुआ है जबकि समता के शीर्ष नेताओं ने बार-बार गला फाड़कर कहा है कि भाजपा से उनका सैद्धान्तिक मतभेद है, चाहे वह अयोध्या मंदिर का मामला हो या संविधान की धारा 370 का, या फिर समान नागरिक संहिता का सवाल हो। इसके अतिरिक्त तथा हाशिए पर पड़े लोगों की सत्ता तथा संगठन में भागीदारी के सवाल पर भी दोनों दलों की मंशा एक है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। अन्ततः इन सवालों पर मतभेद उभरने पर साझा सरकार का हश्र क्या होगा, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है। वैसे भाजपा संसदीय दल के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्पष्ट कहा है कि सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर राष्ट्रीय सहमति बनाने का प्रयास होगा। इसलिए ऐसी आशा की जानी चाहिए कि मतभेद उभर कर ऊपर नहीं आएगा किन्तु इसका कार्यान्वयन कहाँ तक होगा। यह तो समय ही बताएगा।

दरअसल एक बात और है कि आज भारतीय राजनीति में सिद्धान्त, सिद्धान्त नहीं है और न व्यवहार, व्यवहार है। आज न तो सिद्धान्त में व्यवहार का कोई संबंध रह गया है और न ही व्यवहार का सिद्धान्त से क्योंकि इस पूरे लेन-देन, सौदेबाजी, भाव-भाड़े के परिदृश्य में तथा दल-बदल करके, अपराधियों से हाथ मिलाकर और आम जनता की समस्याओं एवं संवेदनाओं से विमुख होकर राजनीतिक पार्टियाँ देश को स्थिर सरकार देने का प्रचार-प्रसार कर रही हैं गोया हमारे देश की तमाम समस्याओं का समाधान स्थिर सरकारों पर निर्भर हो।

12वीं लोकसभा के चुनाव में भाजपा तथा कांग्रेस ने स्थिरता को अपने चुनाव प्रचार का मुद्दा बनाया था। **इस संदर्भ में हम यह कहना चाहेंगे कि स्थिरता की चाह और परिवर्तन की चाह समाज की ये दो प्रवृत्तियाँ इतिहास की दिशा तय करती हैं जो इतिहास का द्वन्द्व कहलाता है। स्थिरता की चाह जड़ता लाती है और परिवर्तन इच्छा क्षोभ। जब समाज की आन्तरिक असमानता बढ़ती है तो परिवर्तन की चाह पैदा होती है और यह समता की भावना से प्रेरित होती है। समता की इस चाह को दबाने के लिए ही न्याय और शांति के नाम पर स्थिरता लाने का प्रयत्न किया जाता है। सुप्रसिद्ध चिन्तक एवं विचारक डा. राम मनोहर लोहिया ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इतिहास-चक्र' में इन दो चाहों का सटीक विवेचन किया है। डा. लोहिया स्थिरता को पसंद नहीं करते थे क्योंकि स्थिरता की चाह जातियों का निर्माण करती है और वर्ग-संघर्ष को कुचलती है। इसीलिए उन्होंने कहा था– "जिंदा कौमे पांच साल तक इन्तजार नहीं करती।"** समाज की यह परिणति आज हमारे सामने है। आम और खास के दो वर्गों में विभाजित आज के समाज में एक तरफ समृद्धि का प्रवाह तो दूसरे की तरफ बेरोजगारी, भुखमरी तथा 40 प्रतिशत लोगों का गरीबी की सीमा रेखा से नीचे जीने का सवाल। इसलिए भाजपा तथा कांग्रेस के द्वारा स्थिरता का संकल्प स्वाभाविक है क्योंकि ये दोनों दलें यथास्थितिवादी दलें हैं। अपने पूरे इतिहास में भाजपा ने वर्ण-व्यवस्था तोड़ने की बात नहीं की क्योंकि उनकी नजर में वह हिन्दू धर्म का आधार है। इसलिए वह जाति-व्यवस्था को

टूटना नहीं देखना चाहते ।

आज भारत में परिवर्तन अथवा समता की चाह प्रबल है क्योंकि सदियों की जड़-व्यवस्था ने आबादी के बहुसंख्यक भाग को तमाम अधिकारों से वंचित रखा है । आज लोग अपने अधिकारों के प्रति संवेदनशील हो गए हैं तथा उसे प्राप्त करने के लिए उठ खड़े हुए हैं । इसके परिणामस्वरूप समाज में विक्षोभ की स्थिति पैदा होना स्वाभाविक है । स्थिरता के नारे देकर यथास्थितिवादी पार्टियाँ इस विक्षोभ को दबाने की कोशिश कर रहीं हैं ताकि संघर्ष न हो । सुविधाभोगी लोगों के लिए स्थिरता अनुकूल है पर जो लोग अभाव में जी रहे हैं, कष्टों का सामना कर रहे हैं उनके लिए यह स्थिरता का आश्वासन एक 'पोस्ट डेटेड' चेक है जिसके भुनने की आशा नहीं की जा सकती है ।

अब आइए, अब हम यह देखें कि इस स्थिरता का नारा देकर भाजपा, कांग्रेस तथा अन्य राजनीतिक दलों ने इस चुनाव में क्या खोया, क्या पाया । कांग्रेस की हालत अच्छी रही, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि पार्टी ने इस बार लगभग उतनी ही सीटें जीतीं जितनी 1996 के लोकसभा चुनाव में । और इतना कुछ तब हुआ जब श्रीमती सोनिया जी का शोर मचाया गया । लेकिन मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि वस्तुतः सोनिया जी का इस चुनाव में मतदाताओं पर क्या असर रहा ? हाँ, उनका हौवा खड़ाकर इतना अवश्य हुआ कि कांग्रेस पार्टी सफाया होने से बच गयी अन्यथा जिस तेज गति से उसके नेताओं ने कांग्रेस से नाता तोड़ना प्रारम्भ किया था, परिणाम भयंकर होता । इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सोनिया जी के चुनाव प्रचार ऐसे दर्शाए गए जैसे कांग्रेस बहुमत प्राप्त कर लेगी । पर मतदाताओं पर उनके चुनाव सभाओं में हुई भारी भीड़ का कोई असर नहीं देखने को मिला । फलतः कांग्रेस को 140 सीटों से ही संतोष करना पड़ा । यहाँ तक कि नेहरू-गांधी परिवार के गृह राज्य उ.प्र. में कांग्रेस औंधे मुंह गिरी । और तो और नेहरू वंश के मजबूत किले अमेठी तथा रायबरेली में भी कांग्रेस को पराजय का मुंह देखना पड़ा । इसलिए मुझे नहीं लगता कि सोनिया जी का करिश्मा कारगर सिद्ध हुआ ।

कांग्रेस ने महाराष्ट्र तथा राजस्थान में भारी सफलता पाई । महाराष्ट्र में शिवसेना-भाजपा गठबन्धन को चने चबाने का पूरा श्रेय यदि शरद पवार को दिया जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । जहाँ तक दक्षिण भारत के राज्यों का सवाल है तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश में सोनिया जी का प्रचार बेअसर रहा । पं. बंगाल में भी तृणमूल कांग्रेस की तेज तर्रार नेता ममता बनर्जी बाजी मार ले गयीं । दरअसल सोनिया जी का भारत में ऐसा कौन सा योगदान है जिससे प्रभावित होकर मतदाता कांग्रेस की तरफ झुकते । भारतीय मतदाता ऐसे मूर्ख नहीं कि अमृतसर के ऑपरेशन ब्लू स्टार तथा अयोध्या के बाबरी मस्जिद के ध्वंस के लिए सोनिया जी के माफी मांगने मात्र से वे कांग्रेस की झोली में अपने मतों को डाल देते । फिर राजीव जी की मौत पर मतदाता आखिर कितनी बार भीख देते । दूसरी बात यह कि हमारे देश को ऐसा नेता चाहिए जो देश की भाषा में यहाँ की जनता की कराह को समझते हों ।

कमोवेश भाजपा की भी स्थिति वैसी ही कही जाएगी । ऐसी भयावह राजनीतिक परिस्थिति में जब यहाँ किसी भी राष्ट्रीय दल में कोई साख नहीं रह गयी थी, सबों के दामन के दाग साफ दिखाई दे रहे थे । भाजपा जैसी राष्ट्रीय पार्टी के लिए रास्ता बिल्कुल साफ था, परिस्थितियाँ उसके अनुकूल थीं, राजनीतिक रिक्तता का फायदा उसे भरपूर मिलना चाहिए था । पर 1996 के लोकसभा चुनाव की तुलना में वह अच्छा नहीं कर पाई । 1996 में उसे जहाँ 162 सीटें मिली थीं, वहीं 1998 में 17, सीटें लेने से उसे मात्र 179 सीटों का इजाफा हुआ और ये अतिरिक्त सीटें भी उसे वहाँ मिलीं जहाँ भाजपा ने क्षेत्रीय दलों से गठबन्धन कर रखा था । हेगड़े की लोकशक्ति से कर्नाटक में 13 अकाली दल के चलते पंजाब में 3, बिजद की वजह से उड़ीसा में 7, अन्नाद्रमुक के कारण तमिलनाडु में 3 तथा तृणमूल कांग्रेस से तालमेल के परिणामस्वरूप पं. बंगाल में केवल एक सीट मिला ।

महाराष्ट्र तथा राजस्थान में भाजपा की हार का मुख्य कारण रहा—मुस्लिम समुदाय का एकजुट होकर उसके खिलाफ मत देना । इसी प्रकार बिहार में राजद के साथ और उ. प्र. में सपा के साथ मुसलमान मतों का होना भी भाजपा की उम्मीद पर पानी फेर गया । हालांकि यह भी सच है कि अटल बिहारी वाजपेयी की नीतियों-रीतियों पर यदि भाजपा चली होती तो बहुसंख्यक के साथ-साथ अल्पसंख्यक समुदाय पर भी इसका अनुकूल असर पड़ता और उससे भाजपा की सेहत बनती । पर आडवाणी जी के वही घिसे-पीटे हिन्दुत्व, अयोध्या और काशी के मुद्दे से रहा-सहा आसरा भी जाता रहा । इन सारी स्थितियों पर नजर डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि साझा सरकार अब समय की मांग है । चाहे अनचाहे जनता इसे स्वीकार कर चुकी है । इसे अब झुठलाना किसी भी राजनैतिक दल के बूते की बात नहीं ।

1998 में सम्पन्न लोकसभा चुनाव में किसी दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने से खंडित जनादेश फिर आया है । इस चुनाव में सबसे बड़ा आघात संयुक्त मोर्चा को लगा जिसकी सदस्य संख्या लगभग आधे से कुछ अधिक रही । दूसरी बात यह देखने में आई कि मतदाताओं की सरकार विरोधी प्रवृत्ति कायम है । मसलन कर्नाटक में जद को, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा हरियाणा में भाजपा को, तमिलनाडु में द्रमुक-तमका गठबन्धन को और उड़ीसा में कांग्रेस को मुंह की खानी पड़ी है ।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि जनता अब दल-बदलुओं एवं अपराधियों को सजा देने का मन बना चुकी है । नारायणदत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, कृष्णा शाही, रामसुन्दर दास, रामलखन सिंह यादव, सुरेश कलमाडी आदि की हार इसी बात की पुष्टि करती है । एक-आध को छोड़ सभी दल-बदलू चुनाव हार चुके हैं । इसी प्रकार अपराधिक पृष्ठभूमि वाले 72 उम्मीदवारों में मात्र 17 ही संसद में पहुंच पाये ।

इस चुनाव में पूर्ण बहुमत में आने का भाजपा और उसके सहयोगी दलों का सपना टूटा है और वह पूर्ण बहुमत लाने में लगभग 20 सीटों से पिछड़ गई ।

बिहार में लगभग समान विचारधारा वाले दलों की कड़ी टक्कर की वजह से सामाजिक न्याय के पक्षधर उम्मीदवारों के अधिकाधिक वोट कटने से उनकी हार हुई । और यह सब हुआ आपस के व्यक्तित्व की लड़ाई की वजह से । क्या अभी भी इस बात को वे महसूस कर सीख नहीं लेंगे ?

कुल मिलाकर देखा जाय तो राजनीतिक बाजों द्वारा 1996 के चुनाव के फैसले को नहीं मानने के बाद देश को फिर से भट्ठी में डाल दिया गया जिसकी जरूरत नहीं थी । आज हम फिर वहीं पहुंच गए जहाँ पर हम थे । किसी को क्या मिला ? सच तो यह है कि मतदाताओं को जुर्माना भुगतना पड़ा और इस गरीब देश के लगभग एक हजार करोड़ रुपये पानी में फेंक दिए गए और इससे कई गुणा-अधिक रुपये जनता की जेब से गए सो अलग । यह सब कांग्रेसी नेता श्री सीताराम केसरी की हठधर्मिता के चलते हुआ ।

अब सवाल यह उठता है कि अब क्या हो । आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनैतिक दलों एवं उसके नेताओं का यह फर्ज हो जाता है कि वे समय रहते विफलताओं का आत्म-मंथन करें और अपने स्वार्थ और ओछेपन को छोड़ देश तथा समाज के हित में सोचें तभी कुछ बात बन सकती है ।

संपर्क : संपादकीय कार्यालय
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001, दूरभाष : 228519

त्रिशंकु संसद

❒ डॉ. शिवनारायण

क्या किसी संविधान के अनुसार चलनेवाली लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली में त्रिशंकु संसद असंवैधानिक, अलोकतांत्रिक या सिर्फ असंसदीय हो सकती है ? क्या त्रिशंकु संसद आने की स्थिति में इससे निबटने के लिए संविधान में राष्ट्रपति को कोई विशेषाधिकार होते हैं ? क्या राष्ट्रपति ऐसी स्थिति में संसद भंग करके स्वयं शासन चला सकता है ? भारत में 12वीं लोकसभा के आम चुनाव'98 के सम्पन्न होने और परिणाम आने के बाद त्रिशंकु संसद होते ही ये सारे प्रश्न उठने लगे हैं ।

संविधान के अनुच्छेद 53 (1) के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और इसका प्रयोग वह संविधान के अनुसार या अपने अधीनस्थ पदाधिकारी द्वारा करेगा और इसके लिए संविधान के अनुच्छेद 71 (1) में यह उपबन्धित है कि राष्ट्रपति को सहायता एवं सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होगी जिसका मुखिया प्रधानमंत्री होगा और राष्ट्रपति अपने कृत्यों को प्रयोग करने में ऐसी सलाह के अनुसार कार्य करेगा परन्तु राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद से ऐसी सलाह पर साधारणतया या अन्यथा पुनर्विचार करने की अपेक्षा कर सकेगा और राष्ट्रपति ऐसे पुनर्विचार के पश्चात् दी गयी सलाह की अनुसार कार्य करेगा । लेकिन अनुच्छेद 71 (2) के अनुसार इस प्रश्न की किसी अदालत में जांच नहीं की जा सकेगी । क्या मंत्रियों ने राष्ट्रपति को कोई सलाह दी और दी तो क्या दी ।

अर्थात राष्ट्रपति व्यक्तिगत रूप से कोई कार्यपालिका कृत्य नहीं कर सकता और नहीं कोई कार्यपालिका निश्चित कर सकता है । राष्ट्रपति बिना मंत्रिपरिषद के सलाह के अपनी कार्यपालिका शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता ।

अनुच्छेद 75 (1) में उपबन्ध है कि प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करेगा और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की सलाह पर करेगा ।

प्रसिद्ध संविधानविद् तथा पूर्व सदस्य, विधि आयोग प्रो. प्रदुम कुमार त्रिपाठी का कहना है कि त्रिशंकु संसद होना किसी ऐसे देश के लिए अनैतिक, अलोकतांत्रिक । असंवैधानिक कृत्य नहीं जिनकी संसदीय प्रणाली किसी ऐसे संविधान के अनुसार चल रही हो जिसमें उसका विचार अन्तर्निहित है । लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली के अन्वेषक ऐसी स्थिति को लोकतंत्र की कमजोरी या कई बार विकल्प बताते हैं लेकिन वे यह नहीं जानते हैं कि यह भी एक प्रकार से लोकतंत्र का ही एक प्रयोग है । जनता के मतों से यदि त्रिशंकु संसद बनती है तो लोकतंत्र में उसके मत का भी आदर करना होगा और इसी से सरकार बनानी होगी । जिसकी अनुमति संविधान भी देता है । क्योंकि संविधान में कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं है कि किसी एक दल के स्पष्ट बहुमत मिलने पर ही उसके नेता को प्रधानमंत्री बनाया जाए लेकिन यह स्पष्ट है कि जिस नेता को लोकसभा में बहुमत का विश्वास प्राप्त हो वही प्रधानमंत्री बन सकता है, मंत्रिपरिषद बनवा सकता है क्योंकि मंत्रिपरिषद को लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होना सवैंधानिक अनिवार्यता है जिसकी उपेक्षा असंवैधानिक होगी । दूसरे, प्रधानमंत्री के लिए यह भी जरूरी नहीं है कि वह सांसद ही हो, नियुक्ति के समय ऐसी बाध्यता नहीं । इसे 6 माह में पूरा किया जा सकता है फिर जो दल आपसी सहमति से साझा सरकार बनाने को सहमत हों । और किसी दल के नेता को प्रधानमंत्री बनाने को तैयार न भी हों तो वे अन्य को प्रधानमंत्री बनाने के लिए सम्मिलित हो सकते हैं । किसी एक दल को बहुमत नहीं मिलने पर गठबंधन करके बने कृत्रिम दल के सदस्यों के विश्वास वाले व्यक्ति को प्रधामंत्री बनाना लोकतंत्र की शक्ति के लिए श्रेयस्कर होता है ।

प्रो. त्रिपाठी का मानना है कि राष्ट्रपति को यश, प्रतिभा और मान मर्यादा इसी में होती है कि वह राजनैतिक भावनाओं से ऊपर उठकर संविधान के अनुसार ऐसे समय में अपनी इस नैतिकता का बोध करा दे जिसकी अपेक्षा करते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने इस कार्य के लिए कोई संवैधानिक उपबन्ध नहीं किया । ऐसे क्षणिक संकट में वह संविधान वेत्ता, न्यायविदों राजनीतिक दलों के नेता और जिससे चाहे राय ले सकते हैं, विचार विर्मश कर सकते है लेकिन अन्तत: प्रधानमंत्री पद के लिए आमंत्र का निर्णय उन्हें स्वयं करना होता है । इंग्लैण्ड में भी सन् 1928 में लेबर पार्टी की सरकार गठबंधन से बनी क्योंकि किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था । एक बार किंग जॉर्ज पंचम ने प्रधानमंत्री की नियुक्ति के लिए पूर्व 5 प्रधानमंत्रियों को बुलाकर उसने सलाह ली थी । इसी प्रकार भारत के राष्ट्रपति के लिए भी कोई ऐसी रोक नहीं कि वह इस बारे में किसी से विचार विमर्श नहीं कर सकता या फिर किसी से राय नहीं मांग सकता है।

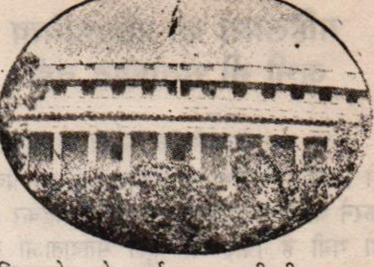

विधिआयोग के पूर्व सदस्य डी.डी. बसु का मानना है कि लोकसभा में हारे हुए प्रधानमंत्री द्वारा विघटन की मांग से उत्पन्न होने वाली परिस्थिति में यह नहीं कहा जा सकता है कि मंत्रिपरिषद विद्यमान नहीं है । संविधान संशोधन 44 (1978) के अनुच्छेद 74 (1) के अनुसार राष्ट्रपति को हारे हुए मंत्रिपरिषद के अनुरोध पर कार्य करना होगा चाहे ऐसा अनुरोध अनुचित ही क्यों न हो । उदाहरण के लिए वह हारने का दूसरा अवसर भी हो सकता है । ऐसा होने की स्थिति में भारत में स्थित इंग्लैंड में प्रचारित मंत्रिमंडल शासन के सिद्धान्तों से भिन्न होगी ।

सभी संविधानविद् इस विषय पर एकमत हैं कि त्रिशंकु संसद आने की स्थिति में भी संविधान में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि राष्ट्रपति किसी विशेषाधिकार के तहत लोकसभा भंग करके स्वयं शासन चला सके । प्रो. त्रिपाठी का इस बारे में मत है कि संविधान में ऐसी व्यवस्था है कि संसद, मंत्रिपरिषद और राष्ट्रपति इन तीनों में से कोई दो मिलकर ही तीसरे को हटा सकता है अन्यथा नहीं । इसलिए राष्ट्रपति अकेले संसद को भंग नहीं कर सकते हैं

दूसरे यह कि संविधान के अनुच्छेद 352 में ऐसी व्यवस्था नहीं है । इसके लिए यह उपबन्धित है कि राष्ट्रपति आपात की उद्घोषणा तब तक नहीं करेगा जबतक संघ के मंत्रिमंडल का यह विनिश्चय कि ऐसी उदघोषणा की जाए उसे लिखित रूप से सूचना दी जाए ।

संविधान शिक्षाशास्त्री महेन्द्र पाल सिंह का उपरोक्त मत से सहमति व्यक्त करते हुए मानना है कि देश के किसी राज्य कें मुख्यमंत्री या उसकी मंत्रिपरिषद के न रहते हुए भी वहाँ राष्ट्रपति शासन लगाया जा सकता है लेकिन पूरे देश में ऐसा करने के लिए प्रधानमंत्री और उसकी मंत्रिपरिषद की लिखित सूचना आवश्यक हो और वो वहाँ प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद दे सकती है जो अनुच्छेद 75 के अधीन बनी हो अर्थात् अनुच्छेद 75 (3) के अनुसार उसे सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी भी होना आवश्यक है । यह तभी हो सकता है जब उसे विश्वास का मत हो ।

***संपर्क* : इन्दिरा नगर, पटना-800 001**

महिलाओं का प्रतिनिधित्व अभी भी संतोषप्रद नहीं

यह बात ठीक है कि पिछले लोकसभाओं से 12वीं लोकसभा में चुनाव जीत कर प्रवेश करने वाली महिलाओं की संख्या बढ़कर 43 हो गयी है फिर भी कुल मतदाताओं की आधी संख्या महिलाओं को देखते हुए तथा विधायिका में 33 प्रतिशत महिलाओं के प्रतिनिधित्व के लिए महिलाओं को आगे आने को बाध्य होना होगा। किन्तु ऐसे समय में मारग्रेट अल्वा तथा गिरिजा व्यास तथा कृष्णा शाही जैसी तेज-तर्रार महिलाओं की हार आश्चर्यजनक अवश्य है। वैसे सच कहा जाय तो इतना हो-हल्ला के बावजूद प्रायः सभी राजनीतिक दलों ने इस बार पिछली बार की तुलना में कम महिलाओं को मैदान में उतारा। केवल भाजपा ने पहले की तुलना में इस बार अधिक यानी 30 महिलाओं को टिकट दिया जिसमें से 15 जीतीं। जद ने 11 तथा समता पार्टी ने 3 महिलाओं को उम्मीदवार बनाया था पर उनमें से एक भी नहीं जीत पायी। माकपा की 8 में से तीन तथा भाकपा की 6 में से दो महिलाएं जीती हैं। भाकपा की गीता मुखर्जी छठी बार चुनाव जीतकर आयी हैं। इसी प्रकार तृणमूल कांग्रेस से इस बार दो महिलाएं आई हैं। सुश्री ममता बनर्जी 12वीं लोकसभा को जीवन्त बनाएंगी। मेनका गांधी निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में जीती हैं। राजद की बिहार से मालती देवी और रमा देवी दो महिलाएं जीतकर आई हैं। इनके अलावा हरियाणा लोकदल, अकाली दल, अन्नाद्रमुक, तेलगुदेशम तथा बसपा से एक-एक और मणिपुर से पहली बार भाकपा की किम गोंगटे महिलाओं का प्रतिनिधित्व करेंगी।

सच कहा जाय तो 1991 तथा 1996 की तुलना में इस बार लोकसभा में चार महिलाएं बढ़ी हैं पर यह संतोषजनक नहीं। पिछले दोनों बार 39-39 महिलाएं लोकसभा में थीं। 1952 से लेकर 1991 तक लोकसभा में महिलाओं की संख्या 19 से 44 के बीच रही है। आठवीं लोकसभा में कुल 44 महिलाएं थीं। जिस देश में महिला मतदाताओं की संख्या कुल आबादी की लगभग आधी है, वहाँ लोकसभा में उनका 10 प्रतिशत भी प्रतिनिधित्व न होना इस बात का संकेत है कि राजनीति में महिलाओं की स्थिति कितनी दयनीय है।

कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा

जीते : लोकसभा चुनाव'98 में भारत के जिन प्रमुख हस्ताक्षरों ने विजय पायी उनमें भाजपा के अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, सुषमा स्वराज, विजया राजे सिन्धिया, मदनलाल खुराना, समता के जार्ज फर्नांडीज, नीतीश कुमार, कल्पनाथ राय, अब्दुल गफूर, राजद के लालू प्रसाद, सपा के मुलायम सिंह यादव, बसपा की मायावती, जद के इन्द्र कुमार गुजराल, एस. जयपाल रेड्डी, रामविलास पासवान, एच.डी. देवगौड़ा, तृणमूल कांग्रेस के ममता बनर्जी, कांग्रेस की शरद पवार, माधवराव सिन्धिया, ए.बी.ए. गनी खान चौधरी, भजन लाल, के. करुणाकरण, शिवराज पाटिल, तारिक अनवर, भाकपा के सोमनाथ चटर्जी, भाकपा के इन्द्रजीत गुप्त, द्रमुक के मरासोली मारन, सजपा के चन्द्रशेखर, तथा निर्दलीय मेनका गांधी का नाम उल्लेखनीय है।

हारे : इसी प्रकार हारने वाली प्रमुख हस्तियों में कांग्रेस के नारायण दत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, अन्तुले, मारग्रेट अल्वा, कुमारी शैलजा, गिरिजा व्यास, बिजको के रामलखन सिंह यादव, समता के कृष्णा शाही, सजपा के रामसुन्दर दास, झामुमो के शिबू सोरेन, सूरज मण्डल, राजद की कांति सिंह, चन्द्रदेव प्र. वर्मा, जद के शरद यादव, भाजपा के जसवन्त सिंह, प्रमोद महाजन, हुकुमदेव नारायण यादव तथा विनय कटियार तथा भाकपा के चतुरानन मिश्र का नाम लिया जाएगा।

बिहार में लहर किसी के पक्ष में नहीं

बिहार के लोकसभा चुनाव'98 में जो तस्वीर उभर कर आई उससे ऐसा नहीं लगता कि यहाँ किसी दल के पक्ष में कोई लहर थी। जहाँ भाजपा-समता के -अन्डर कैरेंट' दावे को झुठला दिया वहीं राजद के लालू प्रसाद के 'स्वीप' करने के दावे को ठुकरा दिया है।

चुनाव परिणामों से यह स्पष्ट है कि भाजपा दक्षिण बिहार म अपना वर्चस्व कायम रखने में कामयाब हुई तो राजद भी उत्तरी बिहार में अपनी ताकत बरकरार रखी। इसी प्रकार समता पार्टी ने मध्य बिहार में अपनी हैसियत दिखाई।

बिहार की 53 सीटों में भाजपा को 19, राजद को17, समता को 10, कांग्रेस को 5 तथा जद एवं राजपा को एक-एक सीट मिली। जातिवार सांसदों की स्थिति इस प्रकार है-यादव 8, अनु. जनजाति-7 तथा अनु. जाति अल्पसंख्यक एवं राजपूत में प्रत्येक 6-6, कुशवाहा (कोयरी)-5, कुर्मी-4 ब्राहमण-3, बनिया-3, कायस्थ-2 तथा भूमिहार को एक सीट।

इस प्रकार इस चुनाव में जहाँ सबसे अधिक फायदे में रही भाजपा तथा समता वहीं भाकपा, माकपा, झामुमो और सपा तथा सजपा का सफाया हो गया और जद को मात्र एक सीट से संतोष करना पड़ा।

भाजपा के केशुभाई पटेल की ताजपोशी

4 मार्च, 1998 को श्री केशुभाई पटेल के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ-ग्रहण गुजरात में भाजपा के लिए पुनः एक नया इतिहास है। यह वही केशुभाई हैं जिनकी जगह पर अक्टूबर, 1995 में सुरेश मेहता को मुख्यमंत्री बनाया गया था।

आज फिर 182-सदस्यीय गुजरात विधानसभा में दो-तिहाई बहुमत पाए श्री केशुभाई पटेल से उम्मीद की जाती है कि वे गुजरात में एक साफ-सुथरी तथा स्थाई सरकार देंगे। यह दूसरा समय है जब गुजरात के मतदाताओं ने अस्थिरता से बचने के लिए भाजपा को इतने अधिक बहुमत से विजयी बनाया है।

इतिहास बताता है कि बहुत अनुभवी नेता चिमनभाई पटेल को मुख्यमंत्री के पद पर पुनर्वापसी में 16 साल लगे थे किन्तु केशुभाई पटेल ने मात्र दो-ढ़ाई साल में ही पूरी मजबूती के साथ पुनः गुजरात की बागडोर संभाली।

जातिग्रस्त दलें धराशायी

12वीं लोकसभा में जातिवादी पार्टियाँ धराशायी हो गयी हैं। बसपा जो हमेशा बहुजन समाज का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती रही है को मात्र 5 सीट लेकर ही संतोष करना पड़ा है। और तो और बसपा के सर्वोच्च नेता कांशीराम को मुंह की खानी पड़ी है।

मध्य प्रदेश में बसपा तथा सवर्ण समाज पार्टी दोनों को मतदाताओं ने धूल चटा दी है। बसपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री अरविन्द नेजाम जो जंजगीतर तथा कंकर दो संसदीय क्षेत्र से उम्मीदवार थे, को दोनो में जमानत से हाथ धोना पड़ा। कंकर संसदीय सीट से कांग्रेस की टिकट पर श्री नेताम पांच बार विजयी हो चुके थे। दिग्विजय सिंह मंत्रिमंडल में रहे दूसरे बड़े बसपा नेता अखण्ड प्रताप खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से भाजपा की उमा भारती से हार गये। इसी प्रकार सवर्ण समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण तिवारी रेवा क्षेत्र से अपनी जमानत नहीं बचा सके।

–शिव कुमार

लोकतंत्र के इतिहास में पहली बार

राष्ट्रपति दंपति ने मतदान किया

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में पहली बार भारत के प्रथम नागरिक दंपति राष्ट्रपति के.आर. नारायणन और उनकी पत्नी उषा नाराणन ने राष्ट्रपति एस्टेट में बन एक मतदान केन्द्र में अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

परम्परागत रूप से भारत में राष्ट्रपति कभी वोट नहीं डालता था पर इस बार की 12वीं लोकसभा के चुनाव में राष्ट्रपति नारायणन का मतदान करने का निर्णय निहायत व्यक्तिगत था। इससे भी आश्चर्यजनक किन्तु सच बात तो यह है कि उन्होंने पंक्ति में खड़ा होकर वोट डाला। पंक्ति में उनके पहले और कई अन्य मतदाता भी खड़े थे पर वे मतदान के लिए अपनी बारी की इन्तजारी में रहे। यह इस बात का परिचायक है कि भारत के इस राष्ट्रपति को लोकतन्त्र में कितनी आस्था है। यह बात उनके जेहन में अवश्य रही होगी कि जहाँ तक मतदान का सवाल है, सभी मतदाताओं का मानव अधिकार बराबर है।

श्री नारायणन की पुत्री चित्रा ने भी मतदान किया। नयी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में मुख्य चुनाव आयुक्त एम.एस. गिल ने भी अपने मताधिकार का प्रयोग किया। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार स्वतन्त्र भारत में मतदान करने वाले श्री नारायणन पहले राष्ट्रपति हैं।

12 वीं लोकसभा का चुनाव

महाराष्ट्र में महिलाओं के साथ नाइंसाफी

दौड़ में मात्र 24 महिला उम्मीदवार

रा.वि. संवाददाता, मुम्बई

देश के सबसे अधिक प्रगतिशील और शिक्षित राज्य-महाराष्ट्र में महिलाओं को राजनीतिक अधिकार दिलाना एक स्वप्न बनकर रह गया। सभी के सभी राजनीतिक दलों ने औरतों के साथ राज्य में नाइंसाफी की। 48 संसदीय क्षेत्रों के लिए सम्पन्न चुनाव में कुल 377 उम्मीदवारों में मात्र 24 महिलाएं थीं जिसमें से सिर्फ 2 महिलाएं ही 12वीं लोकसभा में पहुंच सकीं।

लोकसभा तथा विधानसभा में प्राय: सभी बड़े राजनीतिक दलों ने जहाँ महिलाओं को 33% आरक्षण देने का पुरजोर आश्वासन दे रखा था वहीं इस चुनाव में मात्र 24 यानी विगत 1996 के चुनाव से भी 18 कम महिला उम्मीदवार चुनाव मैदान में थीं। आंकड़ें बताते हैं कि मात्र 6.36% ही प्रतिनिधित्व कर सकीं।

प्रबुद्ध महिला श्रीमती अलकामोर वाड़े तथा श्रीमती अनिता महेशगुप्ता ने अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की कि पुरुष वर्चस्व वाली राजनीति में इससे अधिक की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। डा. सुधा डामले के मतानुसार स्वस्थ-प्रजातान्त्रिक प्रणाली कायम करने के लिए राजनीति में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी अति आवश्यक है। रामटेक संसदीय क्षेत्र से पूर्व सांसद स्व. तेज सिंह राव भोंसले की विधवा श्रीमती चित्रलेखा भोंसले तथा हिंगोली क्षेत्र से पूर्व सांसद श्रीमती सूर्यकान्ता पाटिल मात्र दो ही महिला उम्मीदवार कांग्रेस से थीं और दोनो विजयी हुई। भाजपा तथा शिवसेना से सिर्फ एक-एक महिला क्रमश: जयवंती बेन मेहता दक्षिणी मुम्बई तथा निवेदिता माने इचारकरंजी से थी। किन्तु मार्कसवादी भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है जिसने 33% महिलाओं को उम्मीदवार बनाया।

12वीं लोकसभा में दलों की स्थिति

भाजपा एवं उसके सहयोगी

भाजपा	179
समता	12
अकालीदल	8
अन्नाद्रमुक	18
बिजद	9
अन्य	26
	252

कांग्रेस एवं उसके सहयोगी

कांग्रेस	141
राजद	17
अकालीदल	8
बसपा	5
आर.पी.आई	4
तृणमूल कांग्रेस	7
अन्य	–

संयुक्त मोर्चा

माकपा	32
सपा	20
भाकपा	9
जद	6
द्रमुक	6
तेलगुदेशम	12
आर.एस.पी.	5
तमकाँ	3
फॉरवड ब्लॉक	2
अन्य	–

बिहार से 12वीं लोकसभा में

क्रमांक	निर्वाचित सदस्य	दल	क्षेत्र	क्रमांक	निर्वाचित सदस्य	दल	क्षेत्र
1.	डा. मदन प्र. जायसवाल	भाजपा	बेतिया	28.	सुशील कुमार सिंह	समता पार्टी	औरंगाबाद
2.	श्री रामजी ऋषि देव	भाजपा	अररिया (सु.)	29.	महेन्द्र बैठा	समता पार्टी	बगहा (सु.)
3.	श्री जयकृष्ण मंडल	भाजपा	पूर्णिया	30.	श्रीमती रमा देवी	राजद	मोतीहारी
4.	श्री बाबूलाल मरांडी	भाजपा	दुमका (सु.)	31.	मो. शहाबुद्दीन	राजद	सीवान
5.	श्री जगदम्बी प्र. यादव	भाजपा	गोड्डा	32.	श्री हीरालाल राय	राजद	छपरा
6.	श्री प्रभाष चन्द्र तिवारी	भाजपा	भागलपुर	33.	श्री रघुवंश प्र. सिंह	राजद	वैशाली
7.	श्री लाल मुनि चौबे	भाजपा	बक्सर	34.	कै. जयनारायण निषाद	राजद	मुजफ्फरपुर
8.	श्री मुनी राम	भाजपा	सासाराम (सु.)	35.	श्री सीताराम यादव	राजद	सीतामढ़ी
9.	श्री कृष्ण कुमार	भाजपा	गया (सु.)	36.	श्री सुरेन्द्र प्र. यादव	राजद	झंझारपुर
10.	श्री धीरेन्द्र अग्रवाल	भाजपा	चतरा	37.	मो. अली अशरफ फातमी	राजद	दरभंगा
11.	श्री रीतलाल वर्मा	भाजपा	कोडरमा	38.	श्री पीताम्बर पासवान	राजद	रोसड़ा (सु.)
12.	श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय	भाजपा	गिरिडीह	39.	प्रो. अजित कुमार मेहता	राजद	समस्तीपुर
13.	श्रीमती रीता वर्मा	भाजपा	धनबाद	40.	श्री राजवंशी महतो	राजद	बलिया
14.	श्री यशवंत सिन्हा	भाजपा	हजारीबाग	41.	श्री अनूपलाल यादव	राजद	सहरसा
15.	श्री रामटहल चौधरी	भाजपा	राँची	42.	श्री लालू प्रसाद	राजद	मधेपुरा
16.	श्रीमती आभा महतो	भाजपा	जमशेदपुर	43.	मो. तसलीमुद्दीन	राजद	किशनगंज
17.	श्री कड़िया मुंडा	भाजपा	खूंटी (सु.)	44.	श्री विजय कुमार विजय	राजद	मुंगेर
18.	श्री ब्रजमोहन राम	भाजपा	पलामू (सु.)	45.	श्री सुरेन्द्र प्रताप यादव	राजद	जहानाबाद
19.	श्री सोम मरांडी	भाजपा	राजमहल (सु.)	46.	श्रीमती मालती देवी	राजद	नवादा (सु.)
20.	श्री जार्ज फर्नांडीस	समता पार्टी	नालंदा	47.	डा. शकील अहमद	कांग्रेस	मधुबनी
21.	श्री नीतीश कुमार	समता पार्टी	बाढ़	48.	मो. तारिक अनवर	कांग्रेस	कटिहार
22.	मो. अब्दुल गफूर	समता पार्टी	गोपालगंज	49.	श्री राजो सिंह	कांग्रेस	बेगुसराय
23.	श्री प्रभुनाथ सिंह	समता पार्टी	महाराजगंज	50.	श्री विजय सिंह सोय	कांग्रेस	सिंहभूम (सु.)
24.	श्री दिग्विजय सिंह	समता पार्टी	बांका	51.	श्री इन्द्रनाथ भगत	कांग्रेस	लोहरदगा (सु.)
25.	श्री शकुनी चौधरी	समता पार्टी	खगड़िया	52.	श्री रामविलास पासवान	जद	हाजीपुर (सु.)
26.	श्री हरिद्वार प्र. सिंह	समता पार्टी	आरा	53.	श्री आनन्द मोहन	राजपा	शिवहर
27.	श्री वशिष्ठ नारायण सिंह	समता पार्टी	विक्रमगंज	54.	पटना संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में 30 मार्च को चुनाव होगा।		

सामाजिक न्याय की शक्तियों को एक होना होगा

विगत लोकसभा चुनाव में सामाजिक न्याय की राह पर चलने वाले राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं को आपसी मतभेद तथा व्यक्तित्व की लड़ाई की वजह से अपनी जमा पूंजी को गंवाना पड़ा है । उनके सभी नेताओं को मतदाताओं ने उनकी अपनी हैसियत का अहसास करा दिया है । केन्द्र तथा कई राज्यों में सामाजिक न्याय के समर्थक दलों ने सत्ता का जो सुख भोगा है तथा सामाजिक न्याय के नाम पर शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, पिछड़े तथा गरीब लोगों को पिछले कई वर्षों में जिन दलों एवं नेताओं ने मूर्ख बनाने का काम किया है उसका खामियाजा इस चुनाव में भुगतना पड़ा है और जो कुछ कसर रह गया है वह आगे आने वाले दिनों में निकल जाएगा ।

आपसी झगड़े में उन दलों को आखिर मिला क्या ? 1996 चुनाव की तुलना में राजद को 16 की जगह 17, जद को 28 की जगह 6, समाजवादी पार्टी को 17 की जगह 20 बसपा को 11 की जगह 5 सजपा को 3 की जगह 1 सीट मिली । भाजपा के साथ गठबन्ध न करने वाली समता पार्टी को मात्र 4 सीट का फायदा हुआ, यानी 8 की जगह 12 सीटें मिली ।

चुनाव परिणाम इन ताकतों को पुनः एक होने के लिए विवश कर सकता है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन सत्तालोलुप नेताओं ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को देश तथा समाज से ऊपर रखकर सामाजिक न्याय का मखौल उड़ाया है तथा उसकी धज्जियाँ उड़ाई हैं । राजनीतिक दलों का सिद्धान्तहीन समझौता न तो देश के हित में होता है और न समाज के हित में । इसलिए हारकर एक-न-एक दिन समान विचारधारा वाले दलों को गोलबंद होना होगा । यदि वे स्वयं ऐसा नहीं कर पाए तो समाज के लोग तथा उनके समर्थक मतदाता उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य करेंगे । इसलिए समय का तकाजा है कि वे इस पर गंभीरता से विचार करें ।

राकेश प्रियदर्शी–रा.वि. संवाददाता

12वीं लोकसभा के लिए निर्वाचित महिला सांसद

बिहार

1.	आभा महतो	भाजपा	जमशेदपुर
2.	रीता वर्मा	भाजपा	धनबाद
3.	मालती देवी	राजद	नवादा (सु.)
4.	रमा देवी	राजद	मोतिहारी

पश्चिम बंगाल

5.	ममता बनर्जी	तृणमूल कांग्रेस	दक्षिण कलकत्ता
6.	कृष्ण बोस	तृणमूल कांग्रेस	जादवपुर
7.	संध्या बौरी	भाकपा	विष्णुपुर
8.	मिनाती सेन	माकपा	जलपाईगुड़ी
9.	गीता मुखर्जी	भाकपा	पंसकुरा

असम

10.	रानी नाराह	कांग्रेस	लखीमपुर

मणिपुर

11.	किर्गोन्टे	भाकपा	बाहरी मणिपुर

उड़ीसा

12.	जयंती पटनायक	कांग्रेस	बेहरामपुर
13.	संगीता सिंहदेव	भाजपा	बोलांगीर

आंध्र प्रदेश

14.	पानाबाका लक्ष्मी	कांग्रेस	बेल्लूर
15.	डा. सुगना कुमारी	तेदेपा	पेदापल्ली

केरल

16.	ए.के. प्रेमाजम	माकपा	बड़ागारा

तमिलनाडु

17.	डा.वी. सरोज	अद्रमुक	रासीपुरम

मध्य प्रदेश

18.	विमला वर्मा	कांग्रेस	सिवनी
19.	विजयाराजे सिंधिया	भाजपा	गुना
20.	सुमित्रा महाजन	भाजपा	इंदौर
21.	उमा भारती	भाजपा	खजुराहो

महाराष्ट्र

22.	चित्रलेखा भोंसले	कांग्रेस	रामटेक
23.	सूर्यकांता पाटिल	कांग्रेस	हिंगौली

गुजरात

24.	भावना बेन चिखलिया	भाजपा	जूनागढ़
25.	भावना दबे	भाजपा	सुंदरगढ़
26.	जयाबेन ठक्कर	भाजपा	बड़ौदरा
27.	निशाबेन चौधरी	कांग्रेस	साबरकांटा

दिल्ली

28.	सुषमा स्वराज	भाजपा	दक्षिण दिल्ली
29.	मीरा कुमार	कांग्रेस	करोलबाग

हरियाणा

30.	कैलाशो देवी	हलोदरा	कुरुक्षेत्र

पंजाब

31.	सतविंदर कौर	अकाली दल	रोपड़

उत्तर प्रदेश

32.	मायावती	बसपा	अकबरपुर
33.	ओमवती	सपा	बिजनौर
34.	उषा वर्मा	सपा	हरदोई
35.	रीना चौधरी	सपा	मोहनलालगंज
36.	कमला रानी	भाजपा	घाटमपुर
37.	सुखद्रा मिश्रा	भाजपा	इटावा
38.	शीला गौतम	भाजपा	अलीगढ़
39.	इला पंत	भाजपा	नैनीताल
40.	मेनका गांधी	निर्दलीय	पीलीभीत

राजस्थान

41.	वसुंधरा राजे सिंधिया	भाजपा	झालावाड़
42.	उषा मीना	कांग्रेस	सवाई माधोपुर
43.	प्रभा ठाकुर	कांग्रेस	अजमेर

Govt. Regd. 301/84-85 Ph : 353958
पाठक इंस्टीच्यूट
(भूतपुर्व वायु-सेना इलेक्ट्रॉनिक्स इंजिनीयर द्वारा संचालित संस्थान)
सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ITIके विभिन्न ट्रेड्स तथा National Open School का Computer,Radio,T.V.,V.C.R.,House Wiring, Refrigeration & A/C ट्राँसफॉर्मर,पंखा एवं मोटरवाइंडिंग का प्रशिक्षण केन्द्र ।
पुरानी स्टेट बैंक बिल्डिंग, कंकड़बाग मेन रोड, पटना-800020

केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के सदस्य एवं उनके विभाग

कैबिनेट स्तर

1.	अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री	विदेश एवं अन्य सभी विभाग जो नहीं बांटे गये
2.	लालकृष्ण आडवाणी	गृह
3.	रामकृष्ण हेगड़े	वाणिज्य
4.	मुरली मनोहर जोशी	मानव संसाधन
5.	नीतीश कुमार	रेलवे
6.	यशवंत सिन्हा	वित्त
7.	सिकन्दर बख्त	उद्योग
8.	एस.एस. बरनाला	रसायन व उर्वरक
9.	जार्ज फर्नांडीज	रक्षा
10.	अनंत कुमार	नागरिक उड्डयन
11.	सत्यनारायण जटीया	श्रम
12.	के. राममूर्ति	पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस
13.	राम जेठमलानी	नागरिक विकास
14.	मदन लाल खुराना	पर्यटन व संसदीय कार्य
15.	नवीन पटनायक	इस्पात एवं खान
16.	थाम्बी दोराई	विधि व न्याय
17.	आर. मुटियाह	भूतल परिवहन
18.	सुषमा स्वराज	सूचना व प्रसारण
19.	बूटा सिंह	संचार
20.	सुरेश प्रभु	वन व पर्यावरण
21.	काशीराम राणा	वस्त्र
22.	आर. कुमारमंगलम्	ऊर्जा

राज्यमंत्री

1.	ओमाक अपांग	पर्यटन
2.	सुखबीर सिंह बादल	उद्योग
3.	बंडारू दत्तात्रेय	शहरी विकास
4.	रमेश वैश्य	इस्पात एवं खान
5.	उमा भारती	मानव संसाधन विकास
6.	दलित एजिमलाई	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण (स्वतंत्र प्रभार)
7.	मेनका गांधी	कल्याण (स्वतंत्र प्रभार)
8.	संतोष कुमार गंगवार	पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस
9.	आर.के. कुमार	वित्त, राजस्व, बैंकिंग एवं बीमा तथा संसदीय मामलों का अतिरिक्त प्रभार ।
10.	बाबूलाल मरांडी	पर्यावरण एवं वन
11.	मुख्तार नकवी	सूचना एवं प्रसारण
12.	रामनाईक	रेलवे एवं संसदीय कार्य
13.	ए.के. पटेल	रसायन एवं उर्वरक
14.	बाबा गौड़ा पाटिल	ग्रामीण विकास (स्वतंत्र प्रभार)
15.	देवेन्द्र प्रधान	भूतल परिवहन
16.	कवीन्द्र पुरकायस्थ	संचार
17.	वसुंधरा राजे	विदेश मामले
18.	दिलीप रे	कोयला (स्वतंत्र प्रभार)
19.	सोमपाल	कृषि
20.	सत्यपाल सिंह यादव	नागरिक आपूर्ति
21.	आर. जनार्दन	कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

विज्ञापन दरें

आवरण पृष्ठ (रंगीन)

	एक बार	चार या अधिक
1. अन्तिम पृष्ठ	6000 रुपये	5000 रुपये
2. द्वितीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
3. द्वितीय आधा पृष्ठ	2500 रुपये	2200 रुपये
4. तृतीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
5. तृतीय आधा पृ.	2500 रुपये	2200 रुपये

भीतरी पृष्ठ

	एक बार	चार या अधिक
6. रंगीन पूर्ण पृष्ठ	1500 रुपये	1200 रुपये
7. रंगीन आधा पृ.	800 रुपये	700 रुपये
8. साधारण पूर्ण पृ.	1000 रुपये	800 रुपये
9. साधारण आधा पृ.	600 रुपये	500 रुपये
10. साधारण चौथाई पृ.	400 रुपये	300 रुपये

विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :

विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक : राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष : 228519

लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ और प्रबुद्धजनों की भूमिका

❒ प्रो. (डा.) वीरकेश्वर प्र. सिंह

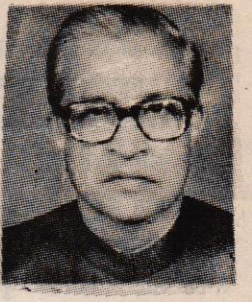

जनता में राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं के हताश होने तथा लोकतान्त्रिक संस्थाओं और व्यवस्थाओं की प्रतिष्ठा में लगातार आ रही गिरावट के परिणामस्वरूप आज दुनिया के सबसे बड़े भारतीय लोकतन्त्र के अस्तित्व पर ही एक प्रश्न चिह्न खड़ा हो गया है जिससे आम जनता का चिन्तित होना स्वाभाविक है । ऐसी विकट एवं भयावह स्थिति में प्रबुद्धजनों की भूमिका अहम् हो जाती है ।

राष्ट्रीय विचार मंच ने इसीलिए इस पर बहस प्रारम्भ किया है । विगत 3 दिसम्बर '98 को पटना के आई.आई.बी.एम. सभागार में देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद की 113वीं जयंती पर इसने एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें 'लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ और प्रबुद्धजनों की भूमिका' विषय पर प्रो. वीरकेश्वर प्र. सिंह के द्वारा एक शोध पूर्ण आलेख पढ़ा गया । प्रस्तुत हैं आपके अवलोकनार्थ उसके अंश । **–प्रधान संपादक**

वर्तमान काल प्रजातंत्र का युग है । विश्व के अधिकांश देश अपने को प्रजातांत्रिक कहते हैं चाहे वे पूँजीवादी हों या साम्यवादी, संसदीय हों या अध्यक्षीय , बड़े देश हों या छोटे । प्रथम महायुद्ध के बाद प्रजातंत्र का आंदोलन काफी तीव्र हो गया, राजतंत्र और अधिनायकतंत्र मिटते गए और उनका स्थान प्रजातंत्र लेता गया । आज शासन का यह स्वरूप विश्वव्यापी हो गया है । 'लोकतंत्र' शब्द को आज अत्यधिक प्रतिष्ठित माना जाता है ।

लोकतंत्र के किसी भी पहलू पर विचार करते समय यह ध्यान में रखना होगा कि यह सिर्फ सरकार का ही रूप नहीं है बल्कि राज्य व समाज का भी रूप है । **गिडिंग्स** के शब्दों में, **"प्रजातंत्र केवल एक शासन का नाम नहीं है, वरन् राज्य का भी एक रूप है तथा समाज के रूप का भी नाम है या फिर तीनों का एक सम्मिश्रण है ।"** प्रजातंत्र का स्वरूप इस परिभाषा से भी अधिक व्यापक है। इसमें सिर्फ राजनीतिक और सामाजिक पक्षों को ही शामिल नहीं किया जाता है, बल्कि आर्थिक और नैतिक पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाता है । यह सिर्फ राज्य, सरकार या समाज का स्वरूप ही नहीं, अपितु आदर्श जीवन-पद्धति की खोज है । **डॉ. आशीर्वादम्** ने कहा है, **"प्रजातंत्र मानवता के प्रति हमारे उत्साह की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है । स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व के द्वारा विरोधी सिद्धांतों में पारस्परिक मेल बैठाने का यह ठोस प्रयास है जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह संभव बनाया जा सके कि अपनी शक्ति भर अपने किये सर्वोदय कल्याण की सिद्धि कर सके ।"** पालकेस्टर ने प्रजातंत्र को 'इसाई धर्म का अन्य रूप', एलवुड ने 'सामाजिक आत्मा' और कुमारी फॉलेट ने 'सामाजिक आदर्श' कहा है । संक्षेप में, **"प्रजातंत्र एक विशेष प्रकार का शासन है, एक सामाजिक व्यवस्था का सिद्धांत है, एक विशेष प्रकार की मनोवृत्ति है, एक आर्थिक आदर्श है, एक नैतिक आदर्श है । इसके अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था तथा दैनिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक मापदंड सम्मिलित है ।"**

प्रजातंत्र की निन्दा तथा उपासना का इतिहास अत्यंत प्राचीन है । यह प्रारंभ से ही प्रशंसा तथा भर्त्सना का भाजन रहा है । इसके आलोचकों की संख्या इसके प्रशंसकों की संख्या से कम नहीं है । कुछ विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है, और समस्त राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रोगों के लिये रामवाण बतलाया है । **बेंथम** ने इसे 'सर्वोत्तम शासनतंत्र' कहा है । **जॉन स्टुअर्ट मिल** के विचारानुसार भी 'उत्तम शासन और जनता के चरित्र-निर्माण की दृष्टि से प्रजातंत्र सर्वश्रेष्ठ है । 'कुछ विद्वानों ने प्रजातंत्र को "पवित्र ईश्वरीय सिद्धांत" बतलाया है । दूसरी ओर, प्लेटो और **अरस्तू जैसे प्राचीन विद्वानों ने प्रजातंत्र को सरकार का विकृत रूप बतलाया है । अनेक विद्वानों ने इसे 'भीड़तंत्र' 'पियक्कड़ मशखरा', 'बुरे लोगों का कुलीनतंत्र', 'बेवकूफों का शासन', 'सपनों का महल', 'बुद्धिहीनों, अज्ञानियों तथा दरिद्रों का शासन' कहा है ।**

आधुनिक युग में प्रजातंत्र की ये कमियाँ उजागर हो उठी हैं और चुनौती बनकर इसके सामने खड़ी हो गई हैं । दक्षिणी-पूर्वी तथा मध्य-पूर्वी लैटिन अमेरिकी देशों, एशिया में पाकिस्तान, नेपाल और बर्मा जैसे नवोदित देशों में तो इसके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग गया है ।

स्वतंत्रता के बाद बीते पचास वर्षों में भारतीय लोकतंत्र ने जहाँ अपनी जड़ें बहुत मजबूत कर ली है वहीं समस्त विश्व के समक्ष अपनी एक विश्वसनीय पहचान भी कायम की है । लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विकास के क्रम में भारत की शिक्षित-अशिक्षित जनता ने अपने वोट के महत्व को पहचाना है और इसने संवैधानिक अधिकार के माध्यम से सत्ता का सूत्र अपने हाथों में थाम रखा है । राजनीतिक तंत्र के मूल में यह सर्वजन भागीदारी ही भारतीय लोकतंत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है । तथापि, पांच दशकों की इस यात्रा में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष अनेक-चुनौतियाँ भी आती रही हैं जिनका सामना इसने सफलतापूर्वक किया है । लेकिन, पिछले एक डेढ़ दशक से लोकतंत्र के सम्मुख जो चुनौतियाँ खड़ी होती आ रही हैं, निस्सन्देह ये अब तक की सर्वाधिक कठिन चुनौतियाँ हैं । **स्वाधीन भारत के इतिहास का वर्तमान दौर लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा का दौर है जब जाति, धर्म और क्षेत्र के खेमों में बंटते जा रहे मतदाता पूरी व्यवस्था के लिए संकट उत्पन्न कर रहे हैं ।** नीचे से ऊपर तक फैला भ्रष्टाचार धुन की तरह पूरी

व्यवस्था को खोखला कर रहा है जो सर्वजन हित के लोकतांत्रिक सिद्धान्तों के सर्वथा विपरीत है । निश्चय ही यह अग्नि परीक्षा भारतीय जनता की भी है ।

अतीत में भारतीय जनता ने अपने विवेक और अधिकारों के माध्यम से लोकतंत्र के समक्ष आई अनेकानेक चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना किया है । 1975 में देश में आपात्काल की घोषणा और इसके माध्यम से अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के हनन का सम्यक् प्रत्युत्तर देते हुए जनता ने 1977 के संसदीय आम चुनाव में इतिहास का एक नया अध्याय रच दिया था । अधिकांशत: अशिक्षित भारतीय मतदाताओं की राजनीतिक जागरुकता ने लोकतंत्र पर हावी होने की व्यक्तिवादी कोशिशों को नाकाम कर दिया था और इस प्रकार एक बार फिर अपने प्रति जतायी गयी संविधान निर्माताओं की आस्था को सही साबित किया था । लेकिन, ज्यों- ज्यों राजनीतिक दलों का विकास व विस्तार होता गया, राजनीति प्रतिगामी मूल्यों से ग्रस्त होती गयी । जाति, धर्म और क्षेत्र जैसे मुद्दे राजनीति पर हावी होते गए और इनके संक्रामक प्रभावों से मतदाता भी प्रभावित होने लगे ।

आज प्राय: पूरे देश में और विशेष कर उत्तर भारत के राज्यों में जातिवाद सबसे प्रमुख है । स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान तमाम देशवासी जाति, धर्म, क्षेत्र और अन्य सभी प्रकार के मतभेदों को भुलाकर अंग्रेज सरकार के खिलाफ एकजुट होकर उठ खड़े हुए थे । यह भारतीयों की एकता और अपने उद्देश्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ही थी जिस कारण अंग्रेजों को भारत छोड़ कर जाना पड़ा । लेकिन, आजादी के इन पाँच दशकों में और विशेष कर पिछले एक दशक में भारत ने जो खोया है उसमें सबसे महत्वपूर्ण है जाति और उपजाति के नाम पर समाज में विभाजन, तनाव और टकराव की स्थिति । अनेक राजनीतिक पार्टियाँ जातीय तनाव और टकराव को हवा दे रही हैं । भेद-भाव और टकराव पैदा करने की इस नीति से ऐसे राजनीति की राजनीति भले ही फलती-फूलती रही हो, लेकिन बढ़ती हुई इस जातिवादी प्रवृत्ति ने लोकतंत्र के समक्ष गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े किए है । जाति के आधार पर राजनीतिक दलों द्वारा प्रत्याशियों का चयन और जाति के आधार पर मतदाताओं का बंट जाना पूरे तंत्र के सैद्धान्तिक स्वरुप का पतन ही दर्शाता है । निस्सन्देह, इस स्थिति के लिए राजनीति की प्रतिगामी प्रवृत्तियाँ सबसे अधिक दोषी हैं । मतदाताओं को जाति के आधार पर संगठित करना लोकतंत्र का अपमान ही कहा जाएगा । इसी नीति का परिणाम है कि आज इस तरह की सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं की बाढ़ सी आ गयी है जिसके गठन का आधार कोई जाति विशेष या उपजाति विशेष है । भारतीय समाज में जाति बहुत पहले से सामाजिक व्यवस्था का एक आधार रही है, लेकिन इस व्यवस्था के राजनीतिक उपयोग ने वातावरण को बहुत तनावपूर्ण बना दिया है । सत्ता पाने की लालसा में प्रतिगामी मूल्यों से राजनीतिज्ञों का जुड़ाव और इस कारण समाज का यह दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन भारतीय लोकतंत्र के समक्ष सबसे बड़ी और सर्वाधिक कठिन चुनौती है ।

विविधताओं से भरे इस विशालकाय राष्ट्र में एकता की एक अन्तर्निहित धारा सदियों से बहती रही है । विभिन्न धर्म, भाषा, समुदाय और विभिन्न प्राकृतिक संरचनाओं वाले क्षेत्रों में बँटे भारतवासी राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक एकता के सन्दर्भ में एक रहे हैं । राजनीति में धर्म का घालमेल 1947 में भारत के विभाजन के रूप में अपनी परिणति तक पहुंचा । निस्सन्देह, यह विभाजन भारत के हजारों वर्षों के महान इतिहास का एक कलंकित अध्याय है । स्वतंत्रता के बाद भारत के राजनीतिज्ञों ने विभेदकारी नारों के देश-विभाजन रूपी दुष्परिणाम से कुछ भी सीख नहीं ली और भाषा के आधार पर मतभेद पैदा करने लगे । विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं का सम्यक् सम्मान सुरक्षित रखते हुए एक राष्ट्रव्यापी भारतीय संपर्क भाषा का स्वप्न इन विभेदकारी नारों से खंडित हुआ । भारत जैसे महान राष्ट्र के लिए यह तथ्य अत्यन्त खेदजनक है ।

क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व भारत की राजनीति का एक सत्य है और विविधतापूर्ण वृहत् राष्ट्र की लोकतांत्रिक राजनीति में अनेकमायनों में इनकी सार्थकता भी है । लेकिन, आज के क्षेत्रीय दलों की क्षेत्रवादी राजनीति अपनी संकीर्ण गलियों में ही उलझ कर रह गई है । यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय दल के हितों के सन्दर्भ में जागरूक रहते हुए राष्ट्रीय हितों के सन्दर्भ में भी सोचें और अपना दृष्टिकोण व्यापक बनायें । लेकिन, यह भी भारतीय लोकतंत्र का एक दुर्भाग्य ही है कि क्षेत्रीय दल क्षेत्रीय दलदल से जल्दी बाहर नहीं आ पाते और क्षेत्रवाद की संकुचित मानसिकता में डूबते उतराते रहते हैं । क्षेत्रीयता की यह भावना लोकतंत्र के सम्मुख एक कठिन चुनौती पेश करती है ।

लोकतांत्रिक व्यवस्था को नाकाम करने में तंत्र में फैले भ्रष्टाचार की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । सर्वजन-हित और कमजोर तथा निर्धनों के संरक्षण का लोकतांत्रिक सिद्धान्त तब असफल साबित होता है जब भ्रष्टाचार का धुन पूरे तंत्र को खोखला करने लगता है । यही दुभार्ग्यपूर्ण परिस्थिति भारत में है पिछले वर्षों में राजनीति के शिखर पुरुषों के भ्रष्टाचार की कथाओं ने राष्ट्रीय ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्याप्त चर्चा पायी है । यह तथ्य तो सर्वविदित है ही कि नौकरशाही के निचले स्तर से लेकर ऊपर तक भ्रष्टाचार का चक्र बेखौफ चल रहा है । अपवाद स्वरूप कुछेक ईमानदार नौकरशाह विवश भाव से संपूर्ण तंत्र के खोखले होते जाने के साक्षी मात्र बन रहे हैं । भ्रष्टाचार की इस व्याप्ति से सबसे जयादा प्रभावित होती हैं वे योजनाएं जो कमजोर और निर्धनों की सहायतार्थ चलायी जाती हैं । लोकतंत्र के सिद्धान्त उस अंतिम व्यक्ति के हितों के संरक्षण की बात करते हैं जो भीड़ में सबसे कमजोर और सबसे पीछे हैं । लेकिन, भ्रष्टाचार का यह जहरीला और सर्वभक्षी यंत्र उस अन्तिम व्यक्ति को अपने हाल पर छोड़ देता है । यह लोकतंत्र की बहुत बड़ी विफलता है । यह स्थिति जहाँ कमजोर और निर्धनों को अपने हाल पर मरने को छोड़ती है वहीं देश की विकास-प्रक्रिया को चौपट करती है । स्वतंत्रता के बाद भ्रष्टाचार धीरे-धीरे भारतीय व्यवस्था में अपनी जड़ें जमाने लगा था. लेकिन 70 के दशक के आस पास से इसमें तीव्रता से वृद्धि होने लगी । और आज, 1997 के इन अन्तिम दिनों में राजनीति और प्रशासन के

अनेक शिखर पुरुषों पर अदालतों में चल रहे करोड़ों अरबों के घपलों-घोटालों के मुकदमे आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था का सच बयान कर रहे हैं । भ्रष्टाचार का प्रश्न लोकतंत्र के संपूर्ण ढाँचे के समक्ष एक चुनौती के रूप में खड़ा है और भारतीय लोकतंत्र को इसका जवाब ढूँढ़ना है ।

भारतीय लोकतंत्र के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है, राजनीति का अपराधीकरण । राजनीतिज्ञों और अपराधियों के बीच सांठ-गांठ एक खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है । अब तो अपराधी ही राजनीति में प्रवेश कर गए हैं और सत्ता की गद्दी पर बैठने लगे हैं । इस विषय पर बी.एन. वोहरा समिति की रिपोर्ट में विस्तृत प्रकाश डाला गया है और इसे दूर करने के लिए उपाय सुझाए गये हैं । लेकिन दुःख की बात है कि इसके अधिकांश सुझावों पर सरकार ने अमल नहीं किया है । यह याद रखना होगा कि भ्रष्टाचार और राजनीतिक अपराधीकरण का प्रमुख कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास है । यों तो नैतिक मूल्यों में गिरावट ने पूरी सामाजिक व्यवस्था की जड़ को हिला दिया है लेकिन हमारे आदर्श, राष्ट्रीय चरित्र और आर्थिक व्यवस्था इसके मुख्य रूप से शिकार रहे हैं ।

राजनीतिक स्तर पर दल-बदल और संसदीय संस्थाओं के कार्यकरण में गिरावट भी चिंता का विषय बन गए हैं । विगत तीन दशकों में दल-बदल इतनी तेजी से और बड़े पैमाने पर हुए कि 1985 ई. में इसे रोकने के लिए कानून बनाना पड़ा है । फिर भी, भारतीय शासनतंत्र इससे ग्रस्त रहा है । हाल की गुजरात और उत्तर प्रदेश की घटनाओं ने सारे संसदीय आदर्शों को धूल-धूसरित कर दिया है । दल-बदल के आधार पर सरकारें तो बनी हीं, साथ-साथ उत्तर प्रदेश विधान सभा में हुई मारपीट की घटना ने संसदीय संस्थाओं के गिरते स्तर की पोल ही खोल दी । हाल में लोकसभा की बैठक का संसद सदस्यों द्वारा हल्ला-गुल्ला के कारण स्थगित किया जाना भी अंधकारपूर्ण भविष्य की ओर संकेत करता है ।

स्वतंत्रता की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर संसद में, पारित प्रस्ताव Agenda for India भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियों और उन्हें समझाने के सुझाव का संक्षिप्त विवरण देता है–"The resolution calls for probity and accountability in public life, ridding the polity of criminalization, introduction of electoral reforms, national campaign to check population growth, inculcation of a scientific temper for the development of economy as well as human resource, commitment to universal primary education by 2005 with particular emphasis on the girl child and to make education employment oriented, efficient use of resources, attention to infrastructure development elimination of poverty, security, social justice and balanced regional development and the need to practice gender justice as a way of life."

थोड़े में, सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता, अपराधीकरण का उन्मूलन, जनसंख्या पर नियंत्रण, आर्थिक विकास, निरक्षरता का उन्मूलन, गरीबी की समाप्ति, सामाजिक न्याय, क्षेत्रीय संतुलन और महिलाओं के प्रति न्याय इन चुनौतियों की दवा है ।

स्पष्ट है कि इन परिस्थितियों में, जब राष्ट्र की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं, बुद्धिजीवियों की भूमिका निर्णायक हो गयी है । जाति पर आधारित भेद-भावों की समस्या का मूल सामाजिक अन्तर्विरोधों में निहित है और बुद्धजीवियों का नैतिक दायित्व है कि वे इन अन्तर्विरोधों के खिलाफ सामाजिक चेतना का परिष्कार करें । जाति और धर्म मूलक सामाजिक अन्तर्विरोधों से उत्पन्न कटुता का राजनीतिक लाभ लेने के कुत्सित प्रयासों से राजनीतिज्ञों ने जहाँ समाज को विभाजन के कगार पर पहुँचा दिया है वहीं देश के समक्ष व्यवस्था का संकट उत्पन्न कर दिया है । बुद्धिजीवियों को इन विभेदकारी परिस्थितियों से जूझना होगा क्योंकि उन पर अपने उन देशवासियों के मार्गदर्शन की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है जो अपने अज्ञान और भोलेपन के कारण विभेदक नारों के जाल में फंसते जा रहे हैं । उन्हें यह बताना होगा कि ऐसे नारे जहाँ राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं वहीं सामाजिक समरसता को हानि पहुंचा रहे हैं ।

किसी भी समाज या राष्ट्र के मानसिक और बौद्धिक स्तर का पैमाना उस के बुद्धिजीवियों के बौद्धिक चिंतन तथा उनके क्रियाकलापों द्वारा निर्धारित होता है । बुद्धिजीवियों का चिंतन अगर प्रगतिशील है और उनके क्रियाकलापों में अगर उनका चिंतन प्रतिबिम्बित होता है तो उस समाज या राष्ट्र के आम नागरिकों का मानसिक स्तरोन्नयन एक अनिवार्य परिणति होगी । निस्सन्देह, भारत के बुद्धिजीवी इन मायनों में प्रत्येक कसौटी पर खरे उतरते हैं और उन्हें अपने समाज और राष्ट्र के आम नागरिकों के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी का अहसास भी है । आवश्यकता है जिम्मेदारी के इस अहसास को राष्ट्र की प्रमुख समस्याओं से जोड़ने की । बुद्धिजीवियों को यह समझना होगा कि आम नागरिकों का मानसिक स्तरोन्नयन उनमें शिक्षा के व्यापक प्रसार से ही संभव हो सकेगा । बौद्धिक वर्ग का यह दायित्व भी है कि वे अपने कार्यक्रमों द्वारा नागरिकों के आदर्श की प्रतिस्थापना करें ।

जब तक किसी राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक समरसता के आदर्श का प्रतिस्थापन सुसंगत ढंग से नहीं किया जाएगा, तब तक उस राष्ट्र में विभेदक तत्व अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए विभेदकारी नारों के माध्यम से अपना उद्देश्य पूरा करते रहेंगे । अतः, बौद्धिक वर्ग को अपने कार्यक्रमों तथा उद्देश्यों में आम नागरिकों को जोड़ना होगा, उनमें शिक्षा का प्रसार करना होगा, उनमें राष्ट्रीय चेतना को कूट-कूट कर भरना होगा, उन्हें सामाजिक समरसता के महत्व को समझाना होगा । जिस राष्ट्र का नागरिक राष्ट्रीय चेतना से स्वचालित होगा और सामाजिक समरसता के आदर्शों से अनुप्राणित होगा, वहाँ लोकतंत्र तथा समानता के सिद्धान्त युगों-युगों तक जीवित रहेंगे ।

संपर्क : 352, दक्षिणी नेहरू नगर, पटना-800013

।। ब्राह्मणवाद बनाम समाजवाद ।।

❑ रामाधार सिंह

वैदिल काल में हमारा भारतीय समाज चार वर्गों में बंटा हुआ था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। परन्तु यह विभाजन विशुद्ध रूप से कर्म के आधार पर था न कि जन्म के आधार पर । ब्राह्मण का काम ज्ञान-अर्जन करना और ज्ञान-वितरण करना था । क्षत्रिय का काम देश-रक्षा और न्यायपालन कराना था। वैश्य का काम था-अन्न उत्पादन, उचित मूल्य पर अन्न का वितरण और गौ-पालन । उपरोक्त तीनों वर्गों के साथ-साथ अपनी सेवा करना भी शूद्र का काम था । हमारे समाज की यह विशेषता थी कि हरेक पर्व में चारों वर्ण के लोग पूर्णनिष्ठा और उत्साह के साथ भाग लेते थे ।

शास्त्रों में प्रमाण भी है कि विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे परन्तु कर्म से ब्राह्मण थे तथा परशुराम जन्म से ब्राह्मण थे, परन्तु कर्म से क्षत्रिय थे। रावण और कुंभकरण भी जन्म से ब्राह्मण थे, परन्तु उनकी वृत्ति राक्षसी हो गई थी, इसलिए वे लोग राक्षस कहलाये ।

कालान्तर में हमारी मान्यता विकृत होती गई और आज इतनी विकृत हो गई है कि किसी खास जाति में जन्म लेने वाले व्यक्ति को ही हम ब्राह्मण मानते हैं–चाहे वह प्रतिदिन अभक्ष्य खाता हो, नित्य शराब पीता हो, रोज वेश्यागमन करता हो, तथा वर्ष में तीन सौ पैसठों दिन जुआ खेलता हो, ये चारों काम राक्षस के बतलाए गए हैं । अत: जो भी व्यक्ति इन कर्मों में लिप्त है, वह राक्षस कहलाने का अधिकारी है ।

ब्राह्मण के पांच गुण बतलाए गए हैं–अपरिग्रही, संयमी, परोपकारी, उपासक तथा ब्रह्मज्ञानी ।

उपरोक्त पांचों गुण जिस व्यक्ति में हैं वह, सच्चे अर्थों में ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी है। हमारे तथाकथित राजनेता विकृत ब्राह्मणवाद की आलोचना करके छद्म समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं। देखा यह जाता है कि तथाकथित समाजवादी नेता बहुसंख्यक सम्प्रदायवाद की तो आलोचना करते हैं, परन्तु अल्पसंख्यक सम्प्रदाय को बढ़ावा देते हैं । दूसरे समाजवादी नेता जातिवाद का जहर फैलाकर आजीवन सत्ता में बने रहना चाहते हैं और अपने को धर्मनिरपेक्ष होने का दंभ भरते हैं ।

परन्तु सच्चाई यह है कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति में जबतक ब्राह्मणत्व को प्रतिष्ठापित नहीं किया जायगा, तब तक समाजवाद की स्थापना असंभव है । जिस दिन विश्व के हरेक नागरिक में, चाहे वह किसी देश का निवासी हो, ब्राह्मणत्व की स्थापना कर दी जायगी उसी दिन समाजवाद अर्थात् राम-राज्य का सपना पूरा हो जायगा ।

अत: हमारे तथाकथित समाजवादी नेताओं को चाहिए कि गला फाड़कर विकृत ब्राह्मणवाद (राक्षसवाद) की आलोचना करें परन्तु विश्व के प्रत्येक व्यक्ति में सच्चे ब्राह्मणत्व की स्थापना का प्रयास करें ।

अब जरा समाजवाद की चर्चा करें । विश्व में समाजवाद के प्रथम प्रवर्तक कार्ल मार्क्स माने जाते हैं । इन्होंने जीवन की सारी समस्याओं का जड़ आर्थिक विषमता को माना था तथा 'दुनिया के मजदूरों एक हो' का नारा बुलन्द किया था । परन्तु इन्होंने जीवन के सिर्फ एक पहलू- आर्थिक पहलू को महत्वपूर्ण माना । जीवन का दूसरा पहलू भी है जिसे नैतिकता या नैतिक-विकास कहते हैं। सम्पत्ति का संबंध शरीर से है जबकि नैतिकता का सम्बंध आत्मा से है । जब तक व्यक्ति का नैतिक उत्थान नहीं होगा, तब तक सच्चे समाजवाद की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। आत्मरूप से विकसित व्यक्ति ही नैतिकवान हो सकता है या दूसरे शब्दों में नैतिकवान व्यक्तियों की ही आत्मा विकसित होती है। अत: समाजवाद की स्थापना के लिए सम्पत्ति के समान बंटवारा के साथ-साथ विश्व के नागरिकों को नैतिकवान बनाना भी परमावश्यक है।

हमारे देश के संविधान निर्माताओं में बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल तथा पं. जवाहर लाल नेहरू के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सभी महापुरुषों ने अपने देश में समाजवादी गणतंत्र की स्थापना का सपना देखा था अर्थात् शासन प्रजातांत्रिक तथा समाज समता मूलक हो।

समाजवादी विचाराधारा के नेताओं में उपरोक्त महापुरुषों के आलावा आचार्य नरेन्द्र देव, अच्युत पटवर्धन, जे.बी. कृपलानी, अशोक मेहता, नाथ पाई, डा. राम मनोहर लोहिया तथा लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इन सभी नेताओं ने समता मूलक समाज की स्थापना के लिए देश के उपेक्षित, पीड़ित, दलित, शोषित, अल्पसंख्यक एवं महिला समाज को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए नौकरियों में आरक्षण की मांग की थी । देश की आजादी के बाद पहले दलित एवं आदिवासियों के लिए 24 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान सरकारी नौकरियों में किया गया। बाद में 1990 आते-आते 26 प्रतिशत आरक्षण पिछड़े वर्ग को दिया गया । परन्तु 50 प्रतिशत आरक्षण देने के बाद भी देश के दलित, शोषित, उपेक्षित एवं पीड़ित जनता जहाँ की तहाँ पड़ी हुई है । इन दलितों, शोषितों एवं उपेक्षितों के सही उत्थान के लिए शिक्षण संस्थान में भी आरक्षण तथा इन्हें मनुष्योचित रहन-सहन की सुविधा मुहैया कराना भी आवश्यक है । तभी समाजवाद की कल्पना साकार हो सकती है।

आजादी के 50 वर्ष बीत जाने पर भी हमारे देश का मुसहर (एक विशेष जाति) जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ है । मैं व्यक्तिगत रूप से उस दिन के इंतजार में हूँ जिस दिन किसी मुसहर का लड़का पटना का सिविल सर्जन बने, दूसरे मुसहर का लड़का पटना का कलक्टर बने, तीसरे मुसहर का लड़का पटना का एस.पी. बने, चौथे मुसहर का लड़का पटना अभियंत्रण कॉलेज का प्राचार्य बने और पांचवें मुसहर का लड़का पटना हाइकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बने ।

हमारे समाज में एक दूसरे प्रकार की विषमता भी विद्यमान है । यह विषमता है पुरुषों और नारियों के बीच बरता जाने वाला भेद-भाव । हमारे समाज में नारी को (चाहे वह ब्राह्मण की पत्नी हो, चाहे दलित की) अभी भी उपेक्षित, पराधीन, एवं पुरुषों का गुलाम ही समझा जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि जीवन रूपी गाड़ी के पुरुष और नारी दो पहिये हैं । जिस प्रकार एक पहिये के खराब हो जाने से गाड़ी ठीक से नहीं चल सकती, उसी प्रकार समाज के एक अंग के अविकसित रहने से समाज का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। अत: समाजवाद का अर्थ केवल दलितों, पीड़ितों, शोषितों, उपेक्षितों को विकसित करना नहीं है अपितु इन शोषितों, पीड़ितों के साथ-साथ नारी का भी समुचित विकास आवश्यक है । परन्तु विडंबना यह है कि छद्म समाजवाद के समर्थक राजनेता और छद्म समाजवाद के पोषक राजनीतिक पार्टियां महिलाओं को लोकसभा तथा विधानमंडलों में 33 प्रतिशत आरक्षण देने में भी कतरा रहे हैं। अत: आजादी के इस स्वर्ण-जयंती वर्ष में यदि हम बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर तथा पं. जवाहरलाल नेहरू के समाजवाद के सपने को साकार करना चाहते हैं, तो दलितों, शोषितों, उपेक्षितों के साथ-साथ नारियों को भी समाज में सम्मानजनक स्थान देना पड़ेगा । तभी हमारा देश पुन: विद्या के क्षेत्र में विश्वगुरु, धन के क्षेत्र में सोने की चिड़िया और बल के क्षेत्र में चक्रवर्ती कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकेगा ।

संपर्क : बजरंगबली कॉलोनी, फुलवारीशरीफ, पटना

गाँधी और साम्यवादी विचारधारा

❐ विनय कुमार सिन्हा

स्वतंत्रता आंदोलन काल में गाँधीजी वामपंथियों के प्रति सदैव उदार रहे और इसके विपरीत आज आजादी के पचास वर्ष बीत चुकने के बाद भी वामपंथी पार्टियाँ उनके प्रति सहिष्णु नहीं हैं । गाँधी को राजनीतिक गालियाँ देने की होड़ में ये दक्षिणपंथियों से कहीं आगे हैं ।

करीब एक दशक के राजनीतिक इतिहास में कम्युनिस्टों ने अपने कार्यक्रमों में सामाजिक अलगाव को ही बढ़ावा दिया। भारतीय आधार-परम्परा के विपरीत इन्होंने देश की अमीरी-गरीबी को पाटने का माध्यम घृणा को ही चुना । नक्सली आंदोलन को खाद-पानी दिया ।

साम्यवादियों ने आजादी की लड़ाई मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों के सहारे लड़नी चाही, जबकि गाँधी का आंदोलन भारतीय चरित्र से मेल खाता था । साम्यवादी गांधीजी से इसलिए भी खार खाए हुए थे कि उन्होने राष्ट्रीय क्रांति का नेतृत्व किसी अन्य व्यक्ति या पार्टी को नहीं सौंपा । उन्होंने यथासंभव व्यापक राष्ट्रीय एकता के आधार पर शांतिमय साम्राज्य विरोधी जन-संघर्षों की अपनी रणनीति को भी नहीं छोड़ा । यद्यपि उन्होंने अहिंसा की अपनी सोच का प्रचार लगातार एवं जोरदार तरीके से किया । गाँधीजी साम्यवादियों को अंतःशुद्धिकरण की सलाह देते थे । उन्होंने सम्पत्ति को जब्त करने के बजाय उसके मालिकों में उसका (सम्पति का) ट्रस्टी समझने का भाव पैदा कर वह अहिंसक सत्याग्रह के जरिये वंचितों के पक्ष में इसके एक हिस्से को छोड़ देने हेतु उन्हें प्रेरित करना चाहते थे ।

महात्मा गांधी पूर्ण एवं मौलिक भारतीय राष्ट्रीय क्रांतिकारी हैं । कुछ विरले साम्यवादी ही इसे समझ सके जिसमें से लेनिन भी एक हैं । वर्ष 1920 में ही लेनिन का कहना था कि भारतीय साम्यवादियों को अपनी स्वतंत्र पहचान को कायम रखते हुए गांधीजी एवं उनके नेतृत्व में जारी आंदोलन के साथ सहयोग करना चाहिए । खासकर तब जबकि लाखों किसान इसमें भाग ले रहे हैं । पर भारतीय साम्यवादियों ने लेनिन के इस विचार को नहीं माना क्योंकि गांधीजी धार्मिक थे एवं धार्मिक मुहावरों, शब्दावली का प्रयोग करते थे, इसलिए उन्हें प्रतिक्रियावादी कहा गया ।

गांधीजी के प्रति लेनिन का यह दृष्टिकोण बहुप्रचारित भी नहीं हो पाया था कि वे चल बसे । लेनिन के राजनीतिक उत्तराधिकारी स्टालिन ने न सिर्फ गांधी संबंधी उस विचार को तिलांजलि दी वरन् भारतीय साम्यवादियों के साथ मिलकर गांधी और उनकी क्रांति के प्रति विषयम करने की साजिश रची ।

इस रणनीति के तहत कम्युनिस्टों का प्राथमिक कार्य कांग्रेस एवं उसके नेता गांधीजी का पर्दाफाश करना हो गया । तब से अब तक साम्यवादी दल एवं इसके नवांकुर भी इस मार्ग पर चल रहे हैं ।

वर्ष 1942 में कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन जिसे भारत छोड़ो आंदोलन सत्र के रूप में भी जाना जाता है, इस प्रस्ताव को साम्यवादियों ने खुले रूप में विरोध किया । इस आंदोलन को गतिहीन करने की मंशा से साम्यवादियों ने अनेक बाधाएँ डाली । इसके बावजूद गांधीजी ने साम्यवादियों के लिए प्रशंसा भरा पत्र लिखा था, उन्होंने लिखा था–"मैं जानता हूं कि आपलोग क्या हैं । आपके पास जैसा कि ये दावा करना चाहूंगा निःस्वार्थी एवं कर्मठ युवा हैं । आप लोग परिश्रमी एवं ऊर्जावान हैं। अपने कार्यकर्ताओं पर कठोर अनुशासन लागू करते हैं । मैं इन सब की कद्र करता हूँ एवं प्रशंसा करता हूँ । मात्र अपने कुछ पूर्व निर्मित विचारों के कारण मैं ऐसी शक्ति को आसानी से खोना नहीं चाहूँगा ।"

भाकपा के नेता अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के विविधत् चुने हुए प्रतिनिधि थे । चूकि उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव का विरोध किया था, इसलिए अनुशासनहीनता पर उन्हें निश्चित साम्यवाद के लिए कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया था ।

कम्युनिस्टों को पटाने के लिए गांधी का सभी शगूफा चुक गया । हालांकि डांगे और पी.सी. जोशी जैसे एक दो साम्यवादी गांधी के विचारों से सहमत थे, पर उनकी एक न चली । श्रीपद् अमृत डांगे ने 1921 में ही यह प्रस्थापित किया कि भारत में लेनिन और गाँधी की रणनीतियों को एक किया जाना चाहिए इसके लिए उन्हें प्रताड़ित भी होना पड़ा । पी.सी. जोशी भी ऐसे ही एक अन्य साम्यवादी नेता थे, जो 30 के मध्य में भाकपा एवं कांग्रेस को नजदीक लाने की कोशिश करते रहे । गांधीजी के साथ अपने पत्राचार में 1944 में (जोशी ने) उन्हें राष्ट्र के पिता के रूप में संबोधित किया ।

जो भी हो इन नीतियों का खामियाजा वामपंथियों को स्वयं उठाना पड़ रहा है एवं उसकी श्रमजीवी जनता की भलाई में उनका समानुपातिक योगदान नहीं हो सका। ये अपनी चेतना को भारतीयकरण की जगह अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया । ये मार्क्सवाद-लेनिनवाद की स्टालिनवादी विरूपता से स्वयं को अलग न कर सके और स्वयं अपने देश एवं उसके लोगों की विशिष्ट परम्पराओं एवं विशिष्ट इतिहास को समझने में गंभीर भूल कर गये ।

वहीं एक क्रांतिकारी के रूप में गांधी के हृदय में उदारता की इतनी व्यापकता थी कि वह यह मानते थे कि उनसे असहमत लोग भी उतने ही ईमानदार हैं और उस क्रांति का हिस्सा बन सकते थे, जिनके वे नेता थे ।

संपर्क : द्वारा श्री सुशील कुमार सिन्हा
साउथ बाजार समिति
पंचवटी नगर (श्रमजीवी कॉलोनी)
पटना-16

भिक्षावृत्ति : एक सामाजिक कलंक

❒ कृष्ण कुमार राय

हमारे देश में भिक्षावृत्ति का इतिहास संभवतः मानव समाज की संरचना के साथ जुड़ा हुआ है । वैदिक-काल में भी कुछ लोग दान-दक्षिणा पर आश्रित रहा करते थे, किन्तु उनका क्षेत्र आज की तरह संकुचित नहीं होता था । उस समय लोग भिक्षावृत्ति को जीविकोपार्जन का साधन नहीं बनाते थे । वह एक ऐसा काल था जब देश आध्यात्मिक दृष्टि से अपने चरमोत्कर्ष पर था । साधु-सन्तों, आध्यात्मिक व्यक्तियों, गुरुजनों, आचार्यों एवं मनीषियों का समाज में विशिष्ट स्थान होता था । लोग न केवल उनका आदर और सम्मान करते थे, बल्कि मानव समाज को उनका ऋणी मानते थे । ऐसे महापुरुष ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने की क्षमता के धनी होकर भी मानव कल्याण के लिए सत्य की खोज, नैतिक मूल्यों की रक्षा तथा ज्ञान-दान की भावना से उत्प्रेरित हो, अपनी इच्छा-शक्ति को नियन्त्रित कर, समस्त सुख-सम्पदा एवं सांसारिकता को तिलांजलि दे देते थे । इन सन्त महात्माओं, गुरुजनों एवं आचार्यों को मुक्त हस्त से दान-दक्षिणा देकर उनके उपकारों का ऋण चुकाना सभी आर्यजन अपना पुनीत कर्तव्य समझते थे । इसी दान-दक्षिणा के द्वारा ऐसे महापुरुष अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए पूर्ण तन्मयता के साथ समाज-सेवा एवं साधना में लीन रहते थे ।

उक्त परम्परा बौद्धकाल तक प्रचलित रही, किन्तु कालान्तर में इसका रूप धीरे-धीरे विकृत होने लगा । स्वार्थ-सिद्धि एवं निजी लाभ की प्रवृत्ति ने त्याग और परोपकार की भावना का स्थान लेना आरम्भ कर दिया । निःस्वार्थ सेवा की भावना पर अकर्मण्यता और आलस्य हावी होने लगा । फिर तो वह समय दूर नहीं रहा जब भिक्षावृत्ति ने इस देश में व्यवसाय का विकृत रूप धारण कर लिया जो आज भी समाज के लिए अभिशाप बनकर उसे कलंकित कर रहा है दिनो-दिन भिक्षावृत्ति की समस्या समाज के लिए एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है । फिर भी दान-दक्षिणा की प्राचीन परम्परा, मान्यता, धर्मभीरुता एवं अन्धविश्वास के साये में यह व्यवसाय पनपता और अपनी जड़ें जमाता जा रहा है । परिणामस्वरूप तथाकथित भिक्षुओं को यह पेशा अपनाने के लिए प्रोत्साहन भी मिलता है । यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हम आज भी उन्हीं रूढ़ियों और मान्यताओं में जकड़े हुए हैं जिनकी सार्थकता कब की समाप्त हो चुकी है । शारीरिक दृष्टि से असमर्थ एवं अपंग व्यक्तियों को सहायतार्थ कुछ देने का तो औचित्य समझ में आता है, किन्तु ऐसे लोगों को दान देना जो शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ और समर्थ हैं, किसी भी दशा में धर्म-संगत नहीं कहा जा सकता । इससे समाज के एक वर्ग में अनुत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है जो उन्हें अकर्मण्य बना देती है ।

भारत सरकार तथा कतिपय राज्य सरकारों ने इस सामाजिक कलंक को मिटाने के लिए कुछ कदम उठाये हैं । भिक्षुओं का देशव्यापी सर्वेक्षण कराया गया जिससे पता चला कि इस देश में विभिन्न आयु-वर्ग के स्त्री-पुरुषों एवं बाल भिक्षुओं की संख्या पचास लाख से भी अधिक है । भिक्षाटन के अतिरिक्त इन व्यक्तियों के जीविकोपार्जन का अन्य कोई साधन अथवा आधार नहीं । जिस देश की इतनी विशाल जनसंख्या अपनी जीविका के लिए केवल दान-दक्षिणा और भिक्षा पर आश्रित हो. और जिन्होंने भिक्षावृत्ति को ही अपना व्यवसाय बना रखा हो, वहां की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़े बिना कैसे रह सकता है ? इस वर्ग के बहुसंख्यक व्यक्ति, जो देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, इस समय देश और समाज पर अनावश्यक बोझ बनकर जी रहे हैं । बिना किसी कला-कौशल या परिश्रम के जीविका कमाने की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण दिनों-दिन देश में भिक्षुओं की संख्या घटने के बजाय बढ़ती जा रही है ।

वैज्ञानिक विश्लेषणों से यह तथ्य प्रकाश में आया है कि शारीरिक अथवा मानसिक अक्षमता का शिकार होने के अतिरिक्त अन्य परिस्थिति-जन्य कारण भी हैं जो लोगों को भिक्षाटन की बैसाखी का सहारा लेने को विवश करते हैं । गरीबी, कमरतोड़ महंगाई, उद्योगों के मशीनीकरण और गलत शिक्षानीति के कारण बढ़ती बेरोजगारी, पारिवारिक कलह, महिलाओं का उत्पीड़न और उनका परित्याग, अनाथ बालक-बालिकाएं, गम्भीर रुग्णता का शिकार होना, जैसी विभिन्न अवस्थाएं एवं समस्याएं मुख्य रूप से इस दुर्वृत्ति का कारण बनती हैं । इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे वर्ग भी हैं जो सैकड़ों वर्षों से भिक्षावृत्ति को ही अपनी जीविका का आधार बनाते चले आ रहे हैं । कुछ बालक अपनी बुरी लतों या सस्ती मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भिक्षावृत्ति का सहारा लेते देखे जाते हैं । कुछ अकर्मण्य एवं आलसी प्रकृति के लोग यह देखकर इस दुर्वृत्ति की तरफ आकृष्ट होते हैं कि भिक्षुक वर्ग बिना किसी कला-कौशल या शारीरिक श्रम के खासी अच्छी कमायी कर लेता है । कुछ ऐसी जन-जातियां भी हैं जो जन्मजात भिखारी होती हैं । शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ एवं समर्थ होकर भी परिश्रम करके जीविकोपार्जन करने की लेशमात्र भी उत्कण्ठा इन जन-जातियों में नहीं होती । कोई तो बेसुरी तान अलापते फिरते हैं और कोई वाद्य-यंत्र बजा-बजाकर लोगों का ध्यान आकृष्ट करते तथा भिक्षा मांगते हैं । कुछ बनावटी विलाप और घड़ियाली आंसुओं से लोगों का हृदय द्रवित कर अपना उल्लू सीधा करने की चेष्टा करते हैं ।

किसी भी देश में व्यवसाय के रूप में भिक्षावृत्ति अपनाने की दुर्वृत्ति न केवल निन्दनीय प्रवृत्ति का द्योतक है बल्कि उस देश के पिछड़ेपन की भी निशानी है । अब तो कुछ अवांछनीय तत्त्व भी संगठित गिरोह बनाकर भिक्षाटन के बहाने लूट-खसोट के लिए निकलने लगे हैं । ऐसे ही लोग प्रायः अबोध बच्चों का

अपहरण कर उन्हें अपंग बना देते हैं और कहीं दूर-दराज के इलाके में ले जाकर उनसे भिक्षाटन या अन्य अपराध कर्म कराते हैं। भिक्षावृत्ति की आड़ में इधर ठगी का धन्धा भी जोरों से पनपने लगा है। भिक्षुक वेशधारी ऐसे खतरनाक वर्गों द्वारा इस प्रकार के अमानुषिक कार्यों एवं आपराधिक कृत्यों का सहारा लेना समाज के लिए भयंकर अभिशाप बनता जा रहा है।

भिक्षुओं की श्रेणी में केवल ऐसे ही लोग नहीं आते जो दूसरों के सामने हाथ पसारकर भिक्षाटन के लिए दर-दर घूमते-फिरते रहते हैं। उनके और भी अनेक रूप होते हैं। भिक्षाटन के निमित्त वे विभिन्न तौर-तरीके अपनाते रहते हैं। कुछ जटाधारी साधुओं के वेश में घूम-घूम कर लोगों की सहानुभूति अर्जित करते हैं। कुछ मदारियों या कलाबाजों के रूप में बस्तियों और गावों की खाक छानते फिरते हैं तो कुछ तिलक-चंदन लगाये अपने को ज्योतिषी या तान्त्रिक बताकर लोगों को मूर्ख बनाते हैं। कुछ धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यकर्ता बनकर लोगों को भ्रमित करते हैं तो कुछ अपने बिलखते-बिलबिलाते नवजात शिशुओं और छोटे-छोटे बच्चों को लोगों के समक्ष, विशेषकर महिलाओं के समक्ष प्रदर्शित कर उनके कोमल हृदय को द्रवित करने तथा उनकी सहानुभूति अर्जित करने की कोशिश करते हैं। कुछ व्यक्ति पशु-पक्षियों, सर्पों और यहाँ तक कि मानव-कपालों के प्रदर्शन को अपने भिक्षाटन का आधार बनाते हैं और कुछ व्यक्ति बहुरूपियों के वेश में आरती के थाल सजाये, तथाकथित गंगा-जल, तुलसी दल अथवा अन्य प्रसाद सामग्री प्रस्तुत कर धर्म-भीरू लोगों को ठगते फिरते हैं। ट्रेनों में प्रायः आकर्षक नाक-नक्श वाली युवतियाँ एक-दो या तीन के समूह में गा-गाकर भिक्षा मांगती फिरती हैं। कभी-कभी उन्हें अनैतिक कार्यों में लिप्त अथवा चोरी या गिरहकटी की वारदातें करते भी देखा-सुना जाता है। इसी प्रकार कुछ जवान लड़कियों को कागज पर कोई मार्मिक अपील लिखवाकर घर-घर घूमते या ऑफिसों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में जाकर और अंग्रेजी के कुछ घिसे-पिटे अटपटे शब्द बोलकर लोगों को प्रभावित करते तथा आर्थिक सहायता की मांग करते देखा जा सकता है। इस प्रकार की युवतियाँ प्रायः अनैतिक कार्यों का भी माध्यम बनती हैं जब पुरुष वर्ग उन्हें अपनी कुदृष्टि और हविस का शिकार बनाने का प्रयास करता है। इस तरह अलग-अलग ढंग और रीति से अपना उल्लू सीधा करने वाले ढोंगी लोग वास्तव में समाज के लिए कलंक हैं, उसपर बोझ बनकर जीते हैं, उन्हें ठगते और लूटते हैं अथवा अनैतिक कृत्यों की ओर उन्मुख करते हैं। उन्हें दान-दक्षिणा देकर प्रोत्साहित करने का भला क्या औचित्य हो सकता है?

भिक्षावृत्ति जैसी दुर्वृत्ति के उन्मूलनार्थ समाज के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन की नितान्त आवश्यकता है। इस दिशा में उन्हें समुचित रूप से शिक्षित किया जाना जरूरी है ताकि इस समस्या को वे आज के परिप्रेक्ष्य में बदली हुई नजरों से देख सकें। ज्यों-ज्यों भिक्षुओं के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन आवेगा, इस गम्भीर समस्या का धीरे-धीरे स्वतः समाधान होने लगेगा। समाज को शिक्षित करने का यह कार्य शासन की जिम्मेदारी तो है ही, समाजसेवी संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी इस दिशा में पहल करनी होगी। साथ ही समाज-विज्ञान के छात्र-छात्राओं और देश की युवाशक्ति को भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

विगत कुछ वर्षों में शासन द्वारा भिक्षावृत्ति के उन्मूलनार्थ कुछ कदम उठाये गये हैं। कतिपय राज्य सरकारों द्वारा भिक्षावृत्ति उन्मूलन अधिनियम बनाकर इसे दण्डनीय अपराध घोषित कर दिया गया है। कुछ अन्य राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों में भी भिक्षावृत्ति पर रोक लगाने के लिए विधेयक लाये जाने की चर्चा है। परन्तु इस प्रकार के सामाजिक अधिनियमों का वास्तविक कार्यान्वयन पूर्ण जन-सहयोग के बिना बड़ा कठिन होता है। कुछ राज्यों में भिक्षुओं के लिए आवासीय कार्यशालाएं भी खोलकर अभिनव प्रयोग किया गया है। परन्तु इन कार्यशालाओं में रहने वाले तथा अपनी शारीरिक क्षमतानुसार विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले संवासियों की संख्या, भिक्षावृत्ति से जुड़े लोगों की वास्तविक संख्या की तुलना में नगण्य कही जा सकती है। वाराणसी, प्रयाग, अयोध्या, हरिद्वार, पुरी जैसे तीर्थस्थलों में इनके आकार में विशेष रूप से विस्तार की आवश्यकता है क्योंकि भिक्षुओं की सर्वाधिक संख्या ऐसे ही नगरों में है। जो भिक्षुक वास्तव में अपंग और अपाहिज हैं और जिनसे किसी प्रकार के शारीरिक श्रम की अपेक्षा नहीं की जा सकती, उनके लिए उपयुक्त शरण-स्थल निर्मित कर उनके भरण-पोषण का दायित्व सरकार तथा समाज-सेवी संस्थाओं को वहन करना चाहिए। जो स्वस्थ तथा सक्षम हैं उन्हें कार्यशालाओं में रखकर यथोचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे भिक्षावृत्ति जैसी दुर्वृत्ति से विरत रहकर अपनी रोजी-रोटी स्वयं कमाने के योग्य बन सकें। प्रायः यह भी देखने को मिलता है कि विदेशी पर्यटक यहाँ के भिक्षुओं के छायाचित्र खींचकर अपने साथ विदेशों में ले जाते हैं और वहाँ प्रदर्शित अथवा प्रकाशित कर इस देश की छवि को धूमिल करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के छाया-चित्रों के खींचने पर भी प्रभावी ढंग से प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।

आज देश को इक्कीसवीं सदी के कम्प्यूटर तथा रोबोट जैसे अत्याधुनिक वैज्ञानिक युग में ले जाने की चर्चा ही नहीं है बल्कि इस दिशा में ठोस प्रयास भी आरम्भ किये जा चुके हैं। शासन द्वारा अनेक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन पर विशेष बल दिया जाने लगा है। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में भी वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। ऐसी स्थिति में क्या यह आवश्यक नहीं है कि बीसवीं सदी के अन्त तक देश से भिक्षावृत्ति के कलंक का पूर्ण उन्मूलन भी उक्त लक्ष्य में सम्मिलित कर तत्काल इस दिशा में ठोस कार्यवाही आरम्भ कर दी जाय? शासन के साथ ही समाजसेवी संस्थाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा समाज-विज्ञान के शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं का भी दायित्व है कि इस सामाजिक महाकलंक को मिटाने के लिए एकजुट होकर सामने आवें।

संपर्क : एस. 2/51-ए, अर्दली बाजार
(अधिकारी हॉस्टल के पास)
वाराणसी (उ.प्र.)-221002

सुभद्रा जी एवं उनकी कविता : एक परिदृश्यात्मक विवेचन

❐ डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान मुख्यत: कवयित्री थी । उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियां विशेष रूप से महत्व की हैं : पहली तो राष्ट्रीय भावना की और दूसरी घरेलू जीवन की । आपने सभी स्थलों पर प्रकृति को समेटा है, और अपनी काव्यप्रतिभा के बल पर साधारण शैली में सहज एवं सदा अपनी रोज की बोलचाल की भाषा में नारी हृदय की कोमलता और मार्मिक भावना को नितान्त स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करने की कुशलता का परिचय दिया है । विशेषत: परिदृश्यात्मक विवेचन में अच्छी कारीगरी कोमलता देखी जा सकती है ।

मनुष्य मात्र के स्वभाव में भी एक चिरंतन सत्य है एवं कौतूहल है जो प्रकृति में है । ज्ञान और कल्पना दोनों का एकमात्र लक्ष्य उस कौतूहलवृत्ति को ही संतुष्ट करना है । अनन्तकाल के सभी विज्ञ जीवन की सभी परिस्थितियों का वर्णन करते चले आ रहे हैं । ज्ञान रहस्य-सागर से कितने ही तत्व खोज निकाले । कल्पना के जीवन के अनन्त नभो मण्डल में विहारकर मनुष्य को भाव के मायालोक में प्रविष्ट कराया । परन्तु वह कौतूहल अभी तक बना हुआ है । न तो ज्ञान की कोई सीमा है, और न ही विज्ञापन का कोई अन्त है । कल्पना असीम है और कौतूहल भी अनन्त है । इसी प्रकार हम लोगों का जीवन प्रवाह भी अनन्त है । बाकी रह जाती है उत्साह जगाने की शक्ति, उत्साह जगाने की शक्ति-क्षमता । तभी तो हमारी जीवन कथा, जीवन व्यथा, आस्था का अन्त नहीं होता है । कौन किस तरह किसे अपनी, कल्पनात्मक परिदृश्यों से समझने-समझाने का प्रयत्न करता है और कितनी हद तक सफल होता है, उसकी कला पर निर्भर करता है । एक साधारण सी बात कि मर्द बच्चों की रोदन को अच्छा नहीं मानता, अच्छा नहीं पाता, उसे नहीं भाता, वह चिल्लाता है झल्लाता है, हो हल्ला मचाता है, पर मां उसे आत्मा-परमात्मा की संबंध डोरी, अन्तरात्मा की पुकार मां-बच्चे का अंतरंग संबंध मानकर सुहावना, सुखंकर मानती है, अमृत तुल्य मानती है, और यह सही भी है कि बच्चा अपने मन का संदेश कैसे व्यक्त करे, अपने मन की भावना कैसे व्यक्त करे । यही तो उसका सहज माध्यम है । बाकी रह जाती है हमारी समझदारी जिसे कवयित्री ने "इसका रोना" कविता में करुणा-जनक दृष्टि कहा है जो आत्मीयता के सोते भाव को जगाती है । इसी तरह अनेक स्थानों-भावों-कल्पनाओं को कवयित्री ने परिदृश्यात्मक वर्ण द्वारा व्यक्त करने की कोशिश की है ।

शिशु सुभद्रा जब उनकी उम्र 9 साल की थी तभी यह "नीम" नामक कविता लिखी जो **'मर्यादा'** जून-जुलाई 1913 में प्रकाशित हुई थी ।

"सब दुख हरन सुखकर परम हे नीम ! जब देखूँ तुझे ।
तुहि, जानकर अति लाभंकारी हर्ष होता है मुझे ॥
ये लहलही पत्तियां हरी शीतल पवन बरसा रही ।
निज मन्द मीठी वायु से सब जीव को हरषा रही ॥
हे नीम ! यद्यपि तू कड़ू नहि स्व मात्र मीठास है ।

जिस गुड़िया को यह प्यारी "नीम" की प्राकृतिक दृश्यात्मक कविता इतनी छोटी उम्र में ही प्यारी थी वह भला आगे बढ़कर ऐसे-ऐसे दृश्यों का अवलोकन- आकलन क्यों न की होगी जो पाठकों के मन में एक गहरी छाप छोड़ जाने में सक्षम और पैनी होगी ।

कभी आत्मग्लानि आत्म सान्त्वना से नहीं खत्म होतीं । कभी भी किसी की अभिलाषायें पूरी नहीं होती । किन्तु कभी लालसा मन में आ भी जाये एवं वे यदि पूरी न हो तो हृदय को शालती है । तब मानव सोचता है कि वह अभागा है, उसकी साध कभी पूरी नहीं होती । कवयित्री अपने प्रखर प्रेम पर कुठाराघात होते देख कहती है :

मुझे न दुख है, जो होता हो, उसको हो जाने दो ।
निठुर निराशा के झोंको को मनमानी कर जाने दो ॥

भाई नहीं है घर में, राखी सजी है किन्तु भाई की कलाई नहीं है, भादों महीने में आकाश में घटा छाई नहीं है, इन बातों की चिन्ता, निराशा, पछतावा कवयित्री के मन में नहीं है, इन बातों से खुशी तो नहीं है, किन्तु रुलाई भी नहीं है । क्योंकि :

"मेरा बन्धु, मां की पुकार को सुनकर,
तैयार हो जेलखाने गया है ।
छीनी गई मां की स्वाधीनता को,
वह जालिम के घर से लाने गया है ॥"

ऐसी स्वाधीनता की भावना कवयित्री के अन्तस्तल में सदा जलती रही है, जिसे उन्होंने बड़े सरल शब्दों में ध्वनित किया है ।

"जलियां वाले बाग में बसन्त" कविता एक प्राकृतिक सुन्दरता को अपनी भावनाओं के साथ तादात्म बिठाकर वह एक सम्बोधन करती गा उठती है जिसमें अंग्रेजों द्वारा किए गए क्रूर हत्या और निष्ठुर प्रहार से प्रताड़ित जन-जन के साथ प्रकृति को भी साथ देने, सहानुभूति जतलाने के लिए कहती है :

यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है ।
आओ प्रिय ऋतुराज, किन्तु धीरे से आना ॥
कुछ कलियां अधखिली यहां इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ॥
तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहां गिरा देना तुम जाकर ॥

"वीरों का कैसा हो वसन्त" कविता में कवयित्री अतीत भारत की अतीत गौरव गाथाओं का स्मरण करती हुई वीरों का आह्वान करती है । लंका, कुरुक्षेत्र, हल्दीघाटी, सिंगढ़, राणाप्रताप, भूषण, कविचन्द के माध्यम से कवयित्री वीरों को उत्तेजित करने की कोशिश करती है और कहती हैं कि वीरों का वसन्त-रंग और रण में नगाड़े-ढोल मारू बजते हैं वही उसकी कोकिल गान है, फूली सरसों उसके रंग हैं, यही उसका वसन्त है । अतीत के अनुभव से अनुप्राणित होना ही उनका वास्तव वसन्त है ।

अपनी मन की वेदना को प्रकट करती हुई वे गा उठती हैं :

"दिन में प्रचंड रवि किरणें मुझको शीतल कर जातीं ।
पर मधुर ज्योत्सना तेरी है शशि है मुझे जलातीं ॥

इस प्रकार पग-पग में कवयित्री चौहान की कविताओं की पंक्तियों में प्राकृतिक परिदृश्यात्मक चित्रण अति सहज, सबल, मनोहर, कोमल कांत पदावलियों से मालिकायें गूंथती बुनती हैं । कवयित्री की प्रारंभिक रचना से हमने अपनी विवेचना प्रारंभ की थी अन्त भी उनकी अंतिम रचना से करना चाहेंगे । उनकी अपनी अंतिम कविता है–प्रभु तुम मेरे मन की जानो" जो स्वतंत्रता आन्दोलन की भावनाओं से ओतप्रोत है । "छूत-अछूत" भावनाओं के विरुद्ध झावर एवं झावर मंदिर में व्याप्त भावनाओं के विरुद्ध विद्रोही ज्वाला से धधकती है तो गा उठती है :

"तुम सबके भगवान, कहां
मंदिर में भेदभाव कैसे ?
कह देता है किन्तु पुजारी
यह तेरा भगवान नहीं है ।
दूर कहीं मंदिर अछूत का
और दूर भगवान कहीं है ॥

मन में स्वत: एक हूक-सा उठता प्रश्न बुलबुलाता है कि क्या आज कवयित्री की आशंकायें -आशायें पूरी हुई है ? अभी भी तनाव साम्प्रदायिक झगड़े, मदान्धता, आक्रोश और बदले की भावनाओं से पुरानी गलित धारणा बलवती हुई आज भी आजीवित हैं ।

प्रकृति अपनी रंग बदलती है, अपनी ढंग बदलती है-समय और काल के परिप्रेक्ष्य में जो हमें सीख देती है कि तुम भी उन्हीं प्राकृतिक नियमों से बंधे हो, हे मानव ! तुम अपने पर गर्व न करो, खर्च होना प्रकृति का नियम है । यह सृष्टि का प्रारंभ है और अन्त ही प्रारंभ है और प्रारंभ ही अन्त है ।

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा उकेरी गई परिदृश्यात्मक चित्रण आज भी उतनी ही प्रासंगिक और शिक्षणीय हैं, अवलोकनीय हैं जितनी तब थीं ।

संपर्क : विद्या मंदिर-खैरपाली
पो./व्हाया-भुक्ता, जिला-बरगड़ (उड़ीसा-768045)

आजादी के 50 साल : उपलब्धियाँ एक नजर में

❒ संकलन : संजय कुमार मंगलम्

भारतीय सेना

- 15 जनवरी 1949 को स्वंतत्र भारत की सेना के प्रथम अध्यक्ष बने थे जनरल के. एम. करियप्पा । (बाद में फील्ड मार्शल)
- भारतीय थल सेना के पहले अध्यक्ष बने थे जनरल एस. एफ. एच. जे.मानेकशा । उन्होने फील्ड मार्शल रैंक हासिल किया था ।
- पहला परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा को नवम्बर 1947 में (मरणोपरान्त) दिया गया था ।
- दुनिया का सबसे ऊँचा हवाई क्षेत्र लद्दाख की ऊँची चोटियों पर "थोइसे" में बनाया गया है ।
- भारतीय सेना की मोटर साईकिल सवारों द्वारा 11 रॉयल एनफील्ड मोटर साईकिल पर 133 सवारों को मिलाकर मानव पिरामिड बनाए जाने का रिकार्ड गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

नौ सेना

❒ नई नौसेना अकादमी की स्थापना "ऐझिमाला" केरल में की जायेगी।

❒ स्वदेशीय निर्मित प्रथम पनडुब्बी आई. एन. एस. "शल्की"का जलावतरण 7 फरवरी 92 को किया गया । यह मझगाँव गोदी द्वारा निर्मित था। इस कारण भारत विश्व के गिने-चुने देश में शामिल हो गया ।

❒ दूसरी पनडुब्बी आई. एन. एस. "शंकुल" का जलावतरण 28 मई 1994 को हुआ ।

❒ अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में एक तैरती गोदी उपलब्ध है, जो जहाजों को सीमित मरम्मत की सुविधा प्रदान करती है ।

वायु सेना

★ तीनों सेनाओं में सबसे बाद 1932 में इसकी स्थापना हुई। यह दुनिया में चौथी सबसे बडी सेना है।

★ 1954 में एअर मार्शल सुब्रतो मुखर्जी पहले भारतीय कमाण्डर-इन-चीफ और वायु सेनाध्यक्ष बने।

★ फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों प्रथम लड़ाकू पायलट थे, जिन्होंने 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान "परमवीर चक्र" प्राप्त किया।

★ आज लड़ाकू विमानों में वायु सेना के पास मिग-21,23,25,27,29 से लेकर जगुआर, मिराज-2000 और हाल ही (1997) में रूस से प्राप्त एस. यू. - 30 सुखोई तक मौजूद है।

★ स्क्वाड्रन लीडर "राकेश शर्मा " प्रथम अन्तरिक्ष यात्री बने जो अप्रैल 1984 में सोवियत अंतरिक्ष यान (सोयुज टी-10) से अंतरिक्ष में पहुँचे।

★ दिसम्बर 1995 में फ्लाइट कैडेट चेरिल दत्ता और फ्लाइट कैडेट सिमरन सोढ़ी ने वायु सेना का चेतक हेलिकॉप्टर को उड़ाकर प्रथम महिला चालक दल होने का गौरव प्राप्त किया।

★ स्क्वाड्रन लीडर संजय थापर ने पहली बार "उत्तरी ध्रुव " पर भारतीय झण्डा फहराने का गौरव प्राप्त किया ।

★ भारतीय वायुसेना का आदर्श है, "नमं स्पर्श दीप्तम् "

पर्यटन

★ 1951 में पर्यटकों का आगमन 16,829 था जो 1996 में 2 लाख 10 हजार की संख्या को पार कर गया ।

★ 19 राज्य सरकारों ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया है ।

★ पर्यटन विशुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला दूसरा सबसे बडा क्षेत्र और सकल विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला तीसरा सबसे बडा क्षेत्र है ।

★ पर्यटक क्षेत्र में 85 लाख प्रत्यक्ष रोजगार जबकि 2 करोड़ लोगों को परोक्ष रूप से रोजगार के अवसर मिलते हैं ।

दूरदर्शन

▼ पहला टेलिविजन केन्द्र प्रायोगिक तौर पर सितम्बर 1959 में शुरू हुआ । 500 वॉट ट्राँसमीटर की प्रसारण परिधि 24 किलोमीटर थी । यह केन्द्र दिल्ली में था ।

▼ आज दूरदर्शन 834 प्रसारण केन्द्रों तथा 41 कार्यक्रम निर्माण केन्द्रों की सहायता से 19 चैनलों पर अपने मुख्यालय तथा क्षेत्रीय ईकाइयों से प्रतिदिन 28 भाषाओं में 75 बुलेटिनों का प्रसारण करता है ।

▼ यह संसार का सबसे बड़ा भू-क्षैतिज प्रसारण नेटवर्को में से एक है । प्रति सप्ताह 1350 घण्टे के प्रसारण के जरिये यह सारे संसार में लगभग 40 करोड़ लोगों तक पहुँचता है ।

आकाशवाणी

✱ ब्रॉडकास्टिंग सर्विस की शुरूआत 1924 में मद्रास प्रेसीडेन्सी रेडियो क्लब के प्रयासों से हुयी ।

✱ इण्डिया स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस को 1936 में ऑल इण्डिया रेडियो में परिवर्तित कर दिया गया ।

✱ ऑल इण्डिया रेडियो का 1950 में नया नाम "आकाशवाणी" रखा गया । इस समय सिर्फ 6 केन्द्र थे ।

✱ आकाशवाणी के देश में 187 केन्द्र कार्यरत हैं साथ ही साथ 297 ट्राँसमीटर हैं । इनमें से 149 मीडियम वेव, 52 शार्ट वेव और 96 एफ0 एम0 ट्राँसमीटर हैं ।

✱ आकाशवाणी से विदेश सेवा प्रसारण के अन्तर्गत 16 विदेशी और 7 भारतीय भाषाओं में 75 घण्टे का प्रसारण होता है । शार्ट वेव पर अमेरिका महाद्वीप को छोड़कर अन्य सारे देशों का प्रसारण होता हैं ।

सड़क परिवहन

❒ विश्व में अमेरिका के बाद सड़कों का सबसे बडा जाल भारत में ही है, जिसकी कुल लम्बाई 30 लाख किलोमीटर है । देश में राष्ट्रीय राजमार्गो की लम्बाई लगभग 35 हजार किलोमीटर है। इसमें पिछले 50 वर्षो में 15 हजार किलोमीटर से अधिक सड़कों को जोड़ा गया हैं। 65% से अधिक वस्तुओं तथा 80% यात्रियों की ढुलाई राष्ट्रीय राजमार्गों से की जाती है। 1950-51 में मोटर गाडियों की कुल संख्या 3 लाख थी, जो 1994-95 तक 3 करोड़ की संख्या पार कर गयी है। इस दौरान ढोने वाले वाहन 82 हजार से बढ़कर 11 लाख के आस-पास हो गये ।

स्वास्थ एवं परिवार कल्याण

✳ पिछले 50 वर्षों के दौरान जन्म दर 41.7 से घटकर 28.7 प्रति हजार हो गयी है। मृत्यु-दर 22.8 से घटकर 9.3 प्रति हजार हो गयी है। शिशु मृत्यु दर 146 प्रति हजार से घटकर 74 प्रति हजार हो गयी है। औसत उम्र प्रत्येक भारतीय की 62 वर्ष तक हो गयी है। परिवार नियोजन के तरीके अपनाकर 14 करोड़ लोगों के जन्म को रोका गया ।

कृषि

✡ स्वतंत्रता प्राप्ति के समय अनाज का उत्पादन 5 करोड़ टन था, जो हरित क्रान्ति के फलस्वरूप 1996-97 के नवीनतम अनुमान के अनुसार 19 करोड़ 81 लाख 70 हजार टन उत्पादन हुआ। ऑपरेशन फ्लड(श्वेत क्राँति) के तहत दूध का उत्पादन आजादी के समय 2 लाख टन था जो वर्तमान में लगभग 4 गुणा हो गया है। नीली क्राँति के तहत अन्तर्देशीय मछली पालन में अद्‌भुत वृद्धि दर्ज की गयी,उत्पादन करीब 50 लाख टन रहा। सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का हिस्सा 33% है । कच्चा रेशम उत्पादन में कर्नाटक प्रथम है। लाल मिर्च में आन्ध्र प्रदेश प्रथम है। गेहूँ में उत्तर प्रदेश प्रथम है जबकि प्रति हेक्टेयर उत्पादन में पंजाब । मूंगफली में गुजरात प्रथम है। चाय में असम एवं कॉफी में कर्नाटक और मसाला एवं नारियल में केरल प्रथम है।

मराठी भाषा के शीर्षस्थ कवि नारायण सुर्वे को सम्मान

फुटपाथ के लावारिस को 'पद्मभूषण'

'अगर कुछ ढूंढ़ना है, पाना है तो लोगों के बीच रहो, ग्रंथों में कुछ ढूंढ़ने पर नहीं मिलेगा ।'-सुर्वे

रा. वि. प्रतिनिधि, मुम्बई

विश्वास नहीं होता पर यह सच्चाई है कि एक समय मुम्बई के फुटपाथ पर घूमते जिस लावारिस बच्चे को भारत सरकार ने विगत 26 जनवरी, 98 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर 'पद्मभूषण' सम्मान से सम्मानित करने के लिए चयन किया वह कोई और नहीं मराठी भाषा के शीर्षस्थ कवि श्री नारायण सुर्वे हैं जिनका कहना है **'यह सम्मान सिर्फ मेरा नहीं या मेरी कविताओं का नहीं बल्कि मराठी भाषा और साठ के दशक के पश्चात् लिखी गई कविताओं का सम्मान है ।'**

मात्र चौथी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने वाले नारायण सुर्वे आज के और उनके समय के साहित्य के बीच कोई अंतर नहीं मानते, जो अंतर है भी उसे समय की मांग मानते हैं। साहित्य पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभाव को क्षणिक और सीमित मानने वाले कविवर सुर्वे आज के साहित्यकारों और पुराने साहित्यकारों के बीच अभिव्यक्ति और सोच के अंतर को स्वाभाविक कहते हैं । साथ ही वे यह भी कहते हैं कि आज के साहित्यकारों को पुराने के कंधों का सहारा लेकर ही आगे बढ़ना है, वरना वे दो कदम भी नहीं चल सकते ।

गंगाराम सुर्वे नामक एक मिल मजदूर ने 12 वर्ष की उम्र तक फुटपाथ के इस लावारिस बच्चे को नारायण सुर्वे नाम देकर पालन पोषण किया और उसे 4 थी कक्षा तक पढ़ाया । पर उसके बाद गंगाराम ने दयनीय आर्थिक हालत तथा परिस्थिति से मजबूर होकर कुछ रुपये देकर नारायण सुर्वे को पुनः अनाथ कर दिया । फिर समाचार पत्र बेचकर, फुटपाथों की खाक छानकर तथा छोटे-मोटे काम और मजदूरी कर अपना जीवन यापन करने वाले नारायण सुर्वे ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन को काफी करीब से देखा और तभी से उनकी सोच में बदलाव आया तथा तभी से उनका कहानी लेखन प्रारम्भ हुआ । अपने आपको आरम्भ में अखबारिया लेखक बताने वाले नारायण सुर्वे का एक गाना 'डोंगरी शेतमाझु' काफी मशहूर हुआ और वहीं से उन्हें आगे लिखने का एक रास्ता मिला । सुर्वे स्वयं कहते हैं मैंने लिखा कम लेकिन (बाबाबी) हो-हल्ला ज्यादा हुआ । इसी तरह जीवन के दर्शन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए वे कहते हैं **'अगर कुछ ढूंढना है, पाना है तो लोगो के बीच रहो । ग्रन्थों में कुछ ढूंढ़ने पर नहीं मिलेगा ।'** इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों पर करारा प्रहार किया इनकी कविताएं 'मनीआर्डर' एवं 'तूने ऐसा क्यों किया' मर्म-स्पर्शी हैं । लोक सभा के चुनाव पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुऐ मराठी कवि नारायण सुर्वे का कहना है कि स्वतन्त्रता के बाद 1952 में प्रथम आम चुनाव में खड़े उम्मीदवारों पर जनता का अटूट विश्वास था । यही कारण है कि उसमें 93 उम्मीदवार किसी प्रतिरोध के बिना चुनाव जीतकर आए थे । लोगों ने उनके काम की कद्र की । उस समय पूरा माहौल अभीभूत था, देश के लिए कुछ करने की भावना से । पर तब और अब में काफी फर्क आ गया है । आज का पूरा राजनीतिक परिदृश्य युवा, ट्रेड, सामाजिक, कम्युनिस्ट, समाजवादी अभियानों में विभाजित हो गया है । राजनीति में धर्म और जातिवाद के प्रवेश से समाजवाद का सपना बिखर गया है । राजनेताओं का स्वार्थ बढ़ गया है, राष्ट्रीय स्रोत टूट गया है, आतंकवादी तथा विदेशी शक्तियाँ बढ़ गई हैं और कुल मिलाकर सभी पक्षों में विश्वसनीयता तथा लोगों का भरोसा खो दिया है ।

नारायण सुर्वे का मत है कि आज लोगों की मानसिक स्थिति डांवाडोल हो रही है । परिणामस्वरूप यह डर लगा रहता है कि क्या देश अराजकता की कगार पर खड़ा है ? पहले, 'यह मेरा देश' यह सोच सबको जोड़े रखती थी । अब यह बात स्वयं तक आकर रुक गई है । आज आम आदमी की स्थिति तो बदतर है, मंहगाई, किल्लत ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा, तिसपर नवऔद्योगिक नीति ने ऋण देने वाले बाहरी देशों को यहाँ आकर पनपने हेतु खुली छूट दे रखी है । स्थिति यदि यही रही तो देश को गिरवी रखने की नौबत आएगी । पर इतना कुछ होने के बाद भी आशावादी नारायण सुर्वे को आम जनता पर भरोसा है कि वह जो कुछ करेगी, सही करेगी ।

इस समय नारायण सुर्वे 'मुम्बई की मराठी कवियों ने कैसे देखा' विषय पर लिखी गई कविता श्रमाची और 80 के दशक के बाद महिला कवयित्री की लिखी गई कविताओं पर नई कविताओं का संपादन कर रहे हैं । इस प्रकार देखा जाय तो नारायण सुर्वे ने अपनी रचनाओं के द्वारा न केवल अपने देश व समाज की अस्मिता को जगाया बल्कि मराठी भाषा अभियान को एक अंजाम दिया । मराठी के हिमालय कविवर सुर्वे के अतुलनीय व्यक्तित्व से हिन्दी साहित्यकार को भी एक सबक लेना समय का तकाजा है । मराठी के इस शीर्षस्थ कवि को रा.वि. पत्रिका की ओर से इनके दीर्घायु जीवन की कामना की जाती है तथा पद्मभूषण से सम्मानित होने के उपलक्ष्य में इन्हें रा. वि. पत्रिका-परिवार की ओर से हार्दिक बधाई सम्प्रेषित है ।

-प्यासा

भारत सरकार की एक योजना के तहत भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग के वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी तथा इस पत्रिका के प्रधान संपादक के हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान तथा जापान की हाइकु विधा पर उनकी कविताओं के काव्य-संग्रह के प्रकाशन हेतु बिहार के महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-1, पटना श्री नन्दलाल कवि श्री सिद्धेश्वर को प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में दस हजार रुपये का चेक प्रदान करते हुए ।

क्या साहित्यकार जाफरी के जीवन से सीखेंगे ?

उर्दू भाषा के साहित्यकार अली सरदार जाफरी

विवेक

मार्क्स के विचारों से प्रभावित उर्दू भाषा के मशहूर शायर सरदार जाफरी भारतीय साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं । भारत सरकार के द्वारा वर्ष 1997 के भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित सरदार जाफरी अपने विद्यार्थी जीवन से ही सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक आन्दोलनों से जुड़े रहे । मानव समाज की स्वाधीनता और व्यक्ति के स्वाभिमान की लड़ाई वह लड़ते रहे । श्री जाफरी साहित्य जगत् के एक ऐसे हस्ताक्षर हैं जिसने अपनी लेखनी को मनुष्य जीवन की बेहतरी के लिए एक तलवार के रूप में इस्तेमाल किया । आखिर तभी तो 84 वर्ष की उम्र में भी वह समाज में अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध जूझ रहे हैं ।

विद्याधर दाते को 'दी टाइम्स ऑफ' इन्डिया' के लिए दिए गए एक भेंट वार्ता में शायरी, विद्वता एवं धर्मनिरपेक्षता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले तथ्यों के बारे में पूछे जाने पर सरदार जाफरी ने कहा कि जब जनवादी आन्दोलन सारे संसार में मजबूत था, वे बड़े हुए और भारतीय दर्शन एवं भारतीय भाषाओं का भी उन्होंने अध्ययन किया । इस्लाम, साम्यवाद तथा इकबाल के रिश्ते के एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि इकबाल ने न केवल आर्थिक और राजनीतिक शोषण के बल्कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था के खिलाफ भी विद्रोह छेड़ने का आहवान किया । इसी प्रकार समाज में कवियों की भूमिका के संबंध में उन्होंने कहा कि प्रतिष्ठित कवियों ने सदैव मानवता की लड़ाई लड़ी है ।

इधर श्री जाफरी की चार प्रकाश्य पुस्तकों में कनाडा से उनकी कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद के अतिरिक्त उर्दू शायरी के छः भाग तथा एक शब्दकोश भी तैयार किये गए हैं । इसके बाद कविताएं और शायरी लिखना उनका आज भी जारी है । दो लाख 50 हजार रुपये की राशि का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले श्री जाफरी अब तक के 33 वें और फिराक गोरखपुरी एवं कुरंतुल हैदर के बाद उर्दूभाषा के वे तीसरे साहित्यकार हैं ।

19 नवम्बर 1913 को उत्तर प्रदेश के बलरामपुर कस्बे में जन्में श्री जाफरी उच्च शिक्षा के लिए जब अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय पहुँचे तो वहाँ वे साम्राज्यवाद और फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में कूद पड़े और तब से लगातार अत्याचार दमन और अन्याय के विरुद्ध उनकी कलम चलती रही । श्री जाफरी की रचनाओं का कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है । अनेक पुरस्कारों एवं अलंकरणों से भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है । अहिन्दी भाषी होते हुए भी सरदार जाफरी की लोकप्रियता हिन्दी के पाठकों में हासिल है । उन्होंनें कहानी, कविता, नाटक, रिपोतार्ज तो लिखे ही मीर, गालिब व कबीर के कलाम भी संपादित किए । उनके सृजनात्मक लेखन का भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है । उन्होंनें जो कुछ भी लिखा उसने आम लोगों के दिलों को छुआ । स्फूर्ति और ताजगी से बरकरार तथा प्रेरणादायक उनका लेखन आम जनता को सहज उपलब्ध हो सके, ऐसी कोई व्यवस्था सरकार अथवा हिन्दी संस्थाओं से होनी चाहिए । **श्री जाफरी सरीखे रचनाकार की आज हमारे देश और समाज में आवश्यकता है । मगर क्या पद, पैसा और पुरस्कार के लिए सत्ता के गलियारे में चक्कर काटते तथा सत्ता में बैठे हुकमरानों के सुर में सुर मिलाते आज के साहित्यकार श्री जाफरी के जीवन से कुछ सीख लेंगें ? क्या वे समय की चुनौती को स्वीकार करेंगे ?**

उनके दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए पत्रिका-परिवार की ओर से श्री जाफरी को हार्दिक बधाई ।

–रा. वि. संवाददाता, मुम्बई

साहित्य-समाचार

"बिहार की समकालीन हिन्दी कहानियों की दशा एवं दिशा" विषय पर संगोष्ठी

पटना 'कादम्बिनी क्लब' के तत्वावधान में विगत 28 फरवरी को अवर अभियंता संघ-भवन के सभाकक्ष में बिहार की समकालीन हिन्दी कहानी विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समीक्षक डा. वैद्यनाथ शर्मा ने की एवं संचालन किया विशुद्धानन्द ने ।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध उपन्यासकार डा. भगवतीशरण मिश्र ने कहा कि पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों के घोर विघटन के इस काल में हिन्दी कहानीकारों को अधिक सतर्कता एवं कारगर भूमिका निभाने की आवश्यकता है ।

मुख्य वक्ता के रूप में कथाकार कृष्णानन्द कृष्ण "बिहार की समकालीन हिन्दी कहानियों की दशा एवं दिशा" विषयक आलेख का पाठ करते हुए कहा कि समकालीन कहानी ने वैचारिक स्तर पर समाज में फैली कुरीतियों, साम्प्रदायवाद, सामाजिक विसंगति एवं नैतिक मूल्यहीनता के विरुद्ध संघर्षरत आम आदमी की लड़ाई को तीव्र किया है ।

डा. मिथिलेश कुमारी मिश्र एवं प्रो. दुर्योधन सिंह 'दिनेश' ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि कहानी को सत्य के निकट होना चाहिए और इस रूप में बिहार के कहानीकारों ने समकालीन समाज के चित्रण में महती भूमिका निभाई है ।

आरम्भ में अतिथियों का स्वागत करते हुए क्लब के संयोजक डा. शिवनारायण ने कहा कि **आज के इस आयोजन के मूल में शाश्वत मूल्यपरक लेखन को समर्पित निर्गुट कथाकारों की चर्चा को मुख्यधारा में मूल्यांकित करना है,** जबकि प्रगतिशीलता के नाम पर गुट एवं पार्टी-विशेष से प्रतिबद्ध लेखकों को ही मुख्यधारा में मानते हुए शोध की घोर उपेक्षा हो रही है ।

संगोष्ठी में सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. सतीशराज पुष्करणा द्वारा संपादित कथा-संकलन "शताब्दी शिखर की हिन्दी कहानियाँ" का लोकार्पण डा. भगवतीशरण मिश्र के हाथों सम्पन्न हुआ । पुस्तक-परिचय देते हुए डा. पुष्करणा ने कहा कि आज हिन्दी कहानी को दरअसल जिस अहसास की आवश्यकता है, वह है प्रेम । प्रेम मात्र से संसार की अधिकांश समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है । ऐसी ही कहानियों से इस संकलन का संपादन किया गया है ।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. बैधनाथ शर्मा ने कहा कि यथार्थ के नाम पर आज की 'प्रतिबद्ध' कहानियों के कुत्सित राजनीति का जो नंगा नाच हो रहा है, उसकी आलोचना होनी चाहिए ।

आयोजन के दूसरे चरण में कतिपय चुनिन्दा कवियों द्वारा काव्य-पाठ किया गया, जिसमें विशिष्ट कवि के रूप में भारतीय आरक्षी सेवा के वरीय अधिकारी एवं गीति-कवि डॉ. विनोदमणि दिवाकर के साथ-साथ सर्वश्री प्रो. कैलाश 'स्वच्छन्द', डा. नरेश पांडेय "चकोर', हरीन्द्र विद्यार्थी, श्रीमती कृष्णा कुमारी, सिद्धेश्वर, श्याम बिहारी प्रभाकर, विशुद्धानन्द, डा. बैद्यनाथ शर्मा, रामलखन सिंह 'मयंक', आदित्य प्रकाश सिंह आदि की कविताएं सराही गईं ।

धन्यवाद-ज्ञापन सुकवि हृषिकेश पाठकों ने किया, जबकि प्रसिद्ध कवि डा. रामेश्वर लाल खंडेलवाल 'तरूण' के आकस्मिक निधन पर प्रो. कैलाश स्वच्छन्द द्वारा पढ़े गए शोक-प्रस्ताव एवं दो मिनट के मौन के साथ ही यह सारस्वत आयोजन सम्पन्न हुआ ।

संपर्क : **डॉ. शिवनारायण**
संयोजक, कादम्बिनी क्लब, पटना, 2 बैंक हार्डिंग रोड, पटना-1

रचनाधर्मियों की संवेदनहीनता का एक नमूना

रा.वि. प्रतिनिधि

कहा जाता है और यह सच भी है कि रचनाकार समाज का सबसे संवेदनशील, सहृदय और भावुक तथा सबसे अधिक प्रबुद्ध एवं सचेतन इकाई है। यही कारण है कि सामान्य जन के दुःख-दर्द और उत्पीड़न की ओर उसकी दृष्टि सबसे अधिक जाती है। वह उससे द्रवित होता है। उसकी यह सहृदयता और संवेदनशीलता ही उसे जन-सामान्य से जोड़ती है। पर जब समाज का सबसे संवेदनशील प्राणी ही संवेदनहीन हो जाये तो चिन्तित होना स्वाभाविक है।

बात कुछ ही दिनों पूर्व की है कि हिन्दी जगत् के सुपरिचित साहित्यकार एवं गीत चेतना के प्रसिद्ध कवि स्व. उमाकान्त मालवीय के प्रतिभावान पुत्र एवं कथाकार बसु मालवीय का 32वां जन्म दिवस साहित्य-नगरी इलाहाबाद में 'सृजन-संघर्ष' के तत्वावधान में स्मृति पर्व के रूप में मनाया गया। कवि बसु का असामयिक निधन पिछले वर्ष मई में मुम्बई में एक सड़क दुर्घटना में हो गया था। उक्त स्मृति में नयी-पुरानी पीढ़ी के प्रायः अनेक जाने-माने साहित्यकारों में दूधनाथ सिंह, नरेश मेहता, शेखर जोशी, लक्ष्मीकांत वर्मा, जगदीश गुप्त से लेकर अजामिल एवं एहतराम इस्लाम आदि उपस्थित थे। यह आयोजन अत्यन्त आत्मीय, अन्तरंग तथा अनौपचारिक था। पता नहीं क्यों, कुछ अधेड़ रचनाकारों को यह सब कुछ सहन नहीं हुआ। उनमें से एक लेखक से यह सुनने को मिला जो एक रचनाकार के पूरे चरित्र को उजागर करने के लिए काफी है–उसने कहा–**"आजकल लेखक की अमरता के लिए यह आवश्यक है कि उसकी असमय मृत्यु हो जाये।"** कुछ संवेदनहीन किस्म के लेखक किस्म के लोगों ने इस पर हामी भरी और विकृत हंसी के साथ कहा कि पाश अपनी हत्या और गोरख पांडे अपनी आत्महत्या की वजह से चर्चित हुए हैं। एक सुयोग्य पिता के योग्य पुत्र एवं चर्चित कवि यश मालवीय के अनुसार एक लम्बी उम्र जी लेने के बाद साहित्य में मान्यता न मिल पाने का दंश ही संभवतः इस मानसिकता को जन्म दे रहा था, क्योंकि साहित्य के सुधी पाठक यह भली प्रकार जानते हैं कि पाश और गोरख पांडे अगर आज जीवित हैं तो अपनी रचनाओं के बल पर न कि उन घटनाओं, दुर्घटनाओं के कारण जो उनके साथ घटी।

कुछ थोड़े से इस असंवेदनशील लेखकों को छोड़कर, जो बसु के देहावसान को उनके रचनाकार के लिए वरदान स्वरूप मान रहे थे, उस स्मृति पर्व के दिन और सभी लेखकों के मन में यह कचोट थी। आखिर तभी तो उन लेखक किस्म के लोगों की काना-फूसी सुनकर एक अन्य संवेदनशील लेखक की तुरन्त प्रतिक्रिया थी,

"कह दो, इन लेखकों से अपनी-अपनी चर्चाएं करवानी हो तो आत्महत्याएं कर लें। इन्हें मरने से किसने रोका है। फिर देखें, किसकी कितनी चर्चा होती है।"

जहाँ तक बसु मालवीय के कृतित्व का सवाल है वे अपने 'ब्राह्मण' जैसे उपन्यास तथा 'भालो आछि', 'सूखी नहीं है नदी', 'उस्तरा' जैसी पचासों कहानियों के बल पर स्मरण किए जाएंगे। उस हादसे के कारण नहीं जो मुम्बई में उनके साथ घटी।

सुप्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर जी के बुलावे पर ही बसु अपनी प्रतिभा को आजमाने मुम्बई गए थे। बल्कि इन दिनों कमलेश्वर के साथ 'आल्हा' धारावाहिक पर वे काम कर रहे थे। कमलेश्वर ने कहा था–'नए लेखकों को दृश्य-माध्यम में भी हस्तक्षेप करना चाहिए। ज्यादातर लेखक फिल्म, दूरदर्शन को अछूत समझते हैं। जबकि यह एक बड़ा माध्यम है, जिससे भारत का आम जन जुड़ता है। कमलेश्वर ने बड़े स्नेह के साथ बसु मालवीय को अपने एक पत्र में यह भी लिखा था –

"मुम्बई चले आओ, यहाँ समुन्दर में जी भर तैरो। पर एक बात ध्यान में रखना, इसका पानी मुंह में मत ले जाना अन्यथा सारा स्वाद खारा हो जाएगा।" बसु मालवीय ने मुम्बई जाना एक चुनौती के रूप में लिया था, पर जगन्नियंता के क्रूर हाथों ने एक उभरते हुए कथाकार को हमसे छीनकर उन्हें वह अवसर नहीं दिया। निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि यदि वे जी जाते तो उनकी प्रतिभा का एक और आयाम उद्घाटित होता। खैर! वे तो अब हमारे बीच नहीं रहे पर उनकी भावनाएं हैं, उनकी रचनाएं हैं जो उन्हें जीवित रखेंगी। उनकी स्मृति को रा.वि. पत्रिका-परिवार नमन करता है।

अंचल की हलचल

मिथिलांचल

रा.वि. प्रतिनिधि, जयनगर

भारत-नेपाल सीमा पर धड़ल्ले से नेपाली शराब की बिक्री

भारत-नेपाल सीमा पर अवस्थित मधुबनी जिलान्तर्गत जयनगर अनुमण्डल मुख्यालय तथा इसके ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर धड़ल्ले से नेपाली शराब की बिक्री तथा देशी-शराब के निर्माण से सरकार को प्रतिवर्ष लाखों रुपये के राजस्व की हानि उठानी पड़ रही है। यही नहीं नकली शराब पीने से एक ओर जहाँ क्षेत्र की आम जनता बरबादी के कगार पर खड़ी है वहीं दूसरी ओर अवैध शराब बिक्रेता-निर्माता के साथ-साथ स्थानीय प्रशासन से जुड़े लोग मालामाल हो रहे हैं। जयनगर, बासोपट्टी, लदनियां प्रखण्ड सहित नेपाल सीमा से सटे गांवों में वर्षों से शराब माफिया का गिरोह शराब के अवैध धन्धों में सक्रिय है। इन दिनों नेपाल निर्मित विभिन्न ब्रान्डों के नाम से इन क्षेत्रों में उपलब्ध शराब देशी शराब से भी सस्ती है। सीमा पर नेपाल से अवैध रूप से तस्करी कर नेपाली देशी शराब की बिक्री भारतीय क्षेत्र के इस सीमांचल में भारी मात्रा में की जा रही है। परिणामस्वरूप शराबियों को एक विशेष किस्म के जायकेदार शराब मिल जा रही है। कहा जाता है कि इस विशेष किस्म की जायकेदार शराब की कीमत कम तथा नशा अधिक होती है जिसके चलते इसे काफी संख्या में लोग पसंद करते हैं।

– राज कुमार गुप्ता

काश ! नेता स्व. गुलजारी लाल नन्दा के पद चिह्नों पर चलें !

गाँधी युग की अन्तिम कड़ी यादें ही शेष रह गईं

❒ सुरेश चन्द्र परमार

आज के नेता पहले के महान नेताओं की परछाई मात्र भी नहीं रह गए हैं । उस समय जिनके हाथ में हमारे देश व राज्य की बागडोर थी वे भारतीयता की भावना से ओत-प्रोत होते थे । लेकिन आज कोई भी नेता अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक सोच से ऊपर उठने का प्रयास नहीं कर पा रहा है । सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समानता के सिद्धान्तों ने पूरे देश की एकता को और ज्यादा मजबूत किया होता लेकिन आज की स्वार्थपरक राजनीति ने उनका गला घोंट दिया है । ऐसे समय में प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता गुलजारी लाल नन्दा की याद आते ही गला भर आता है । प्रथम बार नेहरू जी के निधन तथा दूसरी बार शास्त्री जी के असामयिक देहावसान के उपरान्त दो बार देश के कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे श्री नन्दा आज हमारे बीच नहीं हैं । 4 जुलाई, 1898 को गुजर वाला (पाकिस्तान) के बदोरी गाँव में जन्में श्री नन्दा का निधन 15 जनवरी, 1998 की संध्या 4 बजे अहमदाबाद में लम्बी बीमारी के कारण हो गया था । भारत सरकार की ओर से जुलाई, 1997 में उन्हें 'भारतरत्न' से सम्मानित भी किया गया था ।

अहमदाबाद में गाँधी जी के द्वारा स्थापित मजदूरों के संगठन 'मजूर महाजन' को श्री नन्दा ने बढ़ाया । गाँधी युग की अन्तिम कड़ी श्री नन्दा ने आजीवन गाँधीवादी मूल्यों से अपने आपको जोड़े रखा । राजनीति से सन्यास लेने के बाद अहमदाबाद में अपनी पुत्री पुष्पा बेन के साथ वे रह रहे थे । वे अपने पीछे एक पुत्री तथा दो पुत्र छोड़ गए हैं । उनके पास आय के कोई साधन नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपने बच्चों अथवा किसी शुभेच्छु से किसी तरह की निधि स्वीकार नहीं की । यहां तक कि स्वतन्त्रता सेनानी पेन्सन के लिए आवेदन पत्र पर भी स्वतन्त्रता सेनानी श्री शीलभद्रयाजी ने उनके हस्ताक्षर दबाव देकर लिया था । और तो और उनके उत्तराधिकारी प्रधानमंत्रियों तथा दिल्ली प्रशासन के द्वारा दिल्ली में उनके रहने तथा शांति के साथ कार्य सम्पन्न करने के लिए दिए गए एक मकान को भी उन्होंने ठुकरा दिया था । काश ! उनके जैसा कोई भी नेता आज दिखता जो उनके पद चिह्नों पर चल सकता !

अवसरवाद और समझौतावाद ने तो आज सिद्धान्तों और प्रतिबद्धताओं को ढांक दिया है । सत्ता की भूख, बेमेल तालमेल और मौकापरस्ती ने भ्रष्टाचार एवं अराजकता को बढ़ावा दिया है । राजनेताओं और नौकरशाहों के काण्डों ने सारे देश को झकझोर कर रख दिया है । आज की अवसरवादी समझौते की राजनीति ने सारी राजनीतिं और समाज को विकृत कर दिया है । **श्री नन्दा ने एक बार कहा था –"मुझे पक्का विश्वास है कि हम भारतीयों के लिए गाँधी जी ने जो रास्ता दिखाया था, उसी पर हम सब पुनः वापस आएंगे !"** उनकी यह आवाज चिन्ता से भरी जरूर थी पर उसमें आशावादिता भी झलकती थी ।

संपर्क : महाप्रशासक एवं राजकीय प्रन्यासी
पी-5, ऑफिसर्स फ्लैट, पुनायचक, पटना
दूरभाष : 285232

चुनाव जो सुन्दर लाल बहुगुणा ने देखा

रा. वि. प्रतिनिधि

शीर्षस्थ, पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा के अनुसार भारतीय लोकसभा के लिए 1952 में पहली बार हुए आम चुनाव में नेताओं पर आजादी के संघर्ष और उसके आदर्श का असर था । आदर्शवाद समाज में जिंदा था । उन दिनों जो लोग राजनीति में प्रवेश करते थे वे राजनीति तथा देश को कुछ देने की तमन्ना रखते थे पर आज स्थिति बिल्कुल उल्टी हो गई है । आज एक ही पुश्त तक के लिए नहीं बल्कि पुश्त-दर –पुश्त के लिए नेता राजनीति से बनाकर रख लेना चाहते हैं । राजनीति से आदर्शवाद गायब हो गया है । चुनावी सीट और उसकी जीत के आड़े तिरछे समीकरणों ने आदर्शवाद को हाशिए पर धकेल राजनीति में अपनी प्रमुखता स्थापित कर ली है । ऐन चुनावों के वक्त बड़े पैमाने पर हुए दलबदल तथा सिद्धान्तहीन चुनावी गठबन्धन इस बात के ताजातरीन सबूत हैं । राजनीति पर लोकनीति का अंकुश नहीं होना ही इसका जबर्दस्त कारण है ।

आज से तीन चार दशक पूर्व जनता अपने प्रतिनिधि का चुनाव स्थानीय मुद्दों के आधार पर करती थी पर उसकी जगह जात-पात और धर्म ने ले ली है । आज उम्मीदवार पेशेवर बन गए हैं । आत्म-प्रशंसा, पर-निंदा और मिथ्या भाषण नेताओं के चुनाव जीतने के हथियार बन गए हैं । उम्मीदवार जनता से कट गए हैं और उसकी जगह प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को ही उम्मीदवार माध्यम बनाने लग गए हैं । यह खतरनाक स्थिति है। लोकतंत्र की रक्षा के लिए नेता की जगह जनता को महत्व दिया जाना चाहिए । ये उद्गार हैं पर्यावरण विशेषज्ञ श्री सुन्दर लाल बहुगुणा के जिसे उन्होंने पत्रिका के प्रतिनिधि को दिये ।

'बहुत छोटा होता है 'ब्यूटी' का कैरियर'

❒ भारत सुन्दरियाँ

वर्ष 1998 के लिए चयन की गईं मिस इंडिया युनिवर्स लिमरैना डिसूजा, मिस इंडिया वर्ल्ड एनी थॉमस तथा मिस इंडिया पेसिफिक विदिका अग्रवाल-तीनों भारत सुन्दरियों ने संवाददाता से कहा कि ब्यूटी का कैरियर बहुत छोटा होता है, उस पर पूरे जीवन को निर्भर नहीं बनाया जा सकता । इसलिए कुछ अलग और विशेष आवश्यक है ।

लिमरैना डिसूजा ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे फिल्मों में कभी काम नहीं करेगी । पढ़ाई पूरा करना उनका पहला लक्ष्य है । तत्पश्चात् डिसूजा बच्चों के मनोविज्ञान और भोजन के क्षेत्र में कुछ विशेष करना चाहती है । मुम्बई में पली बढ़ी गोवा मूल की लिमरैना को मिस इंडिया युनिवर्स बनने के बाद स्वयं में कोई बदलाव महसूस नहीं होता । मिस इंडिया वर्ल्ड एनी थॉमस जो केरल मूल की हैं को ऐसा लगता है कि वे पूरे देश की हैं । देश से लगाव है । बंगलौर में पली बढ़ी नेपाल की मूल निवासी विदिका अग्रवाल और महिला व्यवसायी अपना कैरियर बनाना चाहती हैं ।

वाटरगेट के बाद 'मोनिकागेट'
हर जुबान पे क्लिंटन के प्यार के चर्चे

· रा. वि. प्रतिनिधि

किसी को भी इस बात से हैरानी हो सकती है कि जिस पश्चिमी समाज में यौन क्रांति हो चुकी है, बल्कि सच तो यह है कि यौन संबंध किसी नैतिकता का मामला नहीं रह गया है, वहाँ बरसों पुराने प्रेम संबंध उजागर होते ही सत्ताधारियों का आसन डोलने क्यों लगता है ?

आपको याद होगा आज से लगभग दो दशक पूर्व–वाटरगेट स्कैन्डल की वजह से अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन को अपनी गद्दी से हाथ धोना पड़ा थां । जापान में भी राजनेताओं में यौन संबंध के चर्चे चलते रहे हैं । सेक्स स्कैंडलों के चलते अपने पद से त्याग पत्र देने वाले मंत्रियों–प्रधानमंत्रियों एवं राष्ट्रपतियों की इन देशों में लंबी फेहरिस्त है । इसी कड़ी में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ऐसे ही सेक्स स्कैन्डलों से इधर घिर गए हैं । वाशिंगटन में हुए रहस्योद्घाटन राष्ट्रपति क्लिंटन के राजनीतिक भविष्य पर गहरा असर डाल सकते हैं । व्हाइट हाउस की एक अदना-सी महिला कर्मचारी पौला जोन्स के साथ कथित यौन दुराचरण का मुकदमा अभी उन पर चल रहा है । अभी-अभी दो माह पूर्व बिल क्लिंटन की इस मामले में कोर्ट में छह घंटे तक लंबी पेशी हो चुकी है । पौला जोन्स का आरोप है कि श्री क्लिंटन जब अराकांसस के राज्यपाल थे तो उस समय उन्होंने सुश्री जोन्स के सामने अश्लील पेशकश की थी । इस मुकदमे के सिलसिले में व्हाइट हाउस की एक अन्य महिला कर्मचारी सुश्री मोनिका की गवाही की बात जब उठी तो कथित रूप से श्री क्लिंटन ने अपनी कर्मचारी से इस बारे में झूठ बोलने को कहा था । राष्ट्रपति क्लिंटन पर यह भी आरोप है कि उनका व्हाइट हाउस में इंटर्नशिप पर काम कर रही 24 वर्षीया मोनिका लेविन्स्की के साथ चक्कर चल रहा था । समाचार है कि एक टेप रेकार्ड साक्षातकार में सुश्री मोनिका यह कबूल कर चुकी है कि उसका राष्ट्रपति के साथ 21 साल की उम्र से ही चक्कर चल रहा था । इसी प्रकार व्हाइट हाउस की एक पूर्व सचिव लिंडाआर ट्रीप ने एक टेप रेकार्ड के हवाले से कहा था कि उसने एक बार एक अन्य युवती कैथलिन बिली को क्लिंटन के ओवल ऑफिस से बदहवासी की हालत में निकलते देखा था और उसने दावा किया था कि उसका भी क्लिंटन के साथ सेक्सुअल एनकाउंटर हुआ है ।

श्री क्लिंटन के मौजूदा प्रकरण के चर्चे दुनिया भर के समाचार पत्रों में छाये हुए हैं । महाशक्ति राष्ट्रपति क्लिंटन का भविष्य तय करनेवाले इस स्कैण्डल के हश्र को दुनिया भर में बहुत उत्सुकता से देखा जा रहा है जिसे 'वाटर गेट' की तर्ज पर 'मोनिका गेट' कहा ही जाने लगा है ।

मगर सवाल उठता है कि जो अमेरिकी समाज अपने निजी जीवन में यौन रिश्तों की नैतिकता को तिलांजलि दे चुका है, वह अपने राष्ट्रपति के कथित पुराने प्रेम संबधों को लेकर विचलित क्यों है ? हमारे भारत देश के सत्ताधारियों के भ्रष्टाचार को सामाजिक भ्रष्टाचार की दलील से उचित ठहराने वाले लोगों के लिए क्या यह एक सबक नहीं होना चाहिए ?

–गौतम

पाँच हस्ताक्षरों को 'भारत रत्न' सम्मान

देश के पाँच जाने-माने हस्ताक्षरों को सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' प्रदान किया गया जिनमें से सत्यजीत रे, अरुणा आसफ अली तथा गुलजारी लाल नन्दा को यह सम्मान मरणोपरान्त दिया गया। इनके अतिरिक्त भारत के प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के जनक ए.पी.जी. अब्दुल कलाम और कर्नाटक संगीत की स्वर कोकिला एम.एस. सुब्बलक्ष्मी को 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया ।

राष्ट्रपति भवन के दरबार भवन में आयोजित एक समारोह में आभार व्यक्त करते हुए श्रीमती सुब्बलक्ष्मी ने कहा कि हमें अपनी खामियों के प्रति ईमानदार होना पड़ेगा । देश के मान-सम्मान की खातिर हमें आपसी मतभेदों को भुलाकर पूरे सद्भाव के साथ आगे बढ़ने के लिए तत्पर होना चाहिए । उन्होंने पुनः कहा कि संगीत में जात-पात, भाषा और अमीरी-गरीबी कोई अड़चन नहीं है । सच तो यह है कि इस महान धरती का हर नागरिक एक रत्न है ।

–रा.वि. संवाददाता, दिल्ली

कहानी एक डाक टिकट की

मार्टिन लूथर किंग

डा॰ मार्टिन लूथर किंग पर डाक टिकट भारत सरकार के द्वारा 25 जनवरी, 1969 को जारी किया गया था । मार्टिन जब विद्यार्थी थे तभी उनके मन पर हेनरी डेविड थोरो के निबंध 'सविनय अवज्ञा' का गंभीर रूप से प्रभाव पड़ा था । उसके बाद उन्हें महात्मा गाँधी पर भी एक भाषण सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसका उनके मन पर गहरा असर हुआ । तब उन्होंने गाँधीजी के अहिंसात्मक जनसंधर्ष के तौर तरीकों का अध्ययन किया । प्रजातीय अन्याय और असहनशीलता के विरुद्ध आन्दोलन को डॉ. किंग ने संचालन किया । सन् 1963 में बर्मिंघम, अलबामा में सविनय अवज्ञा आन्दोलन और बाद में इसी वर्ष वाशिंगटन में विशाल विरोध प्रदर्शन उनसे जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाएं थीं । **डॉ॰ किंग अगुआ थे एक ऐसे संघर्ष का जो अहिंसा, त्याग और नैतिक बल का प्रेरक था** । डॉ॰ किंग के शांतिपूर्ण आन्दोलन के तौर तरीके नीग्रो उग्रपंथियों को पसंद नहीं आए । गोरे प्रजातिवादियों ने उन्हें अपना शत्रु समझा । ऐसा समझा जाता है कि इसी कारण गोरी जाति के किसी कट्टर ने प्राणांतक गोली इन पर चला दी । इस प्रकार मनुष्य मात्र में समानता लाने के लिए समर्पित एक महान आत्मा का अंत कर दिया गया । सन् 1964 में जब उन्हें नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया तब उन्हें विश्वस्तर पर मान्यता मिली । अन्याय और शोषण के विरुद्ध ऐसे थे डॉ. मार्टिन लूथर किंग और यही है कहानी इस डाक टिकट की ।

रा.वि. प्रतिनिधि

'स्वतन्त्रता संग्राम में भागीदारी सम्मान प्राप्ति की इच्छा से नहीं'

– पद्मविभूषण डॉ. मेहता

रा.वि. संवाददाता, मुम्बई

'हम लोगों ने स्वतन्त्रता संग्राम में भागीदारी इस अपेक्षा से नहीं की थी कि हमें कोई सम्मान प्राप्त हो । यह सम्मान मिला है, खुशी है । ईश्वर हमें इस योग्य होने की शक्ति दे ।' ये विचार हैं सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, गाँधीवादी तथा सामाजिक कार्यकर्ता डा. उषा मेहता के जिसे उन्होंने इस वर्ष गणतन्त्र दिवस के अवसर पर 'पद्मविभूषण' से सम्मानित होने के बाद व्यक्त किए ।

यह पूछने पर कि क्या सरकार की ओर से उन्हें सम्मानित करने में देर नहीं हुई ? उन्होंने कहा कि जब अपेक्षा ही नहीं थी तो देर होने का सवाल नहीं उठता । उनका तो मानना है कि यह सम्मान उन्हें नहीं वरन् स्वतन्त्रता संग्राम के उन सेनानियों को मिला है, उन शहीदों को मिला है जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए सब कुछ कुर्बान किया । उनका कहना है कि उन्हें यह पुरस्कार सामाजिक कार्य के लिए मिला है । देश की वर्तमान स्थिति पर पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में डा. मेहता ने कहा कि स्थिति दयनीय है, एक भी सपना सच नहीं हुआ । परन्तु उसके लिए निराश होने की जरूरत नहीं । जैसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए लड़ते रहे वैसे ही स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए लड़ते रहेंगे । हम देशवासियों का यह कर्तव्य बनता है कि हम अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए संघर्ष करते रहें, पद्म विभूषण डॉ. उषा. मेहता ने कहा ।

– शारदा

वर्ष 1997 का साहित्य अकादमी पुरस्कार

विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने वर्ष 1997 में निम्नलिखित सुप्रसिद्ध साहित्यकारों को दस-दस हजार रुपये के अनुवाद पुरस्कारों से सम्मानित करने का फैसला किया है–

(1) निरपेज भमतट-असमिया
(2) कीर्तिनाथ हजारिश-मणिपुरी
(3) निशान निगतम्बा-
(4) यशवंत पोलकर-कोंकणी
(5) नवीन चौधरी-मैथिली
(6) रामेश्वर झा-बंगला
(7) गायत्री-अंग्रेजी
(8) शिवशमशेर रसैली-नेपाली
(9) युगल किशोर दत्ता-उड़िया
(10) प्रकाश फिक्री-उर्दू
(11) बी.के. ईश्वर-हिन्दी
(12) श्याम विमललाल सिंह-संस्कृत
(13) हीरो शिवकानी-सिंधी

उत्तर दक्षिण के सर्जक का पंचम वार्षिक सम्मेलन-98

भारतीय कला-साहित्य संस्थान का पंचम वार्षिक सम्मेलन आगामी 11 व 12 अप्रैल, 98 को विधुनगर (कोइलवर) आरा (बिहार) में सम्पन्न हो रहा है । अधिवेशन में देश के विभिन्न अंचलों से अनेक लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, कलाविद्, समीक्षक, सम्पादक तथा साहित्य एवं कला प्रेमी भाग ले रहे हैं । सम्मेलन के दो दिवसीय कार्यक्रम में स्वाति (साहित्यिक पत्रिका धनबाद), प्रभा रश्मि (साहित्यिक पत्रिका देवघर), अंचल भारती (साहित्यि पत्रिका देवरिया), युग मानस (साहित्यिक पत्रिका गुंतकल), पैगाम (साहित्यिक पत्रिका आस्का), मध्यान्तर (साहित्यिक पत्रिका हैदराबाद), अखिल भारतीय हिन्दी गीतकार परिषद (हैदराबाद), जीवन विकास संस्थान (बस्ती) एवं अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति विकास संस्थान (जबलपुर) आदि के सम्मिलित संयोजन में कहानी, लघु कथा, गीत तथा कला और संस्कृति विषय पर महत्वपूर्ण संगोष्ठियां सम्पन्न होंगी । इसके अतिरिक्त भारतीय कला साहित्य संस्थान की ओर से कला तथा साहित्य के क्षेत्र में किसी भारतीय भाषा में विशिष्ट योगदान के लिए अनेक मनीषियों को मानद् उपाधि से सम्मानित किया जायेगा । निश्चय ही यह सम्मेलन राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार के साथ ही प्रादेशिक भाषाओं के विकास को एक नई दिशा देगा । साथ ही इसके माध्यम से राष्ट्रीय भावात्मक एकता को बल मिलेगा । अभी से इसीलिए निवेदन किया जा रहा है कि आपको कार्यक्रम बनाने में सुविधा हो ।

अधिवेशन में आने वाले प्रतिनिधियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान की ओर से निःशुल्क रहेगा । सम्मेलन में भागीदारी के लिये कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा । सभी की भागीदारी सुनिश्चित रहेगी । मार्ग व्यय स्वयं वहन करना होगा । इसकी व्यवस्था करने में हम असमर्थ हैं ।

सम्मेलन में पहुंचने की सूचना संस्थान के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र परदेसी, 326-रामगुलाम टोला, देवरिया (उ.प्र.)-274001 को देने का कष्ट करेंगे, जिससे आपके आवास आदि की व्यवस्था करने में सुविधा होगी । विश्वास है सम्मेलन में सम्मिलित होकर हमें अवश्य सहयोग देने का कष्ट करेंगे ।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह

सचिव, भारतीय कला साहित्य संस्थान, विधुनगर, कोइलवर, भोजपुर, (बिहार)-802160

साहित्यकार समय की चुनौती को स्वीकारें

❒ सुशीला झा

विगत कई दशकों से हमारे विचार, दर्शन, इतिहास, राजनीति और संस्कृति लक्ष्यहीन हो रहे हैं । हमारे सपने बिखरते जा रहे हैं । हम निरन्तर अपने लिए नरक का निर्माण कर रहे हैं । मगर कहीं तो कुछ लोग होंगे जो जीवन के यथार्थ को उजागर करने के लिए संघर्ष करने को आगे आएंगे । सुशीला जी ने अपने विचारोत्तेजक लेख में कुछ इस तरह का सवाल उठाया है जो हर रचनाकार को अपने स्तर पर सोचने को मजबूर करता है । साधुवाद ।–प्रधान संपादक

अपना देश भारत वर्ष उल्लास पूर्वक अपनी आजादी की स्वर्ण जयंती मना रहा है । भले ही यह उल्लास देश के शासक वर्ग द्वारा आयोजित किया जा रहा हो । उस शासक वर्ग द्वारा जिसने पचास वर्षों तक भिन्न-भिन्न तरह के झंडे, बैनर लगाकर देश को लूटा है–लूटतंत्र को विकसित किया है । आज पूरे देश में जो घोटालों का शोर है वह अकारण नहीं है । राजनैतिक-परिदृश्य पर क्षुद्र स्वार्थी तत्व और निरंकुश नेता छाए हुए हैं । अरबों के कई घोटालेबाजों को भी परोक्ष और प्रत्यक्ष समर्थन मिल रहा है ।–क्या यह स्वर्ण जयंती का नायाब तोहफा नहीं है ? हत्या, बलात्कार, अत्याचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, सामूहिक नर-संहार तथा अपहरण की घटनाएं दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है । क्या अब भी पत्रकार, और साहित्यकार चुप रहेंगें ? समय की चुनौती को अनदेखी करेंगें ? उनमें स्वप्न देखने की ही नहीं उसे साकार करने की भी कूबत है । वे संघर्ष करें सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए । देश मे आज नैतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता का अनुभव चतुर्दिक किया जा रहा है । सिर से पांव तक भ्रष्टाचार में डूबा हुआ राष्ट्र नैतिकता के अभाव में आन्तरिक रुप से असन्तुलित होता जा रहा है । **लोकतन्त्र वहीं सफल होता है जहां जनता जागरूक हो । सचेष्ट सजग नहीं रहने पर लोकतंत्र तानाशाही रुप ले लेता है** । अब देश की इस आन्तरिक स्थिति पर मुख्य चिन्तन की आवश्यकता है । अगर अब भी साहित्यकार पत्रकार, छात्र-शिक्षक, अभिभावक मौन रहेंगे तो राजनीति के स्वार्थी तत्व अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहेंगे और तब संकटों के जो बादल देश पर छाये हुए हैं वे प्रतिदिन घनीभूत होते जायेंगे । स्वतंत्रता के पचास वर्षों की उपलब्धि है यह । यहाँ अपनी प्रगति के नाम पर स्वार्थ-सिद्धि की ही प्रगति हुई ।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद राष्ट्र की दिशा निर्धारित करना तथा कुमार्ग से राष्ट्र को बचाते हुऐ आगे बढ़ाना राजनैतिक दूरदर्शिता की परीक्षा का समय होता है । स्वाधीनता के प्रसव-वेदना से मुक्त होने के बाद नवजात राष्ट्र को सुनियोजित विकासवादी लक्ष्य की ओर अग्रसर करना असम्भव नहीं तो दूभर अवश्य होता है । किसी राष्ट्र के शैशवावस्था में सामाजिक मूल्यों के ह्रास की संभावनाएँ अधिक रहती हैं । हमारे राष्ट्र के नेतृत्व-संचालन में इस पक्ष की घोर उपेक्षा की गयी । राष्ट्र के भौतिक-विकास की सुन्दरतम् कल्पनाएँ की गयी । जिसकी पंचवर्षीय योजनाओं के जरिये मूर्त्त-रूप देने का प्रयास किया गया । लेकिन सामाजिक आदर्शों की ओर ध्यान नहीं दिया गया न आचरण और नैतिकता की ओर ध्यान दिया गया । आचरण की शुचिता राष्ट्रीय जीवन की उत्कृष्टता का परिचायक होती है । किसी राष्ट्र की प्रगति का मूल्यांकन दो दृष्टिकोण से किया जाता है । एक भौतिक उत्थान दूसरा-नैतिक अभ्युदय । हमारे यहां भौतिक उत्थान के जद्दोजहद में नैतिकता का अध: पतन हुआ । अन्त: करण की पवित्रता भौतिक उन्नति की तुलना में गौण रही, सद्भावना मौन रहने लगी और सदाचार सिकुड़ते-सिकुड़ते-लुप्तप्राय हो गया। द्वेष, दुर्भावना और भ्रष्टाचार से टकराकर समस्त व्यवस्था क्षत-विक्षत होती रही ।

अतीत को वर्तमान में उजागर होने और भविष्य में जाने से रोका नहीं जा सकता । भ्रष्टाचार का उन्मूलन मात्र भाषणों और नारों से संभव नहीं । इसके लिए हमें भ्रष्टाचार के मूल कारणों का अध्ययन एवं मनन करना होगा । अगर इस गहन समस्या के निराकरण का कोई हल ढूंढ़ने में हम असमर्थ रहे तो यह निश्चित है कि इक्कीसवीं सदी के आते-आते हमारा यह आन्तरिक शत्रु हमारे देश और समाज के गठन का नैतिक आधार समाप्त कर ही दम लेगा ।

विश्व में अनेक राष्ट्रों का नाश अपनी भीतरी सड़ांध के कारण ही हुआ है । आज भारत को बाहरी शत्रु का डर उतना नहीं है जितना भयानक है मंत्रियों और संतरियों के चरित्र की सड़ांध का जो घपला, घोटाला, हवाला, कर्तव्यहीनता, विलासिता, जातिवाद, लिंगभेद के रूप में राष्ट्र को भीतर ही भीतर खोखला कर रही है । जिस ओर देखें उस ओर सड़ांध दिखेगी । जहां भ्रष्टाचार पनपने की गुंजाइश नहीं थी आज वहां भी भ्रष्टाचार फल फूल रहा है ।

भ्रष्टाचार के विकराल रूप ने प्रबंधकीय क्षमता को निकम्मा बना दिया है । आज बिहार में राज-व्यवस्था द्वारा इस भ्रष्टाचार के कई स्कैण्डल जनता के सामने प्रकट हो चुके हैं । राजकोष को जिस बेरहमी और बेशर्मी से लूटा गया है उससे बिहार की जनता हतप्रभ है । अब तो प्रबंधकीय मशीनरी से जनता का विश्वास उठने लगा है । न्यायपालिका ऐसी स्थिति में कितना कुछ संभाल पायेगी यह भविष्य ही बतायेगा ।

1992 से 1996 तक दस हजार एक सौ छिआसी करोड़ रुपये का घोटाला हुआ है । भ्रष्टाचार के इस बढ़ते ग्राफ के कारण ही गरीबी, लाचारी, बेरोजगारी और बदहाली बढ़ती जा रही है और सत्ताधारियों का खून चूसना अभी भी जारी है । राजनीति के कोष में नैतिकता और मानवीय संवेदना नामक कोई शब्द ही नहीं है । राजनेताओं की बस एक ही नीति है–'दौलत संग्रह अभियान जारी रहे' । भ्रष्टाचार बहुत गहराई तक जड़ें जमा चुका है । किसके आगे शिकायत की जाय ? सभी भ्रष्ट हो चुके हैं । आज हर कोतवाल मुजरिम दिखता है ।

नैतिक पतन की हद हो गयी । दूसरे देशों में भी चोरी, डकैती, व्यभिचार और भ्रष्टाचार होता है । लेकिन वहां पकड़े जाने पर अदालत में दोषी व्यक्ति अपना अपराध स्वीकार कर लेता है । लेकिन हमारे यहां अपराधी स्वयं तो अपराध स्वीकार नहीं ही करता है । सत्ताधारी अपराधी को छुड़ाने के लिए नारा लगाते हैं–जेल का फाटक टूटेगा....? आज देश के कर्ता, धर्ता, कानून के रखवाले कभी सच नहीं बोल पाते । एक भी नेता ऐसा नहीं है जो सच बोल अपना अपराध स्वीकार करे । आज हमारे नेता अपराधी जीवन तथा अपराधी चरित्र के कारण मात्र व्यक्तिगत लाभ और कुर्सी के

लिए सोते-जागते सोचते रहते हैं । इस नैतिक पतन के कारण राष्ट्र की एकता छिन्न-भिन्न हो रही है । यह भ्रष्टाचार इतिहास का एक अविच्छिन्न प्रक्रिया है जिससे प्रबंधकीय ढांचा ने कदाचार का रास्ता अपनाया है ।

पहले विद्यालय चरित्र निर्माणशालाएं समझे जाते थे । छात्र, छात्राएं वहां बौद्धिक, मानसिक और चारित्रिक बल प्राप्त करते थे । सत्यवादिता, कर्तव्यपालन और सदाचार का बीज बोया जाता था । राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, समाज सेवा के संस्कार दिये जाते थे । आज स्कूल में शिक्षा की अर्चना नहीं पद और पैसे का नमन किया जाता है । स्कूल के दूषित वातावरण के कारण कदाचार का बीज छात्र-छात्राओं के कोमल मानस में अंकुरते हैं जो आगे जाकर फलित होते हैं । गलत शिक्षा प्रणाली के कारण युवा पीढ़ी भविष्य के प्रति अनश्चिय की भावनाओं से निस्तेज हो रही है । हमारे अग्रणी नेता युवा-शक्ति का दुरुपयोग करने लगे हैं । किसी राष्ट्र को तरुणायी तरूण वर्ग ही देता है । आज वही तरुण-वर्ग हताश है । शिक्षा व्यापार बन गया है । शिक्षक ही चरित्रवान नहीं हैं तो छात्र को चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा देगा कौन ? आज प्रतिभावान छात्र झाम गुड़ते हैं और जो लफंगा है वह शिक्षक को मनोवांछित राशि देकर मनोनुकूल अंक पाता है । परीक्षा भवन में प्रश्नोत्तर लिखकर शिक्षक पहुंचाते हैं । भ्रष्टाचार तो आज की संस्कृति में रच-बस गया है ।

प्रत्येक क्षेत्र में सुविधाभोगी तत्त्व अंकुरित, फलित, पुष्पित होते-होते विभत्सरूप धारण कर लिया है । पाश्चात्य साहित्यकार न्यूमांट और फ्लेचर ने भ्रष्टाचार की तुलना एक ऐसे वृक्ष से की जिसकी टहनियों की लम्बाई मापी नहीं जा सकती और जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को आक्रान्त कर देता है । आज भारत में उसी स्थिति में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है । छात्र, शिक्षक, अभिभावक, व्यापारी, पत्रकार, साहित्यकार, नेता, सरकारी सेवक से लेकर निम्न आयवर्ग के व्यक्ति कोई भ्रष्टाचार से अछूता नहीं दिखता ।

व्यक्ति का आचरण जिस प्रकार परिवार पर प्रभावी होता है उसी प्रकार समाज और देश पर । अत: व्यक्तिगत भ्रष्टाचार से राष्ट्र अप्रभावित नहीं रह सकता ।

राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न प्रदूषणों की सड़ांध यदि रोकी नहीं गयी तो हम अपने देश को एक ऐसे किनारे पर खड़ा पायेंगे जिसके आगे सर्वनाश के भयावह खड्ड के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा । विकास की गति रुके नहीं, राष्ट्रीय जीवन का सांस थके नहीं इसलिए त्रस्त अथवा भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है । राष्ट्रवादी विचार रखने वाले साहित्यकार, पत्रकार, एवं प्रबुद्धवर्ग इस पहलू पर मनन-चिन्तन कर राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने हेतु मार्ग दर्शन करें । उनके साथ-साथ जनता सहयोग दे । भ्रष्टाचार मुनाफा खोरी, घोटाला अनुचित आय संचय आदि ऐसे दुर्गुण हैं जिसका परित्याग यदि शीघ्रातिशीघ्र नहीं किया गया तो हम जिस शासन प्रणाली की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती सोल्लास मनाने जा रहे हैं उसके योग्य अपने को सिद्ध करने में असफल पायेंगे ।

राजनैतिक इतिहास आज तेजी से करवट बदल रहा है । समय की चुनौती को अब अनदेखा नहीं किया जा सकता । सजग और सचेष्ट रहने की आवश्यकता है । जिस देश की जनता सजग और सचेष्ट रहती है वहां जनतंत्र सदा सुदृढ़ और सशक्त होता है । यह सजगता किसी एक व्यक्ति अथवा किसी एक वर्ग में नहीं । सभी वर्गों के समस्त व्यक्तियों में होनी चाहिए-शासक, प्रशासक, छात्र-छात्रा, शिक्षक, अभिभावक, चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्यकार और पत्रकार । विशेष रूप से साहित्यकार और पत्रकार का दायित्व है नैतिक पुनरुत्थान के लिए आगे आयें । भारतीय साहित्यकारों की यह विशेषता रही है कि वे बाह्य रूप से सुसुप्त दीखते हैं लेकिन समय आने पर सिंहनाद करते हैं । आज उसी सिंहनाद की आवश्यकता है । साहित्यकारों को यह साबित करना होगा कि आज भी कवि भूषण और मैथिलीशरण गुप्त जीवित हैं । क्योंकि **आज देश को बाहरी शत्रु से नहीं देश के आन्तरिक शत्रु जो वर्गभेद, मतभेद, ईर्ष्या, द्वेष,, क्षुद्र-लोभ, मोह भ्रष्टाचार आदि के रूप में सिर उठा रहे हैं उन शत्रुओं के विरुद्ध मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन करने हेतु लिखें ।** स्वार्थ तत्त्व के बढ़ने से देश के तन्तुओं में दुर्बलता आ गयी है । अत: भ्रष्टाचार के विरुद्ध धर्म युद्ध छेड़ना होगा साहित्यकारों को । अन्याय और अत्याचार का सक्रिय विरोध करना होगा ।

भ्रष्टाचार का शमन किये बिना देश प्रगति-पथ पर बढ़ नहीं सकता । आज आवश्यकता है ऐसी शक्तिशाली रचनाओं की जो जनता में और मृतप्राय देश में प्राण फूकें । बन्धुत्व भाव जगाकर कंधा से कंधा मिलाकर अभेद्य मानव-श्रृंखला बनाने की प्रेरणा तथा शक्ति प्रदान करे ।

आज समाचार पत्रों में लोग सिर्फ गीत, गजल, मनुहार या विरह पढ़ना नहीं चाहते और न यह पढ़ना चाहते हैं कि गंगा के पवित्र जल में लाखों श्रद्धालुओं ने स्नान किया । बल्कि आज लोग पढ़ना चाहते हैं कि कितने घोटालेबाजों को कैद की सजा मिली । जो देश को खोखला बनाते जा रहा है वह भ्रष्टाचारी जमानत पर रिहा तो नहीं हो गया ।

साहित्यकारों के समक्ष आज कठिन उत्तरदायित्व है । आज ऐसी रचनाओं की आवश्यकता है जिसे पढ़कर जनता, नेता, प्रशासनिक अधिकारी, कानून के रखवाले, छात्र-छात्राएं, अभिभावक, शिक्षक, पूंजीपति, व्यापारी स्वार्थ छोड़ देशहित में कुछ करने को तत्पर हों ।

अगर देश को बचाना है प्रगति के पथ पर बढ़ाना है तो कलम को तलवार बनाना होगा । साहित्यकारों को सक्रिय हो अपनी अहम् भूमिका निभानी होगी । सत्ताधारी तो समस्त सुविधा भोग रहे हैं । वे भ्रष्टाचार को भगाने में क्यों दिलचस्पी लेंगे ? अतएव भारत को आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, वैचारिक सभी दृष्टियों से सफल बनाने के लिए साहित्यकारों को मार्ग ढूंढ़ना है जिससे भ्रष्टाचार के फैलाये जाल से बचा जा सके ।

भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए प्रत्येक वर्ग को कठोर साधना एवं नैतिक धरातल को ऊंचा उठाना होगा । लोकतंत्र को जीवंत और शक्तिशाली बनाने के लिए नागरिकों को अपने गौरवपूर्ण इतिहास से अवगत कराकर राष्ट्रीयता की भावना जगानी होगी । उन्हें समझाना होगा कि भौगौलिक बन्धन तोड़, लिंग भेद-भाव छोड़ अपने राष्ट्र को सशक्त बनाने का प्रयास करें । अन्यथा भ्रष्टाचार के रक्तबीज रूपी दानव का अन्त नहीं होगा । भ्रष्टाचार को बढ़ाने में चुनाव प्रणाली प्रमुख है । चुनाव में हो रहे भारी खर्च पर नियंत्रण रखना जरूरी है । उम्मीदवार चुनाव जीतने के लिए पानी की तरह पैसा बहाता है । फिर चुनाव जीतने पर उस पैसे को सूद दर सूद वसूलने के लिए जुट जाता है और तब प्रबंधकीय ढांचा भी भ्रष्टाचार की राह पकड़ता है । अगर चुनाव में खर्च सरकारी कोष से किया जाय तो ईमानदार गरीब व्यक्ति भी चुनाव में हिस्सा लेगा और तब स्वच्छ छवि के चरित्रवान व्यक्ति राजनीति में प्रवेश करेंगे जिसका प्रभाव प्रबंधकीय ढांचा पर पड़ेगा । सदाचार के वे सभी तत्त्व जो राष्ट्र के स्वाभिमान और स्वाधीनता के लिए पोषक हैं अंकुरित, फलित और पुष्पित होंगें ।

संपर्क : दक्षिणी जानकी नगर, हनुमान नगर, पटना-20

कहानी

नई पीढ़ी

❑ डा. राजनारायण राय

मामूली मतभेद होने पर भी परिवार के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं । कहने को तो सारा विश्व हमारा कुटुम्ब होता है पर सच तो यह है कि दो भाई भी साथ नहीं रहते । लोग दुश्मन के साथ निबाह लेते हैं, पर भाइयों और संगी-साथियों के साथ नहीं । यही है पश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति की देन जिसे सुप्रसिद्ध रचनाकार डा. राजनारायण राय ने अपनी कहानी नई पीढ़ी के माध्यम से सम्प्रेषित किया है । हार्दिक साधुवाद । **–प्रधान संपादक**

दफ्तर से लौटते-लौटते मैं गहरी थकान का अनुभव करने लगा था सो ड्राइंग रूम में ही दीवान पर बैठ गया । काले जूते और उसी रंग के नायलान मोजे को निकाल फेंकने के बाद लेट गया । लगा कि सिर्फ लेटे रहने से क्या फायदा, अच्छा होगा, छह बजे आने वाले कार्यक्रम को देखूँ । उठा और कोने में पड़े ब्लैक एण्ड ह्वाइट टी.वी. ऑन कर अपनी नजर को उस पर केंद्रित कर दिया । "यह लो । कपड़े बदलो ।" मालती ने कहा । मेरी पैंतालीस वर्षीय पत्नी के इस स्वर में, पहले की तरह, जूठे भगोने, तश्तरी, चम्मच आदि बर्तनों के धोने से पैदा होने वाली न झल्लाहट थी और न चेहरे पर तनाव । अचानक नम्रता, शालीनता और कोमलता महसूस कर अकचकाया ।

मैंने उसके हाथों से लुंगी और शर्ट ले ली, फिर यह सोचकर कि कुछ पल आराम करने पर पहनूंगा, वहीं दीवान पर उसे रख दिया । मालती अपने दोनों हाथों में एक-एक कप चाय पकड़े आई । बायें हाथ की प्याली अपने लिये, खुरदरी, कहीं-कहीं उखड़े पेंट वाली चाकलेटी कलर की डायनिंग टेबिल पर रख ली और दूसरी मेरी ओर बढ़ा दी । मैं उठ बैठा और दायें हाथ से सावधानी के साथ प्याली पकड़ ली क्योंकि एक बूंद गिरने पर भी उसके घंटों बड़बड़ाने और ताने देने का मनचाहा सुअवसर मिल जाता ।

एक चुस्की ले नजर डाली पत्नी पर तो, लगा कि वह चाय पीने से ज्यादा कुछ सोच-विचार कर रही है । अचानक बोली "अरे हाँ ! घर का हाल तो पूछा ही नहीं । सुबह मौका ही कहाँ था स्टेशन से आते ही दफ्तर दौड़ पड़े । पिताजी कैसे हैं ?"

"....." मेरे कुछ कहने के पहले ही प्रश्न भी रखा गया : तीनों भाई प्रमोद, जयंत और नरेन"... ....;

उसकी सवालिया निगाह पैनी थी ।

"सभी सकुशल हैं ।" चाय की सिप लेते संक्षेप में उत्तर दिया मैंने ।

जयंत के तो चौथा होने वाला था न"

"इस बार भी हुई लड़की ।"

अरे, उस घर में तो बच्चों की भीड़ बढ़ती जा रही है । तुम्हारे भाइयों ने जैसे पैदा करने की होड़ लगा रखी हो ।

"मेरे भाइयों ने नहीं । तुम्हारी बहनों नें ।"

"किसे क्या कहना । अपनी-अपनी समझ है ।" कह मालती ने चाय की चुस्की ली, ओठों को गोलकर, एक सवाल फिर लुढ़का दिया : "पहुंचे कब थे घर" लगभग पांच बजे । स्याह चादर पूरी तरह फैलने के पहले ही । पहुंचते ही पिताजी का चरण छू आशीर्वाद लिया । खादी की धोती दी तो मुस्कुराते हुए बोले, अच्छा हुआ आ गए । घर संभालो । "धोती खाट पर रख कहीं जैसे खो गए वे । मेरे पास बंदरों की भीड़ आ गई थी तब तक मिठाई की उम्मीदें लेकर । इस बार बीस-बीस पैसे वाली टॉफी बांटकर छुट्टी पा ली मैंने । कौन कीनने जाए तीस चालीस रुपये किलो मिठाई ।

"गोरकी भौजी से मिलने गई 'कैसी हैं', पत्नी ने फिर एक और प्रश्न फेंक दिया । "कैसे न जाता भला ! कमर में दर्द है सो परेशान रहती हैं । ठेकुआ पकाया जा रहा था-शुद्ध देशी घी में । बड़ी बिटिआ की विदाई थी । फूल की तश्तरी में दो ठेकुआ और उस पर नींबू का आचार रख झट ले आई । कांसे के गिलास में पानी रखती हुई कहने लगी, "घर तो ऊपर से ठीक-ठाक है बउआ । पर है खीरा जैसा, भीतर, फटा-कटा । तीन चूल्हे जलते हैं । बाबूजी टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं । न खाने-पीने की कमी है, न कपड़ों की तंगी । फिर भी पता नहीं, क्यों महाभारत मचाए रहती हैं" ज्यादा संतान, जी का जंजाल ।" ठेकुए को किसी तरह पानी के साथ गटक कर दालान पर आ गया ।" मालती दोनों कप उठा किचेन में चली गई, पर उसके कान खुले ही थे । मैं रौ में बहता गया । पिताजी और मैं दोनों खाने बैठे थे, छत पर बने पश्चिम-उत्तर के कमरे में । परोसा गया था सत्तू भरी रोटी के साथ बैंगन का भुर्त्ता भी । आधी रोटी भी न खा पाया था कि नीचे आंगन से औरतों की चख-चख कानों से टकराने लगी ।

एक ने कहा : "मेरा आदमी रात-दिन खटता रहता है बैल की तरह, बाकी सब मौज मस्ती करते हैं ।"

दूसरी ने कहा, "मेरा खसम क्यों पसीना बहावें कोई लड़की बिआहनी है । अरी मुंहजली, खटो-मरो तुम, केवल लड़कियाँ बिआती हो ।"

"हे भगवान ! अब केवल बेटियाँ ही दो इसके कोख में ।" पहली की दीनता भरी आवाज आई ।

"खेतों में टांगे वह सड़ावे जो गंवार है । मेरा तो मैट्रिक है । कोई जाहिल है जो काम करेगा । कलम चलावेगा किसी ऑफिस में । बताये देती हूँ, "मुझसे नहीं बनता इतने लोगों का खाना-पकाना । अब तुम लोग करो ।" शायद ये लफ्ज थे नरेन की जीवन-संगिनी के, जो दसवीं में दो बार फेल हो गई थी ।

"कैसे बनेगा । फुलवारानी जो ठहरी ।" हाँ, हाँ । हूँ तो । कोई क्या कर लेगा' किसी की धौंस नहीं सहूँगी । मेरे बाउजी ने बीस हजार भांड़ झोंकने को नहीं दिया था । हाँ !" मैं बेस्वाद निवाला निगलता रहा, थुक्का-फजीहत को सुनता हुआ । पिताजी की आँखों में आँसू छलछला पड़े । अल्मुनियम की थाली में प्याज के कुछ कत्ले, कुछ अधपकी, कुछ अधजली रोटियाँ पड़ी रहीं । खाने के लिए अनुरोध किया, कई तरह से समझाकर, पर वे नहीं माने । उनके खोखले मुंह से बुदबुदाहट सुनाई पड़ी, "भूख नहीं है ।"

रात के धुप्प अंधेरे में महसूस करता रहा कि दादी की बनाई गेंदरे पर वे लेटते हैं, कभी करवटें बदल रहे हैं, दो मिनट भी नहीं हुए कि उठकर बैठ रहे हैं, कभी खिड़की से अनंत अंधकार को ताक रहे हैं जैसे रोशनी की तलाश कर रहे हों । कभी चक्कर लगा रहे हैं । उनकी आँखों में नींद थी कहाँ ?

याद आ रहा है । एक बार सोते से जगाया था उन्होंने । बताने लगे मन की व्यथा, "क्या-क्या कहूँ तुमसे ! तीनों भाई घर में ही रहेंगे पर पशुओं को कोई चारा-पानी नहीं डालेगा । इसी वजह से भैंस बिसूख गई, हाल ही में खरीदा गया, कमाऊ बैल उठ गया । खेतों पर कोई नहीं आता । समझते हैं, बर्बाद होता है तो रामदास का ।" इतना कह सूनी आँखों से छत को देखते रहे, अपलक ।

मालती दाल में छौंक लगा चुकी थी । उसकी सुगंध लगते ही मैं जान लेता हूँ कि सुबह की पकी दाल को ताजा और स्वाद्य बनाया जा रहा है ।

मैं कहने लगा : "तुम्हें याद है न एक पचास वर्ष की औरत अचानक आ टपकी, अपने दामाद के लिए दाल मांगने आई थी ।"

"हाँ हाँ खूब याद है । दबा-पिचका कटोरा था हाथ में" मालती ने कहा ।

सुबह उत्तर जाने वाली गली में निकला तो रास्ते में वही चाची मिली । एक हाथ में बाल्टी, दूसरे में उगहन पकड़े । अभिवादन करते ही फट पड़ी, "बबुआ विनोद....घर-गांव त्याग दिया तो

क्या मालूम होगा। अब रामदास का परिवार टूट-बिखर कर रहेगा। घर फूटे गंवार लूटे। कोई क्या करे भला। मौका मिलते ही जिसे जो कुछ हाथ लगता है, चावल, चना, मसूर, गेहूँ आदि, सीधे कल्लू की दूकान पर चोरी-चोरी बेचआते हैं। वही कल्लू, लंगड़ा, डंडी मारने में माहिर। गांव-गवई की दुकान तो फूलती-फलती है चोरिका से ही। अचानक उसे कुछ याद आया तो झट बोली "टैम निकालकर आना" कुछ ही क्षणों में ढहतीं दीवारों वाले घर में घुस गई।

मैं आगे बढ़ा। दोनों तरफ बहती गंदी नालियों से उड़ती बदबू को झेलता, दीवारों पर चिपकाये-थापे उपलों पर से उड़ते मच्छरों और मक्खियों से बचता-बचाता। बीस कदम से आगे कहाँ जा सका। लौट आना पड़ा।

मालती डायनिंग टेबल पर रोटी, दाल, एक सब्जी रख बोली, "भोजन पहले, आप-बीती बाद में।"

कुर्सी पर बैठकर मालती ने प्रश्नाकुल नजरें मुझ पर गड़ा दीं जैसे जानना चाहती हो कि आगे क्या किया।

शेष भाग, कथा का, बताने लगा, "पिछले शुक्रवार को तीनों भाइयों को बुलाया और समझाते हुए, स्नेह भरे स्वर में कहा, "अगर हम सब साथ नहीं रह सकते तो बंटवारा करने में देर न करो। लेकिन यह फैसला करने के पहले खूब अच्छी तरह सोच लो। वह भी अकेले नहीं अपनी-अपनी पत्नी के साथ तीनों बैठकर। बंटवारे का लाभ यह होगा कि तीनों सपत्नीक रात-दिन खूब मिहनत मशक्कत करोगे, पिताजी के अंकुश से मुक्त होकर, स्वच्छंद होकर खर्च-वर्च करोगे, मगर घाटे भी कम न होंगे। न भतीजियों के लायक सुयोग्य घर-वर ढूंढ पाओगे और न भतीजों को शहर में रखकर महंगी शिक्षा दिलवा पाओगे। बड़े हित के लिए छोटी इच्छाओं की बलि देनी होती है। सोचकर कल बताना। "सब चले गए"।

"सब मान गए" मालती ने एक गिलास पानी गले से उतारने के बाद पूछा। "हाँ ! और क्या ! आंखें खुल गई उनकी।" मैंने उल्लास में कहा। "तुम तो गए थे बंटवारा करने न' कर आये' जानती थी। तुम बछिया के ताऊ से कुछ न होगा। देखते रहो भाइयों भतीजों को। सबों ने ठेंगा न दिखा दिया तो..." कहती हुई मालती तमककर उठी और जूठे बर्तनों को समेटने लगी "और कुछ लेंगे क्या दूँ जैसे आग्रह भरे वाक्य मेरे कान खोजते रहे।

पत्नी के आग्नेय नेत्रों और कटु वाक्यों से बचने के लिए मैं सीधा आ गया अपनी कॉट पर। बेड स्विच ऑन किया ही था कि मालती का स्वर टकराया, "पत्र-पत्रिकाएं, जितना कुछ पोस्टमैन दे गया है वहीं है सब, छोटी मेज पर।"

स्थानीय अखबारों, त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिकाओं, कार्डों पर एक सरसरी निगाह डाल उन्हें संजोकर रखता गया। उनमें एक लिफाफा निकल आया। लिखावट मर आत्मज सुधेंदु की थी, गोल-गोल, खूबसूरत, पुष्ट अक्षर, साफ-साफ। कई माह के बाद आया यह पत्र हर्षित कर ही रहा था कि लिफाफे को खोल बैठा। "अरे यह तो है उसकी मॉम के नाम" यह देख "मालती" मैंने आवाज दी, "दिल्ली से पत्र आया है सुधु का" ...." कोई उत्तर नहीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं। गुस्से में होगी या सो गई होगी, यह मान पत्र पढ़ने लगा।

दिल्ली-32

20.11.87

डियर मॉम,

चरण स्पर्श

तुम्हारी बनायी-पकायी मठरी बेहद स्वादिष्ट लगी। मगर, एक दो ही मिल पाई मुझे, वह भी छीना-झपटी करने पर। सब चट कर गई तुम्हारी लाडली। अब कब भेजोगी ? तुमने लिखा कि डैडी गांव गए हैं, बंटवारा करने। 'सच बंटवारा करके अपने हिस्से की प्रापर्टी ले लें तो हम सबकी गरीबी दूर हो जाए। गांव का एक भू-खण्ड बेचकर सहारनपुर में एक छोटा-सा मकान क्यों नहीं बनवा लेते 'डैडी' ? सेवा-निवृत्ति के रह ही गए हैं कितने साल ? फिर ओल्ड एज में, मॉम, कन्स्ट्रक्शन करवाना बड़ा कठिन होता है।

मम्मी, एक दिन तुम्हारी बहू पूछ रही थी कि गांव की भू-संपदा में से मेरा हिस्सा कब तक मिलेगा दिल्ली में एक फ्लैट खरीदना चाहती हूँ। मैंने उसे डांटा कि मम्मी डैडी के रहते ऐसी बातें करते शर्म नहीं आती तुम्हें। मेंहदी का रंग अभी छूटा नहीं और लगी बहकी-बहकी बातें करने। पगली, बेवकूफ ! पर क्या ऐसा करना गलत है मॉम।

इसके आगे मैं पढ़ नहीं पाया। पहले आश्चर्य क्रोध का मिला-जुला भाव चेहरे पर उभर आया। फिर किंकर्त्तव्यविमूढ़ता का धुंधलापन जो धीरे-धीरे गहरा होता गया। लगा, यह पत्र जैसे सांप हो जो फुंफकारता सूंघ रहा है। उसे फौरन फेंक कर एक लम्बी सांस ली। आंखें बंद कर लीं, पर सोच में गहरे डूबता गया : अण्डे के इस शाहजादे को अभी से जायदाद में हिस्सा चाहिए। नौकरी मिले तीन साल भी तो नहीं गुजरे। तुम्हारा बड़ा भाई अमलेंदु है, लखनऊ में कार्यरत, कनिष्ठ इंजीनियर के पद पर, लगभग पंद्रह सौ पाने वाला, मगर उसने कभी मुँह नहीं खोला। बदतमीज, अच्छी से अच्छी शिक्षा दी थी तुम्हें पेट काटकर, औकात से ज्यादा खर्चकर, एक मशहूर पब्लिक स्कूल में। क्या इसीलिए कि कहीं टिकते ही अपना एक हिस्सा ढूंढने लगो, मकान-दूकान की बात करने लगो। उसमें भी पैतृक संपत्ति बेंच-फेंककर। कौन कहता है अपना घोंसला न बनाओ पर दूसरे के तिनकों को नोच कर नहीं......दम है तो लाखों कमाओ, दिल्ली में मकान और फ्लैट क्या, आलीशान बिल्डिंग बनवाओ ऐश करो। कौन रोकता है तुम्हें ! पर इधर मत झांको, लपकने-लूटने को। लगा, मुझसे बेहतर स्थिति में बाबूजी रहे जिन्हें सत्तर साल की लम्बी जीवन-यात्रा करने पर झेलना पड़ रहा है अलगाव का दर्द मुझे तो 50 को भी पूरा करने का सौभाग्य कहाँ मिलेगा। मिलेगा कैसे मैं तो तुम्हारा डैडी हूँ। पिताजी या बाबूजी नहीं, टाई सूट में बना-ठना, दफ्तर का हेड क्लर्क.... खूबसूरत मुखौटे में अपनी सूरत छिपाये नगर का अदना आदमी हूँ। चला है, अपना हिस्सा खोजने। नौकरी तो तलाश न कर पाया अपने लिए। रहा परीक्षाओं में भी थर्ड डिवीजनर : अब तीस मार खाँ बन रहे हैं। क्रोध के सैलाब में सोचता डूब गया था। फिर कुछ सोच कॉट से उठा, सिगरेट सुलगाई इस उम्मीद में उसका धुआं कुछ राहत देगा। चार-पांच कश खींचते-खींचते मैं बैठ गया पत्रोत्तर लिखने।

सहारनपुर

28.11.97

डियर सुधेंदु,

शुभाशीष !

मॉम के नाम लिखे पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ा। एक बार नहीं दो बार तुम्हारी आकांक्षाओं से अवगत हुआ। याद है मुझे : कहा था तुमने कि सहारनपुर भला कोई जगह है जहाँ कोई रिहाइश बनवाये। आश्चर्य हुआ यह जानकर कि तुम्हें महानगर पसंद आया जो फ्लैट-फ्रीज, कार-कुत्ता, कमीशन कैबरे की कल्चर में डूबता जा रहा है। किसे फुर्सत है वहाँ पराये दिल की धड़कन सुनने की ? फ्लैट बुक कराओ शौक से, पर, सन्नी, याद है न कि जिस कुर्सी पर बैठे हो उसे खरीदने के लिए बीस हजार रुपये दिए गए थे। वह रकम बैंक को देय है। कब तक चुका रहे हो ?

अनु परीक्षा में बैठ रही है ? पेपर कैसे रहे, लिखना।

तुम्हारा डैड

विनोद

पत्र को लिफाफे में डाल एक लम्बी सांस ली। मुंह तक कम्बल खींच बेड स्विच ऑफ कर दी।

सुबह की आठ बजे वाली मरियल-सी धूप पसर गई थी। दफ्तर जाने की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी थी। रेक्जिन के काले बैग में हाथ डालकर टटोल लिया और निश्चिंत हो गया कि चश्मा, कलम, आइडेंटिटी कार्ड, सब्जी की थैली सब है। टेबिल पर पड़े उपन्यास को हटाते ही उसमें से एक पोस्ट कार्ड साईज का फोटो गिर पड़ा, फर्श पर। उसे उठाने को मेरा दाहिना हाथ झुका ही था कि अचानक रुक गया। लगा कि यह किसी अजनबी का है मेरे आत्मज सुधेंदु का नहीं, मोहक मुस्कान के पीछे एक खौफनाक खुदगर्जी छिपी है।

बैग ले मैं कमरे से बाहर निकल आया, बिना उसे उठाये सहेजे।

संपर्क : 'नारायणीयम्', 227 पंडितवाड़ी
पत्रा.-प्रेमनगर, देहरादून

रेणु की कथाओं में साधारण की प्रतिष्ठा के लिए विचार-धारात्मक संघर्ष

❒ प्रो. (डा.) लखन लाल सिंह 'आरोही'

युगीय चेतना, जनतंत्र और आधुनिकता के प्रभाव ने साहित्य में जनसाधारण के प्रवेश को संभव बना दिया जिसका चरम उन्मेष हम रेणु की कथाओं में पाते हैं । रेणु का सम्पूर्ण साहित्य साधारण की अभिव्यक्ति का साहित्य है जो हिन्दी साहित्य के कथा-जगत् में अपनी अलग पहचान रखता है ! यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि हिन्दी में प्रेमचंद के बाद 'रेणु' ने ही अपनी गहरी मानवीय संवेदना से समाज के उपेक्षित, शोषित, दलित एवं पिछड़े समुदाय को सम्पूर्णता में चित्रित कर उन्हें सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की है । यह कथा शिल्पी 'रेणु' की साधारण जन के प्रति उनकी गहरी संवेदना का परिचायक और प्रतिफल है ।

साधारण के प्रति रेणु की सच्ची और गहरी संवेदना आकस्मिक नहीं है । 'रेणु' पूर्णियाँ के जिस औराही गाँव के समाज में पैदा हुए थे-वह नितांत पिछड़ा एवं दलित समाज है । 'रेणु' ने इसी समाज में पल-बढ़कर होश संभाला था । इसलिए उन्हें इस समाज को निकट से देखने का ही नहीं-इसके साथ जीने का अवसर भी मिला था । सामाजिक घनिष्टता के कारण वे अपने समाज से अद्वैतभाव से जुड़ गये थे । शोषित, पीड़ित के प्रति संवेदना के स्तर पर गहरे लगाव एवं चेतना से लैस रेणु जैसा आदमी समाजवादी विचारधारा का ध्वजवाहक बनकर साधारण की प्रतिष्ठा और उनके कष्टनिवारण के लिए संघर्ष एवं आंदोलन में अगुवाई करते दिखाई पड़े, तो आश्चर्य क्या ? साधारण के प्रति गहरे लगाव-जुड़ाव ने इस कालजयी कथाशिल्पी को अगर एक ओर राजनीति से जोड़ दिया था, तो दूसरी ओर कथा साहित्य से । रेणु की राजनीतिक चेतना संवेदना में ढलकर उनके कथा साहित्य में अभिव्यक्त हुई है । राजनीति हो या साहित्य रेणु हर जगह साधारण के साथ हैं । रेणु साधारण जन के साथ क्या, वे तो साधारण के बीच की उपज थे इसलिए साधारण से अभिन्न थे-अद्वैत थे । रेणु की पीड़ा में साधारण की पीड़ा ध्वनित होती थी और साधारण की पीड़ा रेणु को व्यथित/बेचैन कर देती थी । रेणु का सम्पूर्ण कथा-साहित्य साधारण जन की पीड़ा और समाज में सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष का आह्वान है ! रेणु के सामाजिक न्याय से वंचित पात्र सम्मान के लिए हर जगह जुझारू तेवर में संघर्षरत हैं । रेणु का कथा-साहित्य साधारण की प्रतिष्ठा के लिए ही समर्पित है, प्रतिबद्ध है ।

रेणु को हिन्दी कथा साहित्य में प्रतिष्ठित करने का श्रेय उनके चर्चित आंचलिक उपन्यास 'मैला आंचल' को है । इस उपन्यास के पिछड़े-दलित पात्र सामन्ती एवं ब्राह्मणवादी व्यवस्था में जीकर भी अपने सम्मान के प्रति सजग हैं और मान-सम्मान के लिए सामन्तों और ब्राह्मणवादियों से जूझते रहते हैं । न वे डर से पीड़ित हैं और न समर्पण के लिए तैयार । इनकी दबंगता से सामन्त भी भयभीत हैं । ऊँची जाति का तहसीलदार हरगौरी बाबू गरीब यादव जाति के कालीचरन को 'जी' कहते हैं । सामन्तों को वह ललकारते हुए कहता है-"रैयतों से जमीन छुड़ाना हँसी ठठा नहीं" । कालीचरन, सदैव मान-सम्मान और हक-अधिकार के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार रहता है । कालीचरन गरीब होकर भी चमार टोली में भात खाता है । वह खुलकर कहता है-"जात दो ही है-एक अमीर और दूसरा गरीब ! खेलावन (अमीर यादव) को देखो, यादवों की ही जमीन हड़प रहा है ।" जमीन की नई बन्दोबस्ती ने सभी पिछड़ों-दलितों को एक कर दिया है और सामन्तों के विरुद्ध खड़ा कर दिया है । उन्होंने सामन्तों के यहां काम करना बंद कर दिया है नतीजा यह है कि किसी की दाढ़ी बढ़ी हुई है-किसी के घर पर गाय मरी पड़ी है । "मैला आंचल" में कालीचरन के रूप में रेणु पीड़ितों, दलितों और उपेक्षितों के मान-सम्मान और हक के लिए पूरी संवेदना के साथ सामंतों के विरुद्ध संघर्षरत हैं और कालीचरन के स्वर में बोलते हैं-"वह जमाना चला गया जब राजपूत-बाभन टोली के लोग बात-बात में लात, जूता चलाते थे....मैं आप लोगों के दिलों में आग लगाना चाहता हूँ....आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का पूरा हक मिलना चाहिए" । साधारण में बड़प्पन के दर्शन कराना कथा शिल्पी रेणु का विशिष्ट साहित्यिक अवदान है । "मैला आंचल" का बावन दास ऐसा ही पात्र है जो गांधीवादी है, स्वतंत्रता सेनानी है-चरित्र पर कोई दाग नहीं-आजादी की लड़ाई में तपकर कुंदन है-बावन दास ! आजाद भारत में हर जगह भ्रष्टाचार देखकर बावन दास उदास रहता है और एक दिन भारत-पाक सीमा पर भ्रष्टाचार के खिलाफ अड़ने के कारण महात्मा गांधी के श्राद्ध दिवस पर शहीद हो जाता है । पाठकों का मन बावन दास की पुण्य स्मृति में श्रद्धा से झुक जाता है । यह है रेणु की कलम जो माटी में देवता के दर्शन कराती है ।

"परती-परिकथा" कथाशिल्पी रेणु का दूसरा आंचलिक उपन्यास है जिसमें पात्रों की भीड़ में पिछड़ी जाति का लुत्तो सामाजिक न्याय से वंचित समुदाय के सम्मान के लिए ब्राह्मणवादियों से निर्भीकता से संघर्ष करता है । लुत्तो ने बचपन में अपने बाप को एक ब्राह्मण से दागते देखा था । उसी समय से लुत्तो के मन में ब्राह्मणवादियों के खिलाफ आग भर गई थी । लुत्तो अपने गांव में पिछड़ों-दलितों का मसीहा और योद्धा बन जाता है । वंचितों के विरुद्ध हर अन्याय के खिलाफ लुत्तो खड़ा दिखाई पड़ता है । लुत्तो उपेक्षितों को कहता है "करो नौकरी, लेकिन शान से करो....गाली दे तो पहले चेता दो, दूसरी बार गाली दे तो कहो गाली का जबाव गाली से देंगे ।" गाँव की गरीब बहू-बेटी की इज्जत से खिलवाड़ करने वाले जमींदार जीतेन्द्र मिश्र के खिलाफ चेतावनी देते कहता है-"हर बदचलन आदमी से होशियार ! आपकी बहु-बेटियों की इज्जत खतरे में है ।" परती-परिकथा आरंभ से अंत तक लुत्तो की जीवंत गतिविधियों से आक्रांत है । वह पिछड़ों-दलितों का नेता है । इसलिए उपेक्षितों के हर मोर्चे पर लुत्तो का दबंग चरित्र इतनी आत्मीयता से इंगित किया है कि लुत्तो कल्पना प्रभूत न होकर हाड़-मांस का व्यक्ति मालूम पड़ता है । ऐसा इसलिए है कि स्वयं कथाकार रेणु ने लुत्तो के रूप में गरीबों के योद्धा के रूप में अपने को प्रस्तुत किया है । उपन्यासों के समान रेणु ने अपनी कहानियों में भी

साधारण की प्रतिष्ठा को स्वर दिया है । 'पंचलाइट' कहानी में महतो टोली के पंचों द्वारा खरीदे गये पेट्रोमेक्स को ब्राह्मण टोले का फुटंगी झा 'लालटेन' कहते हैं तो अपमान-बोध से आहत होकर महतो उबल पड़ता है–"देखते नहीं हैं पंचलैट है । बाभन टोली के लोग ऐसे ही ताब करते हैं। अपने घर की ढिबरी को बिजली बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन ।" 'ठेंस' कहानी का गरीब सिरचन स्वाभिमान का अवतार है । अमीर मालिक से रूखा व्यवहार पाकर सिरचन उसके यहां काम करना बंद कर देता है । गरीब है सिरचन तो क्या ? सम्मान का तो गरीब नहीं है ! इसलिए सम्मान पर ठेंस लगते ही सिरचन का स्वाभिमान फुफ्कार उठता है । रेणु के गरीब पात्रों में तो स्वाभिमान सहज रूप से लैश मालूम पड़ता है । 'आत्मसाक्षी' कहानी के गनपत को जब दारोगा आश्रम का चपरासी कहता है तो गनपत यह कहते हुए दारोगा पर बरस पड़ता है–"तुम-ताम मत बोलिए । मैं चपरासी नहीं किसी का ।" और "एक आदिम राशि की महक" शीर्षक कहानी का करमा सरसतिया के प्रेम में बंध कर स्टेशन मास्टर बाबू का साथ छोड़ देता है । वह सरसतिया के साथ रहेगा-बाबू की गुलामी नहीं करेगा । इसलिए करमा चलती गाड़ी से उतर जाता है । "तीसरी कसम" कहानी का गाड़ीवान हिरामन हीराबाई के प्रेम में आपादमस्तक डूबा हुआ है । वह गरीब होकर भी प्रेम के आगे रुपए को ठुकरा देता है ! स्टेशन पर विदा होने के समय हीराबाई द्वारा हिरामन को चादर खरीदने के लिए रुपया देने पर वह बोल उठता है–"इस्स ! हरदम रुपया-पैसा ! रखिए रुपया !" और हीराबाई को किसी के द्वारा रंडी कहने पर हिरामन मार करने पर उतारू हो जाता है"–कौन कहता है कि रण्डी है !......मारो साले को ! मारो ! तेरी !"

कथा लेखक अपने-प्रतिनिधि चरित्रों के माध्यम से अपनी कथा-कहानियों में अपने विचारों को व्यक्त करता है और उसके लिए संघर्ष करता है !

संपर्क : पूर्व प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
ग्राम-खैरा, पत्रा.-पतसौरी खैरा, भाया-रजौन,
जिला-बांका

राष्ट्रीय विचार मंच

सदस्यता फॉर्म

हम राष्ट्रीय विचार मंच के वार्षिक/आजीवन/संरक्षक/संपोषक सदस्य बनना चाहते हैं। वार्षिक आजीवन/संरक्षक/संपोषक सदस्यता शुल्क........../..............................रूपये मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चेक संख्या .... दिनांक...............भेज रहे हैं ।

नाम...

पता...

....पिन कोड..........................

सदस्यता शुल्क

		भारत	विदेश
वार्षिक	-	25 रूपये	2 डॉलर
आजीवन	-	500 रूपये	20 डॉलर
संरक्षक	-	1000 रूपये	50 डॉलर
संपोषक	-	2000 रूपये	100 डॉलर

सदस्यता के लिए संपर्क करें :

महासचिव/कोषाध्यक्ष

राष्ट्रीय विचार मंच, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष : 228519

नोट : बैंक ड्राफ्ट/चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम से देय होगा ।

अटल जी की तीन कविताएं

❒ अटल बिहारी वाजपेयी

भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के वर्ष 1995 में प्रकाशित काव्य-संकलन 'मेरी इक्यावन कविताएं' की आठ कविताओं को अपना स्वर दिया भारतीय संगीत की बारीकियों को आत्मसात करने वाली सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती पदम्जा फेन्नी जोगलेकर ने । इन कविताओं का इस्तेमाल करने के लिए श्री वाजपेयी की स्वीकृति के बाद भी महाराष्ट्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी से श्रीमती पदम्जा को कैसेट जारी करने की अनुमति नहीं मिली थी । किन्तु न्याय की गुहार के लिए दायर रिट याचिका के उपरान्त मुम्बई उच्च न्यायालय ने हस्तक्षेप किया तथा चुनाव आयोग को अटल जी की कविताओं पर तैयार ऑडियो कैसेट 'गीत नया गाता हूँ' को जारी करने की हरी झंडी देनी पड़ी । इन कविताओं का साहित्यिक मूल्य है । उनमें से प्रस्तुत है यहाँ उनकी तीन कविताएं – **प्रधान संपादक**

गीत नया गाता हूँ

गीत नया गाता हूँ
टूटे हुए तारों से फूटे वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ ।
गीत नया गाता हूँ ।
टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी ?
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी ।
हार नहीं मानूँगा
रार नई ठानूँगा
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ ।
गीत नया गाता हूँ ।

जीवन की ढलने लगी साँझ

जीवन की ढलने लगी साँझ
उमर घट गई
डगर कट कई
जीवन की ढलने लगी साँझ ।
बदलें हैं अर्थ
शब्द हुए व्यर्थ
शांति बिना खुशियाँ हैं बाँझ ।
सपनों से मीत
बिखरा संगीत
ठिठक रहे पाँव और झिझक रही झाँझ ।
जीवन की ढलने लगी साँझ

रोते-रोत रात सो गई

झुकी न अलकें
झंपी न पलकें
सुधियों की बारात खो गई ।
दर्द पुराना
मीत न जाना,
बातों में ही प्रात हो गई ।
घुमड़ी बदली,
बूँद न निकली,
बिछुड़न ऐसी व्यथा बो गई ।

संपर्क : 7, रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली

परदेशी की दो कविताएं

❒ डॉ. राजेन्द्र परदेशी

सोंचने की जरूरत नहीं

कहा था
घुटने टेकने को
लोग लेट गये
भय ने–
बांध तोड़ दिया
गूंगे/बोलने लगे
मौन साधक
गालियां देने लगे
कल्पना के विपरीत
घटना घटी
दहशत से–
पागल हो गये हैं
रात-दिन स्वप्न देखते हैं
महाभारत रचा जा रहा है
पुराने संदर्भों को जोड़कर
चक्रव्यूह गढ़ा जा रहा है
भय से चिल्ला रहे हैं
भीड़ एकत्रित कर रहे है
कल्पना के सहारे
बालू की दीवार खड़ी हो गयी
है
छत पड़ेगी या नहीं
सोचने की जरूरत नहीं
किन्तु–
बंटवारे का निर्णय हो चुका है
जो निश्चित है
वही होगा-
और कुछ होगा
तो पुराने संदर्भों से ही जुड़ा होगा
वर्षों से जिसका अनुकरण कर रहे हैं
अपनी अस्मिता की
पहचान कर रहे हैं

कैसी विडम्बना है

अपना झंडा
अपना डंडा लेकर निकले हैं
सबके सब
अपनी घात में बैठे
दृष्टि टिकाये हैं
मूर्ख बनाने के लिए
जाल बिछाये हैं
कुछ जाति के नाम पर
कुछ धर्म के नाम पर
जो बच जाते हैं
उन्हें भी बांटने का प्रयास होता है
कैसी विडम्बना है
कि सियासत के फरिश्ते
सिद्धान्त के नाम पर
मनुष्यता के दाम पर
करते हैं
मनुष्यता को झंझी कौड़ियों
पर नीलाम

संपर्क : 326-रामगुलाम टोला, देवरिया (उ.प्र.)-274001

दो चार क्षण मैं हांफ लूंगी....

❒ निर्मला जोशी

हां, तुम्हारे साथ चलना अब मुझे स्वीकार होगा,
किंतु, तुम छाया गहोगे और मैं परिताप लूंगी ।

एक अधर से मुझे तुमने सरस
उद्‌भावना दी ।
गीत की अंतिम कड़ी के रूप में
शुभकामना दी ।

चाहती हूं कि अक्षय-वर तुम्हें लंबी उमर दे,
इसलिये मैं इस जगत् से दान में अभिशाप लूंगी ।

शीशा पर सूरज, कंटीले पंथ
पर चलना कठिन था ।
और मन को छांव की आशा
दिला, छलना कठिन था ।

दरस तो अधिकार मेरा क्योंकि तुम मन में बसे हो
तुम मुझे परसो न परसो, कल्पना से भांप लूंगी ।

लौट मत जाना हृदय के द्वार
की सांकल खुली है ।
और पहली बार प्राणों में
मधुर मिश्री घुली है ।

तुम मुझे अपनी चरण-रज से भले वंचित रखो
पर, मुझे प्रतिदिन सुनाई दे वही पद-चाप लूंगी ।

आंसुओं के साथ पीड़ा ले
चुकी है सात फेरे ।
किंतु, तुम हरने न पाये
आजतक संताप मेरे ।

मैं अकेली चल न पाउंगी किसी सूनी डगर पर
पेड़ के नीचे रुको दो-चार क्षण मैं हांफ लूंगी ।

संपर्क : एल-318, ई-7, अरेरा कॉलोनी
भोपाल-462016 (म.प्र.)

दिल्ली की गद्दी

– राजेश "चंदन"

बजा दी है रणभेरी
चुनाव आयुक्तों ने
चुनाव की ...
और
मच गई है हलचल चौराहे और गलियारों में ।
निकल पड़े हैं ......
अपराधी व गुंडे
राजनीतिक योद्धाओं का
कवच धारण कर,
रथों व
रैलियों के साथ ...
खोखले घोषणा पत्रों, लुभावने नारे
स्वार्थी मुद्दों के अस्त्र–शस्त्रों से लैश
हर योद्धा विरोधियों के मध्य शंखनाद करता हुआ
अपने कारवाँ के हौसलों को
बुलन्द करता नजर आ रहा है ......
बस
उनकी निगाहें टिकी हैं
अपनी मंजिल
सुखों की सेज
धरती का स्वर्ग और
"दिल्ली की गद्दी"

संपर्क : ग्राम-पो.-शूजापुर
भाया-सेमापुर
जिला-कटिहार (बिहार)

राष्ट्र

❒ नलिनीकान्त

आयोग से घिरा
आज राष्ट्र हमारा
हांफ रहा हिमालय से लेकर
सिन्धु तक देश सारा ।
हाईकोर्ट और सुप्रिमकोर्ट में
गिरवी है रखा पड़ा
जाने कब से
आचरण चरित्र हमारा ।
जंगल का राज है
रंगे सियारों के दंगल का जमाना
राजधानियों में चंबलवाले
नाच नाच गा रहे लूट का गाना ।

संपर्क : संपादक, 'कविताश्री'
अण्डाल, प. बंगाल

दोहे नये दौर के

❑ डा॰ रामनिवास 'मानव'

राजनीति कुल्टा भई, उल्टा - पुल्टा ढंग ।
आगे-पीछे धूमते, सारे नंग-मनंग ।

आजादी को क्या कहें, खूब चढ़ी परवान ।
लूटमार-दंगे हुये, नये अरथ के मान ।

बम, बिस्फोटक, गोलियां, दंगे और फसाद ।
कहते कथा विकास की, खूब दीजिये दाद ।

की तरक्की देश ने, खबर छपी अखबार ।
जाने क्यों होता नहीं, होरी को इतवार ।

फसल उगाई राम ने, काट ले गया श्याम ।
होता क्यों हर बार ये, बोलो मेरे राम ।

इक काना, इक कूबड़ा, मणि-कंचन सुयोग ।
नये दौर के योग्य हैं, सचमुच ऐसे लोग ।

तुमने हमको क्या दिया, अरी सदी बेपीर ।
छुरी, मुखौटे, कैंचियाँ, और विषैले तीर ।

मन गिरवी, तन बंधुआ, सांस हुई गुलाम ।
घुटन करे इस दौर में, जीयें कैसे राम ।

अरी गरीबी तुझसे है, इतनी विनती आज ।
हम से बच मत छीन तू, सूखी रोटी- प्याज ।

बाप बिचारा क्या करें, बेटी जिसके सात ।
शादी निपटी, आ पड़े, सिर पर छूछक - भात ।

जीवन अब ऐसे हुआ, जैसे बुझा अलाव ।
राख-राख खुशियां हुई, जले-बुझे सब चाव ।

क्यों पद पाकर बन जाता, नेता यहाँ नवाब ।
मुझको दे ऐ व्यवस्था, इसका सही जवाब।

संपर्क :-प्रवक्ता, सी. आर. एम. जाट कॉलेज,
हिसार-125001 (हरियाणा)

मेरा देश

❑ बाल कवि 'प्यासा'

देश की नैया है मझधार । ठेकेदारी ठोक ठोक कर, करती भ्रष्टाचार ।।
या बेईमानी तेरा आसरा, मूलमन्त्र आधार ।
कर्णधार ने काले धन से, भर दिये घरवार ।।
अर्धशक्ति की आजादी का कैसा बन्टाढार ।
कोई किसी की परवा करे क्यों अंधा भी बटमार ।।
मेरा देश महान बना तो, काहेको लाचार ।
देश से अधिक विदेश से आये, धन दौलत व्यापार ।।
मजदूरी देने लेने में, पक्षपात व्यवहार ।
जिसकी लाठी भैंस उसीकी दूध पियें दमदार ।।
खूब खचाखच यात्री जैसे, भेंड़ों की भरमार ।
फिर भी किराये बढ़ते जायें, रेलों के हरबार ।।
चबूतरों फुटपाथों, पुलियों , पर भी सोवनहार ।
भीख माँगने भारतवासी, जायें सागर पार ।
महानगर में मरते मरते, जीना हो दुष्वार ।
अक्खड़बाजी पगपग जैसे, लड़ने को हमवार ।।
मर्यादा को ताक चढ़ाकर, पश्चिम से वीचार ।
जगदगुरू, भारत को दीक्षा देवे मिथ्याचार ।।
स्वारथ में लिपटे लोंगों से, दुर्जनता बौछार ।
धक्के देकर खुद चढ़ जायें, रेलों में खूँखार ।।
तोड़फोड़ की कार्यवाही, बैर विरोध विकार ।
जों रूठें सो आग लगाकर, करते अत्याचार ।।

संपर्क : क्वार्टर नं. सी-337, सी.जी.एस. कॉलोनी
भाण्डूप (पू.) मुम्बई-42

ग़ज़ल

सिरफिरों की बस्तियाँ हैं सिरफिरे हैं लोग
बारुदों की पोटली ले क्यूँ खड़े हैं लोग
गिर पड़ा दरख्त तो ये घोंसले किधर
कुल्हाड़ियाँ लिए हुए क्यूँ खड़े हैं लोग
फूलों के बगान से आ रही है चीख
कलियों को रौंद रहे कौन से हैं लोग
लहलहाते फसल में है जिनकी जवानियाँ
पेट चांपे चुपचाप क्यूँ पड़े हैं लोग
नीम सी मंहगाई है हाथ हो गये ठूंठ
बन्द तालाब सा क्यूं पड़े हैं लोग
आदमी की भीड़ में पड़ी हुई है लाश
चुपचाप बुत बने क्यूँ खड़े हैं लोग
झोपड़ी उदास है हँस रही अट्टारियाँ
भगत सिंह के देश में क्यूँ मरे हैं लोग

❑ हरीन्द्र विद्यार्थी

आदमी की लाश पे हम गोभी उगा रहे हैं,
कितना बने हैं आदमी सबको बता रहे हैं.
उठता जहाँ धुआँ है अपना ही घर तो है,
पूछा किसी से मैंने, अपने जला रहे हैं.
दंगों के सूत्रधार का होता न बाल-बांका,
जुम्मन मियाँ औ जामुन ही काटे जा रहे हैं.
गंगो-जमुन किछार पे कहकहे थे गूँजते,
बूटों की टॉप में अब रातें बिता रहे हैं.
मन्दिर की आड़ में वो चौसर हैं सजाये,
शकुनी की चाल बूझिए पासें बिछा रहे हैं.
रथ पे सवार मारीच, मृगा का रूप धर के,
सीते तू चुप ही रहना, फिर ये लुभा रहे हैं.
मजहब की आग में जो रोटियाँ सेंका किये,
दीनों के खिदमतगार बन नोटें चटा रहे हैं.
संपर्क :शांति मार्ग, मीठापुर, पटना-1

दो ग़ज़लें

❐ अशोक 'अंजुम'

॥ एक ॥

बस यही तो मलाल है बाबा
रहनुमा ही दलाल है बाबा

सच कहूँ, सच कभी न बोलूंगा
जिन्दगी का सवाल है बाबा

जो भी उलझा निकल नहीं पाया
ये सियासत का जाल है बाबा

दाल में काला कहाँ तक खोजें
सारी ही काली दाल है बाबा

आओ उस मूर्ख से करें यारी
जेब में उसकी माल है बाबा

हंस, कौओं की चापलूसी से
हो रहा अब निहाल है बाबा

आज करतूत देखली उनकी
अब मेरा इन्तकाल है बाबा

॥ दो ॥

इतनी खींचा तानी क्यों ?
जीवन में बेमानी क्यों ?

वे अच्छे अभिनेता हैं
होंगे पानी-पानी क्यों ?

उनकी शान रहे यारो
देते हम कुर्बानी क्यों ?

तूने सच ही कहने की
अब पछताये, ठानी क्यों ?

पॉप, रॉक का शोर बढ़ा
चुप कबिरा की बानी क्यों ?

डोर हाथ में है उसके
तू करता मनमानी क्यों ?

संपर्क : 'संवेदना', एफ-23,
नई कॉलोनी, कासिमपुर
(पावर हाउस), अलीगढ़-202127

क्षणिकाएं

❐ राजा चौरसिया

अंतर

उधर
सुविधाओं का डंका
इधर
असुविधाओं का डंक है
वहां
त्रेसठ का
यहां
छत्तीस का अंक है।

क्या हर्ज है

देश के हित में
मर मिटना
हमारा फर्ज है
ऐसा
कह देने में
भला, क्या हर्ज है ।

नारी

नारी के पुजारी
इस देश की दशा
कही नहीं जाती है
नारी भी
चीज कहलाती है ।

तसल्ली

उन्होंने
इस बात पर
अपनी तसल्ली
खोई नहीं है
कि दूध का धुला
कोई नहीं है ।

प्यार में

प्यार में विश्वास
विश्वास में विष
व्हाट इज दिस ।

संपर्क : उमरियापान
जिला-जबलपुर-483332 (म.प्र.)

गीत

❐ चन्द्रशेखर भारती

ओ चांद गगन के आ रे
मन में मीठी आस सजाए
बैठी पथ पर आंख बिछाए
आशाओं के दीप जलाए
अब और नहीं तड़पा रे ।
ओ चांद गगन के आ रे ॥
नीर भरी आंखें पथराई
मेरी तुझको याद न आई
बुझती सांसों की शहनाई
मत किरण अगन वर्षा रे ।
ओ चांद गगन के आ रे ।
भूल गये क्यों पिछली बातें
शरद शिशिर की मीठी रातें
रिम-झिम बातों की बरसातें
ओ चांद नयन के आ रे ।
ओ चांद गगन के आ रे ।

संपर्क : संपादक 'सिद्धान्त'
मनिया चौराहा, मुंगेर-811201

हवस कुर्सी का

❒ शिवेन्द्र प्र. सिंह

ये कैसे दीपक हैं ये कैसे मेले हैं
मजारों पर शहीदों के
न जज्वे हैं वतन पे जाँफरोशी के
न ईमां है यहाँ कोई इंसान में बाकी
तमन्ना हम वतन का अब न है कोई
हवस है एक कुर्सी का
तलब है एक कुर्सी का ।

कोई देता दुहाई राम का
इस्लाम का कोई
कोई जाति कोई मजहब
वतन के नाम पर कोई,
सियासी खेल का पासा
बना डाला जम्हूरी को,
मचा दी खून की होली
अमन बाकी नहीं कोई ।

जम्हूरे हिंद में ईमाम है मजबूर
कोई किस कदर देखें !
शिकायत किससे हो
रहमोकरम का ?
हर शख्स दरिंदा है यहाँ
किस कदर देखो ।
मुकद्दर पे इमामे हिंद के दौरे कजा है
किस कदर देखो !

जलालत ही जलालत है यहाँ पर
जिस तरफ देखो !
मसीहा अम्न (अमन) का अब तो
कोई ! नजर आता नहीं देखो !
मुहब्बत ही खंजर मुहब्बत ही मरहम
गजब है रस्म दुनियाँ की
मसीहा ही बना बैठा दरिंदा है यहाँ पर
किस कदर देखो !

जलालत के जुनूँ में
खो गया ईमान ईसा का
सियासत के जुनूँ में
खो गया अरमान गांधी का
न वल्लभ है, न ही नेता, जवाहर है
सियासत के नशे में चूर हर कोई सिकन्दर है,

नशे में फैसला होता मुकद्दरे हिंद का
पांच तारा होटलों में बैठे
किस कदर देखो !
हर शख्स वहशी बना बैठा यहाँ है
किस कदर देखो !

फिक्र हो तो किसको हो
आलमें तबाही का
हर शख्स मसीहा बना बैठा यहाँ है
किस कदर देखो !
गरदिशे हिंद का मुकद्दर
गर बदलना है 'शिवेन्द्र'
सियासत के नशे को तोड़ना होगा
असलियत दरिंदे और मसीहे का
जमाने को समझाना होगा
वक्त के आवाज पर तुमको
दूध का दूध और पानी का पानी
करना होगा ।

संपर्क : प्राचार्य, सरदार पटेल पब्लिक स्कूल
सेक्टर-9 ए. बी. रोड
बोकारो इस्पात नगर

वन्दे–मातरम्

❒ डॉ. भारत ज्योति

वन्दे मातरम् ! वन्दे मातरम् !
यह किसने आग लगाई !
यह कैसा धुआँ उठा है !
अपना ही चेहरा अपने को -
पहचान नहीं आता है ।
भारतवासी भाई-भाई -
भारतीय कहलाएँ ।
जाति -पाति का भेद छोड़,
भारत की गाथा गाएँ ।
जाति-पाति क्या चीज है होती,
मुझे बता दो प्यारे ।
कैसी है पहचान जाति की,
यह दिखला दो प्यारे ।
पूछूं गर मैं कौन जाति हूँ
क्या बतला सकते हो !
मुझे देख मेरी जाति बताने -
का कौशल रखते हो ।
समझ गया मैं पूछ रहे हो -
नाम हमारा क्या है !

नाम जानकर सोचोगे,
पहचान हमारी क्या है ।
भारत मेरा नाम है बोलो,
प्यारे मैं हूँ कौन !
नहीं चला है जादू तेरा ।
इसी लिए हो मौन ।
भारत मिश्र कहूँ तो सचमुच -
कुछ कहना चाहोगे ।
भारत राम कहूँ तो बोलो
फिर क्या कह पाओगे ?
यादव, सिंह, प्रसाद, पासवान -
में क्या-क्या होता है !
जान गये तो प्यार तोड़ कर,
घृणा बीज बोता है ।
यदि मैं कह दूँ भारत ज्योति हूँ
मेरी जाति बता दे ।
ज्ञान ज्योति का दीप जला ले
चमक उठेंगी रातें । ·
इस मिट्टी का कण-कण भाई,

अपना सा लगता है ।
तुम अपने हो, ये अपने हैं,
सब अपना - अपना है ।
हीन भाव को छोड़ के प्यारे-
जीवन ज्योति जगाएँ ।
जाति-पाति का भेद छोड़ -
भारत की गाथा गाएँ ।
हम सब हैं संतान एक सी -
अपनी भारत माँ की,
इसकी रक्षा में दे देंगे,
हमसब अपनी जाँ भी ।
भारत माँ के चरणों में सब -
मिलकर शीर्ष झुकाएँ,
जाति- पाति का भेद छोड़ ,
भारत की गाथा गाएँ ।
बन्दे मातरम् ! वन्दे मातरम् !! वन्दे
मातरम् !!! वन्दे मातरम् !!!!!
वन्दे ....मातरम् ! वन्दे............ मातरम् !

संपर्क : जी.पी.ओ., पटना-1

बचपन

❒ मनु मल्लिक

मेरे बचपन !
हो सके तो एक बार फिर लौट आओ
हो सकता है तुम्हारा आना
बहारों को फिर लौटा लाये
और मौसम ! तोतली निश्छल मुसकुराहटों से भर जाये

रिश्तों के खोखलेपन
और पल-पल रंग बदलती दुनिया को देख
एक उकताहट से भर गई है जिन्दगी
और संबंधों के बनावटी माहौल में
मेरी हंसी भी कितनी परायी-सी लगती है
अपरिचित, अन्जान !
बचपन ! ऐसे में तुम्हारा पुनरागमन
हो सकता है मुझे फिर से जिन्दगी की
वह परिभाषा बता दे
जो मैं भूल चुकी हूँ
हो सकता है तुम्हाने आने से
मेरी उम्मीदों को मन्जिल मिल जाये
वक्त के दिये जख्म भर जायें
और मेरे भीतर धधकती वह आग
शायद ठंडी हो जाये

बचपन !
तुम मुझे कुछ पल को ही सही
मुझे जिन्दगी का वही सकून दे जाओ
मेरे बचपन !
हो सके तो एक बार
फिर लौट आओ !,

संपर्क : 'सूत्रधार' खगौल, पटना

जिंदगी

❒ सिद्धेश्वर

शून्य बिन्दु
अब नहीं बन पाती
केन्द्र बिन्दु !

नजरों का भटकाव
बढ़ता गया है
दिनों दिन
गो कि –
अब / पसर गया है
सूरज का गोला !!
आजकल बौनी इच्छाएँ भी
दौड़ लगाने लगी हैं
अभावों की
बढ़ती हुई श्रृंखला को देख देखकर !

मृगतृष्णा

मन की चाहत / मृगतृष्णा में
अतृप्त रह जाती है
जो / दौड़ाती है
तड़पाती है
छकाती है, ललकारती है ।
लेकिन / कहीं पर
ठहराती नहीं वह !
तभी से
लगने लगा है
मृगतृष्णा ही
जिंदगी है
या फिर
जिंदगी का नाम ही है
मृगतृष्णा !!

संपर्क :– पोस्ट बौक्स नं॰-205
करबिगहिया, पटना-800001

दो छोटी कविता

❒ फ़ज़ल इमाम मल्लिक

एक

यह सच है कि
मैं आदम नहीं
और सच है यह भी कि
तुम हव्वा नहीं
लेकिन !
यह भी सच है कि
जब भी हम मिलते हैं
तो सृष्टि को
एक नया नाम दे जाते हैं

दो

कल तक
मेरे पास सब कुछ था
केवल एक तुम नहीं
और मैं एक दम से अधूरा था
आज !
मेरे पास कुछ नहीं है
केवल एक तुम हो
और मैं एकदम से भरा पूरा हूँ
अपने आप में मुकम्मल ।

संपर्क :
'जनसता', 83, बी.के. पाल एवेन्यू,
कलकता-700005

गीत

❑ संजीव "सलिल"

मन का वातायन तुम बंद न कर देना
सद्भावों के सुमन नहीं खिल पाएंगे.....

ताजी हवा सुनाती लोरी सपनों की,
नील गगन स्मृतियां लाता अपनों की ।
चंदा-तारे सुख-दुख कहते-सुनते हैं–
मंजिल मीत न होती ठिठके कदमों की ।।
परिवर्तन की गति तुम मंद न कर देना
अरमानों को चमन नहीं मिल पाएंगे......

पुरवैया की थपकी, पीपल की छैंया,
नीम तले बचपन नाचे ता-ता थैया ।
पनघट-खलिहानों पर सपने सतरंगी,
भरें कुलाचें नील गगन को ले कैंया ।।
प्रतिबंधों से कम आनंद न कर देना-
होंठ न राधा और किशन सिल पाएंगे.....

आसमानको टंगने दो आशाओं पर
लिख दो शौर्य कथाएं दसों दिशाओं पर ।
नई ऋचाएं, नए व्याकरण, गीत रचो
मत ठहरो गूंगी-बहरी भाषाओं पर ।।
निर्मल "सलिल" प्रवाहित, गंदा न कर देना
पंकिल जल में कमल नहीं खिल पाएंगे.....

प्रिय का आवाहन अनुबंध न कर देना
मनुहारों के चमन नहीं मुस्काएंगे...

संपर्क : 204, विजय अपार्टमेन्ट, नेपियर टाउन, जबलपुर (म.प्र.)

स्वर्ण वर्ष

❑ रघुनाथ प्रसाद "विकल"

अहा, स्वर्ण-रश्मियाँ बिखेरता,
देश स्वर्ण-वर्ष है मना रहा !
अर्द्ध-सदी पूर्व उस पुनीत दिन-
कि टूट जब गई गुलाम-श्रृंखला,
स्वतंत्र थी हुई समुद्र-मेखला,
कि जब गगन-विराट था गरज उठा-
मिटी निशीथ की प्रबल-परम्परा !
कि आ गई उषा प्रभात आ रहा !

हां उसी पुनीत-दिन-
कि कलकला उठी समुद्र-धार जब-
सुनो स्वदेश की विजय-गुहार अब !
चली समग्र देश से मलीनता !
कि थी मुरझ रही, पनप उठी लता !
कि आसमान लो सुधा गिरा रहा !

वह पुनीत दिन....
वह पुनीत दिन नमस्य है मगर-
विजय मिली अनेक शीश दान कर !
कि शीश-दान कर मिटे शहीद जो,
न बैठ जायें हम उन्हें बिसार कर !
यही तिरंग भी कहर सुना रहा !

सुना रहा सुना रहा....
कि अब यहां न कोई दीन-हीन हो !
कालुष्य जाति-धर्म के विलीन हों !
सुस्वस्थ हों सभी, न बुद्धिहीन हों !
मिटे सकल कलुष, सभी नवीन हों !
भविष्य पग उसी तरफ बढ़ा रहा !
अहा, स्वर्ण-रश्मियां......

संपर्क : नौ., किदवईपुरी,पटना-800 001

गीत

❑ रवीन्द्र ठाकुर

नवीन राष्ट्र की, लोक की
वो चेतना कहां गई ?

हा गया क्या दश मे, अजाब समां है देश में, चोर माल ले गये, बस
सवाल दे गये । करे भी क्या बवाल हम, इक भूचाल दे गये,
प्राचीन राष्ट्र की नवीन, अर्चना कहां गई ?
न्याय नीति बिक गये, इमान धरम मिट गये,
भारती के लाल के, मोहरे सब पिट गये ।
आश जिनसे देश को, स्वार्थ में सिमट गये ।
घोषणा बहुत हुए, सर्जना कहां गई ?

गली-गली में दीनता, अर्थ की अधीनता,
बस संवादहीनता, अपराध की स्वाधीनता ।
क्या चरित्र हीनता, राष्ट्र की प्रवीणता ।
नवीन राष्ट्र की नवीन, कल्पना कहां गई ?

यार कैसा खेल है, एकता बेमेल है,
चोर के ही हाथ में अब राष्ट्र की नकेल है ।
बन्दरों के हाथ में राष्ट्र बस गुलेल है ।
राष्ट्रभक्ति की अमर वो भावना कहां गई ?

जागो जवान देश के, उठो किसान देश के,
चुनौतियां बहुत बड़ी, उठो उमान देश के ।
विपत्ति सामने खड़ी, गहो कमान देश के ।
महान देश की महान साधना कहां गई ?

संपर्क : द्वारा-सहायक नगर इंजीनियर, पूर्व मध्य रेलवे, समस्तीपुर-848101

संप्रभुता

❒ प्रो. डी.आर. ब्रह्मचारी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जब व्याख्याता के लिए न्यूनतम योग्यता- स्नातकोत्तर कक्षा में साढ़े बावन प्रतिशत अंक-निर्धारित कर दिया तो प्रो. शिशुपाल भंग-तंद्रा हुए ।

अब क्या होगा ? बड़े चिंतित हुए । वरिष्ठों से विचार-विमर्श किया । लोगों ने सलाह दी-उन्नत अंक प्राप्त करने के लिए पुनर्परीक्षा में सम्मिलित हों अथवा पी-एच.डी. कर लें ।

परीक्षा के स्वाद को तो चख ही चुके थे । फुफेरा भाई के साले के साढ़ू की कृपा से साढ़े उनचास प्रतिशत अंक, किसी तरह से, प्राप्त कर वैतरणी पार हो सके । वह तो पत्नी के पिता थे जिसके दहेज के पैसे के कारण एक महाविद्यालय में प्राध्यापक के पद के अधिकारी हुए ।

दिन भर राजनीति किये फिरते पढ़ने-पढ़ाने से तो रहे । कुछ तो स्वयं अधिक छात्रों के गुरुत्व की पात्रता ने छुट्टी कर दी थी । डिग्री के पत्ते आसानी से टूट ही रहे थे तो आसन बांधने का प्रयोजन ही क्या ?

सोचा, उपस्थित झमेले से तत्काल त्राण का उपाय तो ढूंढ़ना ही होगा । विधान सभा नहीं तो विधान परिषद् की सदस्यता का मंसूबा भी था । नहीं कुछ तो शिक्षक-सदस्य बनकर ही सही ।

स्वयं तो परीक्षा में बैठ सकते थे नहीं, शोध का प्रश्न ही कहाँ ?

कहते हैं, 'आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है ।' बगल में थे एक प्रो. हृषिकेश । प्राइवेट ट्युशन तथा संभावित प्रश्नों के उत्तर बेचने से यथोचित लाभ न देख खम ठोंक कर पी-एच.डी. के व्यवसाय में कूद पड़े थे । ठीका लेते । पच्चीस हजार से पैंतीस हजार के बीच । जो दाता थोड़ा सहयोग करते उनसे थोड़ा कम, जो निर्लिप्त होते उनसे अपेक्षाकृत अधिक ।

अपनी परिस्थिति के अनुसार प्रो. शिशुपाल को डॉक्ट्रेट लेना ही उत्तमोत्तम प्रतीत हुआ ।

परिणामस्वरूप प्रो. हृषिकेश से संपर्क तो साधना ही था । दूसरा उपाय भी तो था नहीं । उनके जैसे मरीज के लिए इस क्षेत्र में वह अकेले हकीम थे । बाद में कई हुए किंतु प्रो. हृषिकेश के धंधा का सूर्य मध्याह्न को छुआ चाहता था ।

शिशुपाल जी ने इस शर्त के साथ बातचीत की कि मैं कलम छुऊँगा तक नहीं ।

आना कानी तथा इस कार्य में होने वाली कठिनाइयों की चर्चा के पश्चात् अंततोगत्वा प्रोफेसर साहब ने 'एवमस्तु' कहा । बहुत अनुनय विनय के अनंतर किसी तरह सत्ताईस पर बात पटी ।

विषय हुआ, 'राज्य के आवश्यक तत्व तथा संप्रभुता का सिद्धांत ।'

क्रम-क्रम से गाड़ी ससरने लगी । प्रारूपण, स्वीकरण, निबंधन, लेखन-टंकण, ग्रंथन-समर्पण सभी कार्य संपन्न हुए । यथा रीति-बदस्तूर । बार-बार प्रो. हृषिकेश कार्य की विकटता और अपनी कुशलता के साथ-साथ उनके प्रति अपनी आत्मीयता का बखान करने में तनिक भी कृपणता न दिखाते । वह उनपर अनुग्रह का बोझ हमेशा देखना चाहते थे ।

यथा समय बाह्य परीक्षक का प्रतिवेदन भी अनुकूलता के साथ आ गया । क्यों नहीं, सर्वेगुणाः कांचनं आश्रयंति ।

समय मौखिकी का भी आ ही गया । प्रो. शिशुपाल तो बिल्कुल बे परवाह थे जैसे पैसे के बाद उनका कुछ दायित्व ही न हो ।

एक दिन प्रो. हृषिकेश ने शिशुपाल से कहा, मौखिकी में भी सम्मिलित होंगे कि नहीं । परंतु शिशुपाल का धुकधुकाता मन भला क्यों कर स्वीकारता । वे तनिक भी लाग लगने देना नहीं चाहते थे । परंतु निर्देशक महोदय ने तावड़तोड़ प्रोत्साहन मंत्र का छींटा देना शुरू किया-'अरे भोज-भात में भी तो कम से कम चलो । कैसे मनहूस हो । आज से नाम के पहले 'डॉ.' लिखोगे बिना पेट का पानी डुलाए ?

किसी तरह शिशुपाल तैयार तो हुए किंतु धुकधुकी के साथ ।

हमारी व्यवस्था ठीक रही । खान-पान भी उत्तम रहा । किसी प्रकार का खोट नहीं । टेढ़ा राग भी निपुण गायक के समक्ष सीधा होने लगता है । प्रो. शिशुपाल की जान में जान आने लगी । तभी अचानक एक घटना घटी । बाह्य परीक्षक में एक व्यक्ति बड़े विनोदी स्वभाव के थे । प्रसंग आने पर वह चूकने वाले जीव न थे । विनोद के लहजे में वह शिशुपाल से पूछ ही बैठे-संप्रभुता क्या होती है ? यद्यपि उनकी धारणा कतई अन्यथा नहीं थी, सारी प्रक्रिया निर्विध्न संपन्न हो ही चुकी थी ।

किंतु शिशुपाल पर तो अनभ्र वज्रपात ! पसीना आ गया ! हे भगवान ! धनुर्भंग के पश्चात् यह परशुराम कैसे आ धमके ? किंतु समय रहते, सिद्ध गुरू ने बड़ी बारीकी से सिर पर हाथ फेरा । उन्होंने व्यंजना में भाष्य किया-'सॉवरेंटी' के लिए क्या ही अच्छा शब्द 'संप्रभुता' है ! 'सं' उपसर्ग 'प्रभु' विशेषण तथा 'ता' प्रत्यय ! 'त्व' यदि जोड़ दीजिए तो 'प्रभुत्व' ।

डूबते को जैसे तिनके का सहारा ! शिष्य आरुणि के लिए इतना ही अलम् था ।

हिंदी की कक्षा में सुना था कभी-प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा, जो कछु करहिं उनहिं सब छाजा । 'प्रभु' का अर्थ 'स्वामी' होता है । पहले इस देश के स्वामी गौरांग महाप्रभु हुआ करते थे, स्वतंत्रता के बाद यहाँ की तथाकथित प्रजा । तभी तो प्रजातंत्र है । स्वामी के लिए सब क्षम्य ! सब शोभनीय ! मन ही मन उन्होंने अंतः सूत्र बैठाया । हाल में हुई परीक्षा में देखा था, कदाचार रोकने के विरोध में छात्रों ने आंदोलन किया था । अपनी तथा अपने सह परीक्षार्थियों की उत्तर पुस्तिकाएं फाड़कर उन्होंने परीक्षा का बहिष्कार किया था । पदाधिकारियों पर घातक हमले किये थे । कुर्सी-टेबुल-आलमारी को तोड़ा था । आग लगाई थी । यही नहीं, स्टेशन, बस-स्टैंड को क्षति पहुंचाई थी । बस तथा रेलगाड़ियों को जलाया था । यही नहीं निहत्थे छोटे-छोटे बिक्रेताओं के सामान तो लूटे ही थे, प्रतिकार करने पर भरपूर पिटाई भी की थी ।

विपक्षियों ने इसे सरकार का दमनात्मक रवैया कहकर छात्रों के माध्यम किये जा रहे आंदोलन को इसकी प्रतिक्रिया कहा था । जैसे पहले से अवसर की ताक में हों ।

सरकार ने मुंह मांगा वर देकर उन्हें तुष्ट किया था । शिशुपाल को इसमें संप्रभुता साकार दिख गई ।

मन ही मन कृतकार्यता का अनुभव हुआ । उन्नतवक्ष किंतु सधैर्य कहा, श्रीमन् पहले रेल लाईन उखाड़कर, टेलीफोन तोड़कर हम अंग्रेजों की संप्रभुता को चुनौती दे रहे थे, परंतु अब बस-ट्रेन जलाकर हम अपनी संप्रभुता सिद्ध कर रहे हैं ।

उपस्थित सभी ठठाकर हास्य में विभोर हो उठे ।

संपर्क : **नक्कू थान, मोहनपुर, समस्तीपुर, पिन-848101**

महिला मुक्ति मोर्चा

❑ कृष्ण प्रसाद "किशु"

आज की सजग नारियों का मत है कि भारतीय संस्कृति में पुरुष वर्ग ज्ञान और सत्ता के संस्थानों पर ही काबिज नहीं रहा, उसकी वर्चस्वता दैनिक जीवन में भी कायम रही है । इसी कारण पुरुष द्वारा किए गए सारे कार्यकलाप असह्य होते हैं। किन्तु औरत की स्वच्छन्दता या खुलापन नाकाबिले बर्दास्त होता है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारत में औरतें घर की चहारदीवारी में कैद न होकर घर के बाहर निकलती हैं । उनकी सहभागिता सामाजिक संस्थानों में भी हो गई है फिर स्वाभाविक है उनके संबंधों में फैलाव आए । व्यंग्य के माध्यम से बड़े मार्मिक ढंग से भाई 'किशु' जी ने इस तर्क को सार्थकता प्रदान की है । **प्रधान संपादक**

मैं मन मार कर होटल दर होटल ब्रेड पकौड़ा की खोज में चक्कर मार रहा था । यहाँ हल्के-फुल्के कई होटल हैं । जो चाय सिंघाड़ा के साथ-साथ कई तरह की मिठाइयाँ भी बनाते हैं । एक ठाकुर का होटल भी है, जो गाहे बगाहे ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए ब्रेड पकौड़ा भी बनाता है ।

लेकिन, आज मेरी लाख मिन्नत के बाद भी वह ब्रेड पकौड़ा बनाने में असमर्थ था । दरअसल, आज किसी राजनीतिक पार्टी के द्वारा बन्द का आह्वान कर दिया गया था और इस छोटे से कस्बे में ब्रेड (पावरोटी) तो यहाँ धनबाद से ही आता है। बन्द के कारण गाड़ियाँ भी नहीं चल रही थीं । अत: ब्रेड भी नहीं पहुंच सका था । नतीजतन, ब्रेड पकौड़ा बनने का कोई आसार नजर नहीं आ रहा था । होटलवाला अपनी असमर्थता बताकर तो मुक्त हो गया था । लेकिन, मेरी मुक्ति का कोई लक्षण नहीं नजर आ रहा था ।

मैं समझ नहीं पा रहा था कि पत्नी के ब्रेड, पकौड़ा लाने की फरमाइश पूरा कैसे करूँ । वैसे यदि आप मुझे पत्नी भक्त समझ रहे हैं तो यह आपकी भूल है । दरअसल, मैं अपने आपको पत्नी पीडित ही मानता हूँ । पत्नी "एम-3" की अध्यक्षा हैं । एम-3, अर्थात् "महिला मुक्ति मोर्चा" । इस लम्बे चौड़े भारी भरकम संगठन को एम-3 के नाम से ही हम समस्त पीड़ित पतिगण पुकारते हैं। "एम-3" के नाम से ही दहशत पैदा हो जाती है। संगठन में वैसी ही महिलाओं को प्रवेश मिलता है जो पतियों पर अत्याचार करना अपना परम धर्म मानती हैं । सीता, सावित्री जैसी स्त्रियों के कारण महिला समाज का घोर अहित हो रहा है । इस संगठन के अनुसार पत्नियों में त्याग एवं सेवा भावना तो होनी ही नहीं चाहिए । पत्नी पूरे परिवार की श्रेष्ठ जीव है । लेकिन, उसके जीवन में कष्ट ही कष्ट हैं । बच्चे पैदा करने से लेकर पतियों की इच्छापूर्ति के क्रम में पत्नियाँ अपार कष्ट सहन करती हैं । वेदना बर्दाश्त करती हैं । इसके बावजूद पत्नियों को घर के सारे काम (खाना बनाना, बरतन मांजना, झाड़ू पोंछा) भी करने पड़ें तो यह घोर अत्याचार है । अमानवीयता है । जिसे पत्नी समाज कतई बर्दाश्त नहीं करेगा ।

संक्षेप में कहा जाय, "महिला मुक्ति मोर्चा" पतियों पर शासन करने में विश्वास करती है । इस क्रम में यदि पतियों को झाड़ू-बेलन से ठुंकाई भी करनी पड़े तो उसे वैध माना गया है ।

अब मेरी ही किस्मत फूटी है तो कोई क्या कर सकता है । मेरे ही घर में, मेरे ही सामने, समस्त पतियों पर किए जाने वाले अत्याचार की व्यूह रचना होती है और मैं चुपचाप सब देखता-सुनता रहता हूँ । आवश्यकता पड़ने पर चाय नाश्ता पहुंचाता रहता हूँ । कप प्लेट धोता रहता हूँ । और सब कुछ सुन सुन कर भीतर ही भीतर भयभीत होता रहता हूँ ।

शायद, आप सोच रहे होंगे मैं कुछ ज्यादा ही बोल रहा हूँ । लेकिन, विश्वास कीजिए ये सारी बातें शत-प्रतिशत सत्य हैं । मैं अपने एक ऐसे मित्र को भी जानता हूँ जो स्पेशल आर्डर देकर प्रतिमाह अपना एक जाली पेमेन्ट स्लिप भी बनवाते हैं । दरअसल, पत्नी के हाथ में तनख्वाह के साथ-साथ पेमेन्ट स्लिप भी रखनी पड़ती है । ताकि, पत्नी साहिबा को विश्वास हो सके कि उनके साथ कोई घपला नहीं हुआ है । अब सारी की सारी रकम पत्नी के हाथ में रख देने का मतलब हैं, अपने जेब खर्च (यथा पान, सिगरेट, होटल बाजी इत्यादि) से भी मरहूम होना पड़े । तथाकथित मित्र ज्यादा चालाक हैं । लिहाजा, जाली पेमेन्ट स्लिप को सहायता से कुछ रकम बचा जाते हैं ।

मुझ पर बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ी है । मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है । मेरे घर में "महिला मुक्ति मोर्चा" की बैठक चल रही है । जिसमें मुख्य मुद्दा घर से नौकरों को छुट्टी देकर सारे कार्य पतियों पर सौंपने की रणनीति पर विचार-विमर्श चल रहा है । उनके स्वागतार्थ बाजार से ब्रेड पकौड़ा लाने का मुझे आदेश हुआ है । अब यदि ब्रेड पकौड़ा नहीं मिले तो मुझे भगवान भी शायद नहीं बचा पायेगा । पत्नी तानें मारेगी । "एक ऑफिसर होकर भी ब्रेड पकौड़ा नहीं ला सकें ?" "आप घर में चूड़ियाँ पहन कर बैठ जाइए ।"

मैं भीतर ही भीतर कांप गया । कहीं सचमुच मेरे हाथ में चूड़ियाँ पहनाने की रश्म निभायी जाने लगी, तब तो मैं बेमौत मारा जाऊँगा । इतनी बड़ी बेइज्जती मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा । लिहाजा, मैंने निश्चय कर लिया, मैं धनबाद जाउंगा और वहीं से चाहे जैसे भी हो ब्रेड पकौड़ा लाउंगा । बिना ब्रेड पकौड़ा लिए घर में घुसने की मेरी हिम्मत नहीं है ।

मैंने अपने स्कूटर को दोनों हाथ जोड कर प्रणाम किया । दरअसल, गाड़ी रिजर्व में थीं और बन्द के कारण पेट्रोल मिलने के कोई आसार नहीं थे । मैं भगवान से यही विनती कर रहा था "हे भगवान, मुझे सकुशलमय ब्रेड पकौड़ा वापस घर पहुंचा दो । फिर हनुमान मंदिर में पूरे सवा रूपये का प्रसाद चढ़ाउंगा ।"

यकीन मानिए, मैं पत्नियों के प्रति किसी दुर्भावना से ग्रस्त नहीं हूँ । आये दिन पत्नियों पर अत्याचार, उन्हें जलाये जाने के समाचार अखबारों में सुर्खियों में रहते हैं । लेकिन, पत्नियों के द्वारा पतियों पर किए जा रहे अत्याचारों पर लिखने वाला कोई नहीं है । दरअसल, हवा का रूख देखकर ही कलम चलाने की परिपाटी-सी बन गई है । लेकिन, मैं तो लिखूंगा । आपको अपनी कहानी बताउंगा । ताकि, तमाम लोग जान सकें, अत्याचारी सिर्फ पति ही नहीं होते । वरन् अत्याचारी पत्नियाँ भी होती हैं । मेरे कस्बे में "महिला मुक्ति मोर्चा" की सक्रियता इसका जीता-जागता प्रमाण है ।

मैं दुनिया की समस्त ताकतों से टकरा सकता हूँ । लेकिन, पत्नी के सामने पहुंचते ही भींगी बिल्ली बन जाता हूँ । तभी तो ब्रेड पकौड़ा की तलाश में खाली-सुनसान सड़क पर अपना स्कूटर दौड़ाने जा रहा हूँ ।

बन्द के आह्वान के कारण सड़क पर सिर्फ पुलिस की गाड़ियाँ ही दौड़ रही हैं । मैं तेजी से अपने स्कूटर को भगाये जा रहा हूँ । तभी अचानक पता नहीं, एक कुत्ता कहां से सामने आ जाता है । मैं जोर से ब्रेक मारता हूँ । मेरा संतुलन बिगड़ जाता है । पास से गुजरते हुए पुलिस की पेट्रोलिंग पार्टी की नजर मुझ पर पड़ जाती है ।. गाड़ी से उतर कर इंस्पेक्टर सीधा मेरे पास आता है–

"कहाँ जा रहे हो ?"

"जी, धनबाद जा रहा हू ।"

"क्यों जा रहे हो ?"

"जी, ब्रेड पकौड़ा लाने जा रहा हूँ ।"

"अबे उल्ले के पट्ठे, ब्रेड पकौड़ा के आशिक मालूम नहीं कि आज धनबाद बन्द है ?"

"जी मालूम है, लेकिन ब्रेड पकौड़ा.....।"

"चोप.....,बेवकूफ, आज ब्रेड पकौड़ा नहीं खाओगे तो मर तो नहीं जाओगे ?"

"नो इंस्पेक्टर, बट, ब्रेड पकौड़ा इज मोस्ट अरजेन्ट ।"

इंस्पेक्टर आग्नेय नेत्रों से घूरता हुआ मुझे वापस लौटने का आदेश देने लगा । मैंने स्कूटर वापस अपने कस्बे की ओर मोड़ दिया । मेरी चाल धीमी थी । मैं चाहता था मेरे स्कूटर का पेट्रोल यहीं खत्म हो जाय। और मैं यहीं बीच रास्ते में ही रह जाउं । क्योंकि, घर वापस बिना ब्रेड पकौड़ा के लौटने की मेरी हिम्मत नहीं है ।

मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ । "हे भगवान समस्त पीड़ित पतियों पर तरस खाओ और किसी तरह "महिला मुक्ति मोर्चा" को अवैध करार दो ।" काश, भगवान मेरी प्रार्थना सुन पाते ।

संपर्क : जे.एम./100, जतुडीह, मुनीडीह, धनबाद-828129 (बिहार)

जुलूस की ठेकेदारी

❒ चितरंजन भारती

इस बार के विधानसभा चुनाव में बाबू बलेंदर सिंह फिर निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए थे। इसके पहले भी वह तीन-चार बार निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़े हो चुके थे । मगर वह कभी चुनाव तो क्या जीतते, जमानत तक जब्त करवा चुके थे । मगर इससे क्या, चुनाव में खड़े होने से 'प्रचार' तो मिलता था । 'बाबू साहब' के साथ 'नेताजी' भी तो संबोधित किए जाते थे ।

बलेंदर बाबू को किसी चीज की कमी न थी । वह स्वयं को किसान कहलाना ज्यादा पसंद करते थे । कारण कि उनके पास ज्यादा नहीं, ढ़ाई-पौने तीन सौ बीघा जमीन थी । फिर उनके बनाए मकानों से हजारों रुपए किराए से आते थे । स्थानीय कारखानों में उनकी ठेकेदारी चलती थी । और इन सबसे ऊपर वह दो बसों, अठारह ट्रक, सात टैक्सी, एक जीप, तीन ट्रैक्टर यानी बहुत बड़े ट्रांसपोर्ट कंपनी के मालिक थे । वह सरकारी टेंडर भी लेते थे । समाज में उनका रोब-दाब और मान-सम्मान था । गांव के पंचायतों से लेकर केन्द्र में बैठे राजनीतिज्ञों तक उनकी पहुंच थी । किस कार्यालय में उनकी धाक नहीं थी ?

मगर वह देश की गरीबी से दुखी थे । अक्सर ही वह देश की राजनीति का रोना रोया करते कि यहां गरीबी, महंगाई बढ़ गई है, भ्रष्टाचार बढ़ गया है । इन सबका वह यही इलाज बताते कि वह किसी तरह चुनाव जीत जाएं, तो सब ठीक कर दें फिर भी कुछ सिर फिरे उनका मजाक उड़ाते थे । उनका कहना था कि सबकुछ पाकर उनके लिए तो अब यही शेष रह गया है । अभी तो हाल ये है कि मौका मिलते ही लूट-खसोट से नहीं चूकते । चुनाव जीतते ही जाने क्या करें !

मतदान का दिन नजदीक आता जा रहा था । चुनाव प्रचार जोरों पर था । बाबू बलेंदर सिंह एक तीर से दो शिकार करने में ज्यादा रुचि रखते थे । उन्होंने अपने सभी वाहनों पर अपना बैनर और झंडा लगा रखा था । उसमें टेप-रिकार्डर तो होता ही, जो सदैव उनका प्रशस्तिगान गाया करता था । इस तरह उनके वाहन किराया भी कमाते और उनका प्रचार भी करते थे।

बलेंदर बाबू ने एक दिन विचार किया कि क्यों न एक दिन अपने सभी वाहनों और मजदूरों के साथ जुलूस निकाला जाए । सभी वाहन तो अपने ही हैं, सो किराया का भी चक्कर नहीं, और मजदूरों को सिर्फ सब्जी-भात खिलाना होगा, ताकि वह जोर-शोर से नारेबाजी कर सकें । जनता जनार्दन इस भारी जुलूस को जब देखेगी तो अवश्य प्रभावित होगी और उन्हें ही अपना वोट देगी ।

बस फिर क्या था, नियत दिन में वाहनों को किराया कमाने नहीं भेजा गया । उनके ठेकेदारी में कार्यरत हजारों मजदूर अपने-अपने बीबी-बच्चों के साथ पहले ही मुस्तैद थे । उन सभी को वाहनों में, भेड़-बकरियों की तरह हांक दिया गया । वाहनों पर लाउडस्पीकर लगे थे, जिनपर फिल्मों एवं लोकधुनों पर आधारित राजनीतिक गीत गूंज रहे थे । इतना बड़ा काफिला हथियार बंद दस्तों के बिना चले, बात कुछ जम नहीं रही थी । इसलिए राईफल एवं बंदूकों से सुसज्जित बहादुरों का भी उत्तम प्रबंध किया था ।

बड़े आन बान और शान के साथ जुलूस चला । मानो कोई सेना मैदान मारने जा रही हो । सड़कों पर धूल उड़ने लगी। नारों से आसमान गूंज उठा । प्रतिद्वंद्वियों को अपनी जमानत जब्त होते दिखाई दिया।

इतना बड़ा जुलूस शहर में शायद पहली बार निकला था । सबके दिल में यह धारणा बैठ गई कि बाबू साहब इस बार अवश्य चुनाव जीत जाएंगे । इतना समर्थन, इतना विश्वास, जनता को विश्वास नहीं होता था । मगर हाथ कंगन को आरसी क्या ! यह कागज लिखी अथवा कानों सुनी बात न थी, बल्कि आँखों देखी बात थी ।

इस क्षेत्र में विभिन्न पार्टियों और निर्दलीय सहित इक्कीस उम्मीदवार मैंदान में थे । इनके चुनाव-प्रचार और जुलूस को देख सबके पैरों तले जमीन खिसकने लगी थी । एक प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी के उम्मीदवार भोजू सिंह को जीतने की काफी संभावना थी । उन्होंने बलेंदर बाबू के पास समझौते के लिए आदमी भेजा । मगर वह समझौता करने से साफ इंकार कर गए ।

भोजू सिंह ने तब अपनी पार्टी की आपात-बैठक बुलाई और चुनावी-रणनीति पर विचार-विमर्श किया। सबने एक सुर से अपना यही विचार व्यक्त किया कि उसी तरह का विशाल जुलूस निकालकर ही जनता के झुकाव को मोड़ा जा सकता है । मगर इसमें दिक्कत यह थी कि शहर में इतनी गाड़ियाँ सिर्फ बलेंदर बाबू के पास ही थीं और वह अपने प्रतिद्वंद्वी को अपनी गाड़ियां क्यों देने लगे ? मगर भोजू सिंह ठहरे राजनीतिक आदमी, सो स्वयं बात करना उचित समझा ।

बलेंदर सिंह अब सिर्फ 'बाबू साहब' नहीं थे । अब उनकी बुद्धि का व्यवसायीकरण हो चुका था । इसलिए वह हर चीज को नफे-नुकसान के तराजू पर तौल लिया करते थे । वह किसी घाघ व्यापारी की तरह 'पैसे' को 'प्रतिष्ठा' से ज्यादा महत्व देते थे ।

भोजू सिंह के प्रस्ताव पर उन्होंने खूब विचार किया । उन्होंने विचार किया कि विधायक बनकर ही वह कौन तीर मार लेंगे । अकेला चना भी कहीं भाड़ फोड़ा करता है ? सो गाड़ियों को ही क्यों, अपने आदमी भी क्यों न भाड़े पर दे दें । कुछ नकद-नारायण बिना हर्रे-फिटकिरी लगाए आ जाएगा । सो उन्होंने अपना प्रस्ताव भोजू सिंह के सामने रख दिया कि गाड़ी तो क्या, वह आदमी, लाउडस्पीकर से लेकर गीत गाने बनाने और ढोलक-झाल बजाने वाले तक की व्यवस्था कर सकते हैं । इसमें लगभग चालीस हजार का खर्चा है । मगर वह पूरे पचास हजार लेंगे । भोजू सिंह का अपना हिसाब था । पैसों की उनके पास भी कमी न थी । सो प्रस्ताव मंजूर कर लिया । वह उनको अग्रिम देने लगे । मगर बलेंदर बाबू ठहरे व्यापारी आदमी । सो साफ बात कहना ज्यादा पसंद करते थे । वह बोले कि आजकल के नेताओं का कुछ भरोसा नहीं, आज कुछ कहते हैं, कल कुछ कहते हैं । इसलिए पूरा पैसा मिलने पर ही वह उनका काम करेंगे । झख मारकर भोजू सिंह ने उन्हें पूरे पचास हजार गिन दिए।

अगले दिन सबने एक और विशाल जुलूस देखा ।

बलेंदर बाबू ने सारा रुपया बचा लिया था । उनका खर्च ही क्या हुआ था ! जुलूस में शामिल लोगों को भरपेट सस्ता खाना खिलाने और गाड़ियों के पेट्रोल पर ही कुछ रुपए खर्च हुए थे । उन्हें लगा कि यह धंधा तो बड़ा फायदे का है । इस तरह के दो-चार जुलूसों की ठेकेदारी मिल जाए, तो वह घर बैठे लाखों कमा लें । भाड़ में जाए समाज-सेवा और विधायकगिरी । इसके बाद उन्होंने सभी उम्मीदवारों को इस आशय का संदेश भेज दिया कि वह भी अगर चाहें, तो उनका शानदार जुलूस निकल सकता है । बस, इतना-इतना खर्च बैठेगा ।

उन्होंने जो स्वनिर्मित टेंडर लिया था, वह वाकई बड़े काम का निकला । दूसरे ही दिन एक उम्मीदवार ने पूरे पैसे सहित अपना प्रस्ताव भेज दिया और उसके अगले दिन जनता-जनार्दन ने एक बार फिर भव्य जुलूस देखा ।

अब तो सभी उम्मीदवारों में देखा-देखी अपना जुलूस निकलवाने की होड़-सी लग गयी । सभी अपना जुलूस निकलवाना निहायत जरूरी समझने लगे ।

क्या शानदार और आकर्षक जुलूस होते थे । वही लोग थे, वही गाड़ियाँ थीं । वही नारे और वही गाने थे । वही व्यंग्य और वही ताने-फिकरे थे । बस अंतर होता तो यही कि उम्मीदवारों के नाम, बैनर और झंडे बदल जाते थे । संवाददाताओं-पत्रकारों को परेशानी होने लगी थी कि वह क्या नया देखें, जो अपने अखबार में लिख भेजें । आखिर अखबारों को तो नित नवीन, चटपटा समाचार चाहिए । मगर यहां ऐसा कुछ न था ।

सभी उम्मीदवारों का एक ही जुलूस के द्वारा विभिन्न दलों में चुनाव प्रचार हो चुका था । सबको अब चुनाव के दिन और उसके परिणाम की बेसब्री से प्रतीक्षा थी । मगर अगर बेसब्री नहीं है, तो वह बाबू बलेंदर सिंह को नहीं है । उनका तो पूरा पैसा इस नए ठेकेदारी में बन ही चुका है । फिर चिंता किस बात की ?

संपर्क : क्वा. नं.-बी 165
न्यू टाउनशिप, पो.-पंचग्राम
असम-788802

न्यायपालिका की उपयोगिता एवं शक्तिहीनता

❒ कामेश्वर मानव

सम्प्रति इस मध्यावधि चुनाव में सभी राजनैतिक दलों के घोषणा-पत्रों में चुनावी-मुद्दों का अभाव रहा। सबों में स्थायीकरण की होड़ रही किन्तु बात समझ में नहीं आयी कि होड़ समस्याओं के स्थायीकरण की थी या किसी भी ढंग से कुर्सी पर कब्जा कर स्थायी रूप से जन-आकांक्षाओं का माखौल बनाने की। बात कुछ भी हो किन्तु किसी भी घोषणा-पत्र में न्यायपालिका सम्बन्धी चिरस्थायी विसंगतियों में सुधार या शक्ति विस्तार की कोई बात नहीं दिखाई दी।

यह ठीक है कि आज न्यायालय की भूमिका जीवन के सभी क्षेत्रों के प्रति महत्वपूर्ण हो गयी है किन्तु इससे भी महत्वपूर्ण हो गयी है जनआकांक्षाओं के अनुरूप समान परिस्थिति में आदेश की समानता की गारन्टी। उत्तर प्रदेश सरकार की बर्खास्तगी एवं पुनर्स्थापन की प्रक्रिया से उत्पन्न स्थिति से न्यायालय के प्रति आकर्षण बढ़ गया है और न्यायालय के दायित्व भी बढ़ गये हैं।

इधर अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पारदर्शिता की वकालत तेजी से की जा रही है किन्तु सभी अपने चेहरे बचाने में लगे हैं जिससे न्यायालय के समक्ष भी समस्याओं की विचित्रता उत्पन्न होने की पूरी संभावना बनी रहती है। इसी कारण न्यायालय के द्वारा बातें कभी-कभी पूरी सुनी जाती हैं, यह भी मान ली जाती है कि बात जनोपयोगी, जनतांत्रिक एवं लोकहित में ऐसा श्रेयस्कर है किन्तु न्यायालय द्वारा कुछ भी कर पाना उचित नहीं जान पड़ता है कि किसी अन्य कारण से अक्षमता दिखाकर समस्याओं को उसके हाल पर ही छोड़ दिये जाते हैं। इस संदर्भ में विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की निरर्थकता से लेकर कश्मीर में चुनाव की तिथि बढ़ाने सम्बन्धी याचिका की सुनवायी को देखी जा सकती है।

विचित्र है कि न्यायपालिका ही नहीं, सभी अपनी सीमाएं अच्छी तरह समझ रहे हैं। आज के दम घोंटू माहौल से अनपढ़ किसान से लेकर महामहिम राष्ट्रपति के अभिभाषण तक में छुटकारे की छटपटाहट है। सभी मुक्ति की राह खोज रहे हैं किन्तु कोई भी दीप अपने घर में जलाने की बात नहीं करता। प्रत्येक व्यक्ति अपनी गतिविधियों को लोकहित में ही साबित करने में लगा हुआ है और सच्चे समाजसेवियों के सुझाव धरे रह जाते हैं। कोई उपाय सूझ नहीं रहा है। एक थके हारे मुकदमेबाज की निराशा भरी बातें बड़ी सटीक लगने लगती हैं—"पाँच-छह मिनट के लिए भूकम्प का झटका आ जाय या धरती फट जाय कि सब उसमें समा जायं........इससे महल वाले ही अधिक मरेंगे, झोपड़ा और फुटपाथ वालों को तो कुछ होगा ही नहीं...... होगा भी तो वे ऐसे भी मर ही रहे हैं.....न्याय तो कहां मिलने वाला है नहीं....न्यायालयों में तो जब तक पैसा है तब तक लड़ाई है और सच है कि मुकदमें मनुष्य से अधिक दीर्घायु लगने लगे हैं बहुतायत में तीन चार दशक में भी सिविल मामले अपने अन्तिम निर्णय तक नहीं पहुंचते, तब धनी-वर्ग के मुकदमेबाजी में गरीब या तो सब कुछ खो बैठता है या थक हार कर सब कुछ बीच में ही छोड़ देता है।

दूसरी ओर आपराधिक मुकदमों की तेजी से बढ़ती सख्याएं अंतहीन कहानियां ही नहीं बन रही हैं वरन् अंतहीन आशाएं भी उत्पन्न कर रहीं है यथा अब तक की सर्वाधिक बड़ी धनराशि वाले घोटाले (सी.आर.बी. घोटाले) में फंसे निवेशकों के पैसा की वापसी की आकांक्षाएं न्यायपालिका द्वारा दण्ड देने की परम्परा रही है किन्तु क्या न्यायपालिका रिजर्व-बैंक के पदाधिकारियों को एवं से. बी. के उच्चाधिकारियों को तो दण्ड देगी नहीं जिनकी कर्तव्यहीनता का बोध कराने वालों ये घटनाएं हैं—अचानक नहीं। यही कारण है कि वैसे व्यक्तियों को न्यायालय की परवाह कम रहती है तभी तो करीब सभी सरकारी विभाग एवं अधिकांश बैंक भ्रष्टाचार में आकण्ठ लिप्त हैं मानों वे न्यायालय की शक्तिहीनता अच्छी तरह समझ चुके हों जो हमारी स्वतंत्रता की अर्द्धशती की उपलब्धि है।

बहरहाल यह कहा जा सकता है कि सबकी होड़ नैतिक-अनैतिक एवं औचित्यानौचित्य का विचार किये बिना सत्ता हथियाने की है, सबके चेहरे स्पष्ट हो चुके हैं—"को बड़ छोट कहत अपराधु, अधि वक्ताओं की तो अपनी लाचारी होती है। उसकी प्रतिबद्धता इस बात की रट लगाने की है कि न्यायालयों में कहीं कोई गड़बड़ी नहीं है। सबकुछ ठीक-ठाक है जब कि न्याय पाने के लिए विह्वल आमजन की टकटकी इस बात पर लगी है कि क्या हमारी नियति सदैव ऐसी ही बनी रहेगी और ये चिरकालिक जिज्ञासा लिये न्याय का दरवाजा थाम निस्तेज हुए जा रहे हैं जो एक ऐसी व्यवस्था की खोज में हैं जहाँ वे तत्क्षण न्याय पा सकें। कारण कि आमजन की परेशानी की विचित्रता इस बात में फंसी है कि छोटे-छोटे ऋणों की वसूली में उनके घर-बार कुर्क हो रहे हैं जबकि बड़ी-बड़ी इकाइयां से ऋण वसूली का मामला खटायी में पड़ा हुआ है। इसी तरह एक ओर असहायों को दतुअन काटने की चोरी में कई दशकों तक जेल में रहने पड़े हैं तो दूसरी ओर सत्तर सौ करोड़ का हर्षद मेहता काण्ड और अब तक के सबसे बड़े सी.आर.बी. घोटाले को हम भूलने लगे हैं।

आये दिन त्वरित न्याय की आपाधापी में धुआंधार याचिकाएं खारिज की जा रही हैं। कौन कितना बहस कर पाता है यह तो आम-बहस का मामला है किन्तु समस्या का समाधान मुकदमों की अच्छी तरह सुनवायी करके अनुतोष की एकरूपता के साथ स्थायी निष्कर्ष पर पहुंचने में है न कि मुकदमों को कम करके समस्याओं को उसके भाग्य भरोसे छोड़ देने में। समस्याएं यदि अपने भाग्य भरोसे पर रहीं तो गलत करने वालों के मनोबल तो बढ़ेंगे ही।

एक और ध्यान देने की बात है कि आज न्यायपालिका में कम्प्यूटीकरण से बहुत सारे काम सरल हो गये हैं। फैक्स की व्यवस्था से भी दूरी और समय पर विजय प्राप्त कर ली गयी है जिसका लाभ आमजन को मिलने लगा है। दूसरी ओर इससे तुरत पता चल जाता है कौन व्यक्ति किस मुकदमें में कितनी बार जमानत की याचिका दाखिल कर चुका है जिससे वकीलों की चोरी सहजता से पकड़ी जा रही है इसी से आशा बंधी है कि वह दिन दूर नहीं कि कम्प्यूटर का डाटा सार्वजनिक रूप से यह भी बतायेगा कि किस प्रकृति के मुकदमों में किसी न्यायालय से या फिर किस अधिवक्ता के माध्यम से कितने अनुतोष प्राप्त हुए और किस को नहीं। स्वाभाविक है इससे अधिवक्ताओं की क्षमता-अक्षमता का भी स्पष्ट आकलन हो जायगा और किसी को किसी के प्रति कोई शिकायत भी नहीं रहेगी।

यह भी संभव है कि सत्ता एवं शक्ति के तेजी से हो रहे विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया की दौड़ में हमारी मान्यताएं बड़ी तेजी से बदल रही हैं; हमारे आचरण भी तदनुरूप बदलने लगे हैं। यदि मुख्यधारा में बने रहने वाले लोगों के मन-मिजाज कोई अचानक परिवर्तन हो जाये तो शीघ्र ही समान नागरिक संहिता भी लागू हो जायगी जिससे न्याय के औचित्य में भी कमी आ सकेगी और न्यायपालिका हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में और दक्षता से दिशा-निर्देश करता रहेगी। जैसे अभी आमजन के संघर्ष की दिशा है—

"शान्ति नहीं तब तक जब तक
सुख भोग न नर का सम हो!
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो॥

संपर्क : अधिवक्ता, उच्च न्यायालय
जय प्रकाशनगर, पटना-1
दूरभाष : 226441

कदम उठाती औरत की पदचाप

❒ रूबी भूषण

कहा जाता है कि "हर सफल पुरुष के पीछे एक नारी होती है ।" लेकिन आज के भौतिकवादी और धर्म एवं पुरुष प्रधान भारत में जहाँ स्त्री को लक्ष्मी, दुर्गा, काली, चण्डी का अवतार माना गया है, इस देवता रूपी नारी को सताकर तथा सत्ता से दूर भगाकर यह समाज अपना कौन सा फर्ज पूरा कर रहा है ? बल्कि सच तो यह है कि पुरुष वर्चस्व वाला समाज स्त्रियों पर न केवल घड़ियाली आँसू बहा रहा है वरन् उसके प्रति दरिंदगी से पेश आ रहा है । पुरुष वर्ग द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ समझे जाने का खामियाजा आज स्त्रियों को भुगतना पड़ रहा है । भारत ही नहीं दुनिया के तमाम देशों में महिलाओं की आधी आबादी होने के बावजूद प्रायः सभी संगठनों, सरकारों और प्रशासन में शक्तिशाली पुरुषों का बोलवाला होने की वजह से पुरुष अपने हितों की पहले सोचता है । क्या यह सच नहीं कि आज समाज के तमाम लोग महज तमाशबीन बनकर स्त्रियों की दयनीय स्थिति के चटखारे नहीं ले रहे ? क्या आपने देखा नहीं प्रायः सभी राजनीतिक दलों के सांसदों ने चाहते हुए भी बड़ी चालाकी से विधायिका में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण सम्बन्धी बिल को पारित नहीं होने दिया ? यही नहीं 12वीं लोकसभा के चुनाव में हरेक दल के द्वारा कम संख्या में जो उम्मीदवारी महिलाओं को दी गयी, उससे पुरुषवादी मानसिकता का अंदाजा सहज लगाया जा सकता है ।

महिलाओं की इसी दयनीय स्थिति तथा समाज निर्माण में उनके योगदान, सामाजिक महत्व एवं उनके संकल्प को नए सिरे से प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता को मार्मिक ढंग से रेखांकित किया है इस रचना की संवेदनशील लेखिका रूबी भूषण ने अपने इस विचारोत्तेजक लेख में । उसने पटना की कुछ प्रबुद्ध महिलाओं के साथ-साथ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की रिश्ते की भांजी श्रीमती भारती चौधरी 'आशा' से मिलकर महिलाओं के पिछड़ेपन पर उनके विचार जानने का प्रयास किया है जिसके कुछ अंश का समावेश भी इस लेख में किया गया है । विश्वास है इसमें प्रस्तुत विचारों से आज की महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जागृत होगी । बेटी रूबी को हार्दिक साधुवाद ।– **प्रधान संपादक**

नारी, औरत, अबला आदि न जाने कितने नामों से जानी जाने वाली औरत पिता के द्वारा दूसरे के आँगन में खूँटे से बंधी गाय सरीकी, जवानी में पति के अधीनस्थ तो बुढ़ापे में पुत्र के अधीनस्थ जीवन गुजारती औरत कहीं उसके भ्रूण को ही खत्म कर दिया जाता है, कहीं जन्मते ही नमक चटा दिया जाता है तो कहीं चन्द रुपयों की खातिर जिन्दा जला दी जाती है । कोई मात्र तीन-चार वर्ष की बच्ची हो या साठ वर्ष की वृद्धा पुरुष के हवस के जुनून में रौंद दी जाती है । औरत कोई दीपा मुर्मू बनी तो कोई रूप कुंवर तो कोई नैना सहनी । एक तरफ तो उसे दुर्गा, चंडी कहा गया पर हुआ सदैव शोषण ही । घर पर, दफ्तर में यहाँ तक कि राजनीति में भी ।

रानी लक्ष्मीबाई, या जीजाबाई, सरोजनी नायडू हो या ना जाने कितनी महिलाओं ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से देश की मर्यादा और संस्कृति को बनाये रखी । पर फिर भी वह उदाहरण बन कर ही रह गई । गृह युद्ध हो या सीमा युद्ध, धार्मिक उन्माद हो या झगड़ा-झंझट, लड़ते पुरुष, फल भोगती है नारी । इन सब के बाद दस-दस रुपये के लिए अपनी इच्छाओं का दमन करती पति, पिता या पुत्र के आगे हाथ पसारती नारी ।

कब तक आखिर कब तक ?

आजादी के पचास वर्षों के उपरान्त, जहाँ हमारे देश ने कई स्थानों पर आशातीत सफलता प्राप्त की तो ऐसा आखिर क्या हुआ जो महिलाओं को जितनी उन्नति करनी चाहिए थी उतनी नहीं की । कहीं इसका कारण देश के सभी शीर्षस्थ पदों पर पुरुषों की प्रधानता तो नहीं ? 1974 में जब जे.पी. आन्दोलन हुआ तब एक आशा की किरण दिखाई दी थी कि पुरुष राजनीतिज्ञ राजनीति में महिलाओं को स्थान देंगे परन्तु 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में महिलाओं को बहुत ही कम सीटें दी गई । यह सत्य है कि जब तक महिलाएं देश की बागडोर सम्हालने में सक्षम और कामयाब नहीं होंगी तब तक उनका शोषण होता रहेगा ।

33% आरक्षण कोई भीख नहीं वरन् एक हक है । देश के निर्माण में हमारी भी भागीदारी अपेक्षित है । जहाँ तक चुनाव में मत के प्रयोग का प्रश्न है उसमें अपना मत देना उनका अधिकार है और इस अधिकार को दिलाने का श्रेय 'मारगेट कजिन्स' को जाता है जो अर्जेन्टीना से 15 अक्टूबर 1915 में भारत आई और "विमेन्स इन्डियन एसोसिऐशन" की स्थापना कर दस वर्षों के अथक प्रयास के बाद महिलाओं को मताधिकार दिलवा पाई और उसने अपना सम्पूर्ण जीवन महिलाओं के उत्थान में समर्पित कर दिया ।

पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे संविधान में सभी स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार और दर्जा दिया गया है । इसके अनुरूप आज औरतें भी अपने अधिकारों के प्रति चैतन्य हो गयी हैं, अपने वाजिब हक के लिए संघर्ष कर रही हैं और अपनी बराबरी की सहभागिता की अब और अनदेखी नहीं कर सकती । अब सारे क्षेत्रों में औरतों की दृढ़शक्ति और संकल्प ने यह सोचने को मजबूर कर दिया है कि आज का उपभोक्तावादी समाज उनकी उपस्थिति का अहसास करे । वे पहले की तरह अब अबला, कमजोर नहीं हैं । वे अपने अधिकारों के लिए विश्वव्यापी संघर्ष छेड़ सकती हैं और दुनिया की तमाम सरकारों को मजबूर कर सकती हैं कि उन्हें शिक्षा, राजनीति और सत्ता में अपेक्षित भागीदारी निभाने दें अन्यथा ऐसा न हो कि सदियों से उनके दिल के अन्दर जल रही आग कहीं ज्वाला का रूप ले इस दकियानुसी समाज को जलाकर राख न कर दे ।

उपन्यास सम्राट **राजा राधिका रमण प्र. सिंह के सुपुत्र तथा "नयी धारा" पत्रिका के सम्पादक उदयराज जी** के मतानुसार "कोई भी पार्टी नारी को पूर्ण आरक्षण देने को तैयार नहीं है । जबानी जमा खर्च वे बहुत कर चुके । अब हाथ कंगन को आरसी क्या ? चुनाव के बाद उनकी मंशा स्पष्ट हो जायेगी । यह आरक्षण हर चुनाव के पहले मुद्दा बनेगा परन्तु कब तक लागू होगा यह कहना कठिन है । विधायिका में महिलाओं के आरक्षण से मैं पूर्णतः सहमत हूँ । मैं चाहती हूँ कि संसद एवं विधानमण्डलों में प्रवेश कर महिलाएं

अपना एक जुझारू व्यक्तित्व बनायें और नारी मुक्ति आन्दोलन को आगे बढ़ाये ।

श्रमायुक्त ए.सी. रंजन ने नारी स्वतन्त्रता एवं 33% आरक्षण एवं चुनाव में महिलाओं की भागीदारी के संबंध में पूछने पर बताया कि विकसित देशों में यह प्रश्न ही नहीं उठता कि चुनाव में महिलाएं अपना वोट देगीं या नहीं । यह तो उनका अधिकार है। जब संविधान में कोई भेद-भाव नहीं किया गया है तो उन्हें कोई भी मताधिकार से रोक नहीं सकता और सरकार बनाने में जब तक अपनी भागीदारी वह नहीं देंगी तब तक सरकार से किसी प्रकार की उम्मीद वह कैसे कर पाएगी ? पुरुषों का यह अहम् कि वे ही देश की उन्नति में सक्रिय रह सकते हैं, मात्र एक वहम् है जिसपर प्रहार करना महिलाओं का परम कर्तव्य बनता है । विधायिका में आरक्षण लेकर औरतें सभी क्षेत्रों में समानता के लिए अपनी आवाज उठा सकेंगी । ग्रामीण क्षेत्रों की आज क्या स्थिति है । जानवरों से भी उनकी स्थिति बदत्तर है । निम्न आय वर्ग की औरतें तो खेत-खलिहानों में काम करती भी हैं पर निम्न-मध्य तथा उच्च आय वर्ग के तथाकथित कुलीन परिवार की महिलाएं तो घर की चहारदीवारी में कैद पड़ी रहती हैं । यहाँ तक कि चुनाव के वक्त अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए भी अपने-अपने घरों से बाहर नहीं निकल पाती हैं । छोटे-छोटे कस्बों तथा शहरों की स्थिति भी कमोबेश यही है । पर इतना जरूर है कि शहर में प्रायः अब लड़कियाँ शिक्षा अवश्य प्राप्त कर रही हैं । हाँ, यहाँ भी उपेक्षित, पीड़ित, दलित, पिछड़े, अतिपिछड़े, अल्पसंख्यक तथा अन्य समुदाय के गरीब तबके के लोग आज भी अपनी लड़कियों को विद्यालय नहीं भेज पा रहे हैं । अतएव आवश्यकता इस बात की है कि नगर के इन तबकों तथा गांवों में जाकर शिक्षित महिलाएं नवजागरण का संदेश दें । श्री रंजन के मतानुसार महिलाओं का दायित्व है कि वे देश को एक अच्छा परिवार, अच्छे बच्चे दें । यदि इस देश की प्रत्येक महिला सिर्फ अपने बच्चों को अच्छे नागरिक बनाती है तो स्वयं ही देश से अराजकता समाप्त हो जाएगी । उनका कहना है कि आई.ए.एस. एवं आई.पी. एस. के परिवार में औरत और पुरुष के बीच ईर्ष्या या प्रतिस्पर्धा का भाव नहीं होता । एक सहयोग की भावना होती है दोनों के बीच । वे घर को व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से चलाने में महिलाओं की 75% भागीदारी मानते हैं ।

इसी विषय को लेकर मैं वयोवृद्धा **श्रीमती भारती चौधरी 'आशा'** जी से मिली जिनका जन्म 1 फरवरी, 1928 को जापान के कोबे शहर में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की रिश्ते की एक बहन सती जी के घर हुआ था । नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की "आजाद हिन्द फौज" में वे एक सैनिक के रूप में बैंकाक एवं बर्मा में लड़ी थीं । आज भारत की मौजूदा दुर्दशा देखकर वह अत्यन्त विह्वल हो जाती हैं । महिलाओं के आरक्षण तथा उनकी स्थिति के बारे में पूछने पर भारी मन से उन्होंने कहा– **"हम लोगों ने किस कठिनाई और कितनी परेशानी से भारत की आजादी पाई और आज के राजनीतिक नेता, देशद्रोही, समाज विरोधी तत्व, ब्यूरोक्रेट्स और रिश्वतखोरों ने इस देश का, जिसे सोने की चिड़िया कहते थे, क्या से क्या हाल बना दिया । पहले तो दूसरों ने लूटा, पर अब तो अपने ही लूट रहे हैं और हम खड़े देख रहे हैं । अब हम महिलाओं को देश के हर पद पर आसीन हो देश को अपने बच्चे की तरह पालना-पोसना है । इसके लिए हमें 33% आरक्षण मिलना ही चाहिए ।"**

यह सही भी है कि महिलाओं ने हर जगह जहाँ उन्हें अवसर मिला है, चाहे वह पुलिस, ट्रैफिक पुलिस का हो, हवाई जहाज चलाने का हो, इंजीनियरिंग या चिकित्सा का क्षेत्र हो, पंचायत हो या अन्तरिक्ष पर जाने की बात, महिलाओं ने अच्छा कार्य करके दिखलाया है । अतः हर हालत में इन्हें हर क्षेत्र में 33% आरक्षण अपेक्षित है ।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" का दंभ भरनेवाली भारतभूमि में यह स्थिति आज इतनी भयावह क्यों हो गयी है, इस पर विचार करना समुचित होगा ।

नारी की विडम्बना यही है कि सम्पूर्ण जीवन चक्र में वह किसी-न-किसी प्रकार से पुरुष पर आश्रित रहती है । महिला सदा रेत के टीले पर खड़ी होती है जहाँ पुरुषों के क्रोध की आँधी किसी भी पल उसके पैरों के नीचे की जमीन उससे छीन-झपट सकती है । समाज में आर्थिक स्वतन्त्रता न होने के कारण सारा जीवन वह घुट-घुंट कर जीती है । अपनी भावनाओं का दफन करती है । मगर दिल में अरमानों व आहों का बवंडर लिए हर हाल में वह खुश रहती है और अपने पति व पुत्र के लिए हर हमेशा मुस्कराती रहती है पर उसके अन्दर एक आग भड़क रही है जो कभी भी ज्वाला बन कर निकल सकती है । आज औरतों के प्रति सम्मान भाव दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है और उत्तरोत्तर आधुनिकतावादी इस दौर में स्त्री मात्र भोग-विलास की, विज्ञापन और नुमाइश की चीज रह गयी है । आज इस जहां में जहाँ मानवीय मूल्यों की लाश सड़ रही है, उनके बीच स्त्री जीने को विवश है । स्त्री अपनी घुटन, असमर्थता, पीड़ा, दर्द, छटपटाहट और अपने भीतर कसमसाते विद्रोह को समझती है । उनकी संवेदना निजी संवेदना बनकर रह गयी है । इस सुविधाभोगी समाज में हमारी सारी मान्यताएं टूट रही हैं । कहाँ रही माँ के प्रति वह ममता और कहाँ खो गया पत्नी के प्रति वह प्यार ?

पर यह भी सच है कि **आज नारी पुरुषों के बीच मुस्तैदी से खड़ी होकर अपनी हर नयी राह और राह की संभावनाओं को तलाश रही है । एक ओर वह जहाँ घर की चहारदिवारी के भीतर नए समीकरण रच रही है, वहीं दूसरी ओर वह घर के बाहर भी पुरुषों के कार्यक्षेत्र पर आहिस्ता-आहिस्ता धावा बोल रही है** । आखिर तभी तो मदर टेरेसा, अमृताप्रीतम, शेरोन प्रभाकर, मेधा पाटकर, शोभा डे, किरण बेदी, निवेदिता भसीन, विमला पाटिल, पी.टी. उषा, कल्पना चावला आदि महिलाओं ने अपने क्षेत्रों में एक अलग पहचान बनाई हैं । इन महिलाओं ने अपने-अपने समय में अपने काम, पहल, जीवन और जीवन-दृष्टि से स्त्री के संघर्ष में एक निश्चित और निर्विवाद मुकाम स्थापित किया है ।

निःसन्देह आज महिलाओं में शिक्षा की दर बढ़ी है; वे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं । बावजूद इसके भारत में महिला साक्षरता 39.4 प्रतिशत से अधिक नहीं है । अतएव शेष महिलाओं की वैचारिक खिड़कियाँ खुलनी चाहिए । निजी और सार्वजनिक जीवन में उन्हें पुरुष के समान अधिकार तथा पारिवारिक दायित्वों से लैस कराया जाना चाहिए । यही समय का तकाजा है । आखिर तभी तो आज की नारी कहती है–

मैं नारी हूँ, तुम मुझको अब स्वतन्त्र गीत गाने दो,

मत रोको, मत टोको मुझको आगे बढ़ जाने दो ।

मत भूलो यदि बनी चंडी मैं ध्वस्त करूँगी तेरा राज,

यदि करो सम्मान तो पूर्ण करूँगी घर-परिवार ।

इसलिए मत समझो भोग्या तुम मुझको आगे बढ़ जाने दो ।

संपर्क : फ्लैट नं. 604
माँ भगवती कॉम्पलेक्स
बोरिंग रोड चौराहा
पटना-800 001

मंच के कार्यकलापों की एक झलक

❒ दिलीप कुमार

1. सरदार पटेल का 122वाँ जयंती-समारोह

राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से विगत 31 अक्टूबर, 1997 को सन्ध्या 4 बजे पटना के वीरचन्द पटेल पथ स्थित रवीन्द्र भवन में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 122वें जयंती-समारोह का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन किया पटना उच्च न्यायालय के माननीय **न्यायाधीश श्री धर्मपाल सिन्हा** ने। समारोह का उद्घाटन करते हुए न्यायाधीश श्री सिन्हा ने कहा कि सरदार पटेल की पकड़ देश और संगठन पर जितनी थी, उससे उन्हें प्रधानमंत्री बनना चाहिए था।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए बिहार विधान सभा में विपक्ष के नेता **श्री सुशील कुमार मोदी** ने कहा कि राजनीति में भ्रष्टाचार निरंतर बढ़ रहा है और नैतिकता तेजी से खत्म हो रही है। ऐसी विकट परिस्थिति में यदि सरदार पटेल मौजूद होते तो राजनीति में उच्च आदर्शों को स्थापित कर भ्रष्टाचार को खत्म करने की लड़ाई लड़ सकते थे। बिहार विधान परिषद में प्रतिपक्ष के नेता **डॉ. उमेश्वर प्र. वर्मा** ने सरदार के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि समाज में आई विकृतियों को दूर करने के लिए सरदार पटेल के बताए रास्ते पर चलना होगा। सरदार पटेल के समान राष्ट्र के प्रति दायित्व बोध का उदय होने पर ही देश का कल्याण हो सकता है। **बिहार के लघु सिचाई मंत्री श्री विजय कृष्ण** ने कहा कि यदि सरदार पटेल प्रधानमंत्री बन जाते तो पिछड़ों, किसानों और दलितों के साथ वह अन्याय नहीं होता जो अब तक चल रहा है। **बिहार के वाणिज्य कर मंत्री श्री उपेन्द्र प्र. वर्मा** ने इस अवसर पर कहा कि लौह पुरुष सरदार पटेल ने यह सीख दी थी कि देश-राज्य हित में निर्णय नहीं बदलना चाहिए। समता पार्टी के प्रवक्ता **श्री पी.के. सिन्हा** ने कहा कि उग्रवादियों के समक्ष राज्य सरकारों के समर्पण को देखकर सरदार पटेल के गुण तथा चरित्र का स्मरण हो आता है। समाजवादी नेता तथा बिहार के पूर्व मंत्री **श्री भोला प्र. सिंह** ने जब अपने भाषण में सामाजिक न्याय के नए नारे को सरदार पटेल से जोड़ा तो श्रोताओं के एक बड़े वर्ग ने इसका विरोध किया। समारोह में **विधायक सतीश कुमार, तथा भा.प्र.से. के श्री संजय कुमार सिंह** ने भी सरदार को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मंच के द्वारा आयोजित लौह पुरुष सरदार पटेल के 122वें जयंती-समारोह के अवसर पर मंचासीन हैं दाएं से सर्वश्री उपेन्द्र प्र. वर्मा, सुशील कुमार मोदी, जियालाल आर्य, धर्मपाल सिन्हा, डॉ. उमेश्वर प्र. वर्मा, डॉ. ब्रहमदेव प्र. कार्यी तथा मंच-संचालन कर रहे पीछे खड़े हैं मंच के महासचिव सिद्धेश्वर।

प्रारम्भ में मंच के महासचिव **श्री सिद्धेश्वर** ने अपने प्रतिवेदन में पूरे वर्ष के कार्यकलापों की विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित मंच के वैचारिक मुख-पत्र 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रवेशांक का लोकार्पण न्यायाधीश श्री धर्मपाल सिन्हा के कर-कमलों द्वारा हुआ। पत्रिका की विशेषताओं को प्रस्तुत किया **कविवर गोपी वल्लभ सहाय ने तथा कविवर सत्यनारायण** ने इसकी समीक्षा की।

समारोह की अध्यक्षता जहाँ मंच के अध्यक्ष **श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.** ने की वहीं आगत अतिथियों तथा सुधी श्रोताओं का अभिनन्दन किया मंच के आजीवन सदस्य **श्री कामेश्वर मानव** ने। मंच के सक्रिय सदस्य **श्री सुधीर रंजन** ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। समारोह के अन्त में कार्यकारिणी सदस्य एवं गीतकार **श्री राजकुमार 'प्रेमी'** तथा दूरदर्शन, पूर्णिया के कलाकारों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

2. देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 113वीं जयंती पर विचार संगोष्ठी

मंच की ओर से विगत 3 दिसम्बर, 1997 को संध्या 4 बजे पटना के बुद्धमार्ग स्थित आई.आई.बी.एम. के सभागार में भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 113वीं जयंती के अवसर पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था **"लोकतन्त्र की चुनौतियाँ और प्रबुद्धजनों की भूमिका"**। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता **प्रो. (डॉ.) वीरकेश्वर प्र. सिंह** ने उक्त विषय पर अपने विद्वतापूर्ण आलेख प्रस्तुत

देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 112वीं जयंती पर मंच की ओर से आयोजित विचार संगोष्ठी में बाए से बैठे हैं सर्वश्री पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा, अरुण कुमार सिंह, वीरकश्वर प्र. सिंह, नन्दलाल, जियालाल आर्य तथा मनीष कुमार

करते हुए कहा कि आजादी की अर्द्धसदी के सफर में हमारे देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था के समक्ष जो चुनौतियाँ हैं वह हमारे लोकतन्त्र के लिए अत्यन्त ही खेदजनक बात है । जो चुनौतियाँ हैं उसमें प्रमुख हैं भष्टाचार, राजनीतिक अपराधीकरण, अपारदर्शिता, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता, उग्रवाद, अलगाववाद एवं राष्ट्रीयता की भावना का अभाव । इससे निपटने के लिए उन्होंने बुद्धिजीवियों को आगे आने तथा नेतृत्व संभालने का आह्वान किया । संगोष्ठी में **डॉ. पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा** ने लोकतन्त्र की सफलता के लिए सुदृढ़ और मजबूत केन्द्र पर बल दिया ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के पद से अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए बिहार के महालेखाकार (लेखा परीक्षा) **श्री नन्दलाल** ने कहा कि नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना के लिए नैतिकता का विद्यमान रहना आवश्यक है । **श्री अरुण कुमार सिंह**, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ने कहा कि राजनीति में जाति की पैठ ने लोकतन्त्र की जड़ को खोखली कर दी है ।

प्रारम्भ में विषय प्रवेश किया **श्री सिद्धेश्वर** ने तथा स्वागत भाषण किया **डा.एस.एफ. रब** ने । अतिथियों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया **श्री मनोज कुमार** ने ।

3. रेणु की 77वीं जयंती पर साहित्यिक-संगोष्ठी का आयोजन

मंच के द्वारा विगत 4 मार्च, 1998 को पटना के पुरन्दरपुर स्थित 'बसेरा' में मंच के केन्द्रीय कार्यालय-प्रांगण में अमरकथा शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु की 77वीं जयंती के अवसर पर एक साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें **'रेणु-साहित्य की प्रासांगिकता'** विषय पर बी.डी. इवनींग कॉलेज के हिन्दी प्राध्यापक **प्रो. कैलाश 'स्वच्छन्द'** ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि रेणु का सम्पूर्ण साहित्य जनसाधारण की अभिव्यक्ति का साहित्य है । उनके साहित्य में जनसाधारण के प्रति गहरी संवेदना की झलक मिलती है । इसके पूर्व मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने विषय प्रवेश के दौरान **प्रो. लखन लाल सिंह 'आरोही'** का आलेख प्रस्तुत किया जिसका विषय था **'रेणु की कथाओं में साधारण की प्रतिष्ठा के लिए विचारधारात्मक संघर्ष'** जिसे अलग से इस अंक के साहित्य स्तम्भ में प्रकाशित किया गया है ।

इस अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि **प्रो. रामबुझावन सिंह** ने रेणु से जुड़ी अपनी अन्तरंगता के अनेक रोचक एवं मार्मिक संस्मरण सुनाते हुए उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । संगोष्ठी में कविवर **हरीन्द्र विद्यार्थी श्री हरिहरनाथ, प्रो.बी.एन. विश्वकर्मा, तथा श्री बलभद्र कल्याण** ने भी रेणु के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डाला । आगत अतिथियों तथा श्रोताओं के प्रति मंच की ओर से आभार व्यक्त करते हुए श्री कामेश्वर मानव ने कहा कि रेणु की पीड़ा में साधारण की पीड़ा ध्वनित होती थी । रेणु के सामाजिक न्याय से वंचित पात्र सम्मान के लिए हर जगह जुझारू तेवर में संघर्षरत हैं ।

4. मंच के महासचिव का मुम्बई दौरा

राष्ट्रीय विचार मंच तथा राष्ट्रीय विचार पत्रिका के उद्देश्यों को लेकर मंच के महासचिव तथा पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री सिद्धेश्वर ने विगत 25 जनवरी, 98 से 31 जनवरी, 98 तक मुम्बई का दौरा किया । 25 से लेकर 29 जनवरी तक मुम्बई स्थित केन्द्र तथा राज्य सरकार के विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ मुम्बई के विभिन्न तबकों के लोगों से बातचीत की । फिर 30 जनवरी, 98 को भाण्डुप स्थित सी.जी.एस. कॉलोनी के एक विद्यालय में प्रबुद्धजनों की एक बैठक आयोजित की गयी जिसमें श्री सिद्धेश्वर जी ने देश व समाज की बातों को विस्तार से प्रस्तुत किया । इसी के परिप्रेक्ष्य में मंच एवं पत्रिका की आवश्यकता पर बल दिया । राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित उनके विचारों को सभी उपस्थित सदस्यों ने सराहा । अ.भा. ऑडिट एण्ड एकाउन्ट्स ऑफिसर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री के. उन्नीकृष्णन ने श्री सिद्धेश्वर जी के विचारों पर अपनी सहमति जताते हुए मुम्बई में मंच की शाखा के गठन का एक प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया । वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी **श्री एन.एस. जगजापे** शाखा की

प्रधान सपादक सपरिवार मुबइ दौरे के क्रम में गेटवे आफ इंडिया के पास होटल ताज के सामने

व्यक्त किए। अध्यक्ष डॉ. राय के प्रस्ताव पर यह निर्णय लिया गया कि मंच की मुम्बई शाखा की गठित तदर्थ समिति के पदेन सदस्य होंगे ओ. एन.जी.सी. कॉलोनी स्थित मित्र बिहार के अध्यक्ष तथा उनकी अनुपस्थिति में उनके प्रतिनिधि तदर्थ समिति की बैठक में भाग लेंगे।

5. प्रधान संपादक का बोकारो दौरा

बोकारो इस्पात नगर के प्रबुद्धजनों के आमंत्रण पर 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर ने विगत 8 फरवरी, 98 को बोकारो के आदर्श कोऑपरेटीव कॉलोनी में विशेष रूप से सेक्टर 12 के प्रबुद्धजनों की एक बैठक जो वनभोज के अवसर पर आयोजित

तदर्थ समिति के संयोजक और **सर्वश्री के. उन्नीकृष्णन, कैलाश नाथ चतुर्वेदी, यज्ञनारायण राय तथा शारदा नन्द सिंह** उसके सदस्य निर्वाचित हुए। बैठक के अध्यक्ष ता.चा. खन्ना उर्फ **बाल कवि 'प्यासा' पत्रिका के प्रतिनिधि तथा शारदा एवं विवेक** संवाददाता मनोनीत किए गए। इसी प्रकार मुम्बई के पनवेल स्थित ओ.एन.जी.सी. कॉलोनी **में डॉ. आर. राय,** उपमहाप्रबंधक (पी.) की अध्यक्षता में एक बैठक विगत 31 जनवरी,98 को हुई जिसे पत्रिका के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर ने संबोधित करते हुए मंच तथा पत्रिका के उद्देश्यों पर **प्रकाश डाला। सर्वश्री प्रकाश चन्द्र नवीन, प्रभात किशोर, एच. पी. राम तथा मानेन्द्र कुमार सिन्हा ने भी अपने विचार**

की गयी थी को सम्बोधित किया तथा लोगों को देश तथा समाज के प्रति अपने दायित्व के निर्वाह के लिए आह्वान किया। बैठक की अध्यक्षता **श्री डी.के. सिंह** ने की। उन्होंने अपने उद्गार में पत्रिका को हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। बैठक में उपस्थित अधिकतर सदस्यों ने पत्रिका की आजीवन सदस्यता ग्रहण करने की अपनी इच्छा जाहिर कर संपादक का मनोबल बढ़ाया। उल्लेखनीय है कि **त्रिमूर्ति ज्वेलर्स के श्री सुरेश कुमार** ने इस पूरे आयोजन में समन्वय करते हुए अपनी अहम् भूमिका अदा की जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। विश्वास है श्री डी. के. सिंह के सौजन्य से श्री सुरेश कुमार पत्रिका का गाड़ी को आगे बढ़ाने में अपनी क्षमता एवं सहृदयता का परिचय देंगे। मंच के द्वारा उठाए गए इस सामाजिक एवं साहित्यिक अनुष्ठान में उनका योगदान श्रेयष्कर होगा।

6. महासचिव का दिल्ली दौरा

राष्ट्रीय विचार मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने 14 मार्च 98 को पटना से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया और वे फिर 22 मार्च को दिल्ली से पटना के लिए विदा हुए। इस अवधि में उन्होंने दिल्ली के प्रबुद्धजनों से न केवल भेंट कर मंच तथा पत्रिका के उद्देश्यों को सामने रखा वरन् पिछले 21 मार्च 98 को एक विचार संगोष्ठी का भी आयोजन किया।

दिल्ली के भगवान दास रोड स्थित भारतीय विधि संस्थान के सभागार में विगत 21 मार्च को आयोजित प्रबुद्धजनों की बैठक में राष्ट्रीय विचार मंच की दिल्ली शाखा का गठन किया गया। इसकी तदर्थ समिति के निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य निर्वाचित हुए। संरक्षक : सर्वश्री जी. सी. श्रीवास्तव, अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक, अध्यक्ष-मान. न्यायाधीश श्री बी.एल. यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता (उच्चतम न्यायालय), उपाध्यक्ष-श्री जे.एन. पी. सिन्हा (विज्ञान एवं तकनीकी विभाग), जैनुद्दीन अंसारी, प्रशा. अधि., राजभाषा सीताराम सिंह (वरिष्ठ लेखा परीक्षक), संयुक्त सचिव : बी. के. झा (प्रतिरक्षा मंत्रालय), कार्यकारिणी के सदस्य श्री मिथिलेश श्रीवास्तव, डॉ. राजेन्द्र गौतम, आत्माराम फोन्दणी 'कमल', प्रमोद कुमार सिंह, प्रो० कुमार सुरेश, नारायण खान, डॉ. वी. के. मोहन्ती, सतीश कुमार, सत्येन्द्र शर्मा, संजय सिंह, संजय गुप्ता, नरेन्द्र कुमार 'अम्बष्ट', अवधेश कुमार सिन्हा, सतीश चन्द्र पन्त, कृष्ण कुमार।

दिनांक 21 मार्च '98 को ही भारतीय विधि संस्थान (दिल्ली) में रा.वि. मंच के तत्वावधान में "स्वतन्त्रता-संग्राम की पृष्ठभूमि में हिन्दी एवं विधि पत्रकारिता की दशा और दिशा" विषय पर एक विचार संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव (अपर उप नियंत्रक, महालेखापरीक्षक) ने की। मान्य अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत श्री सिद्धेश्वर ने किया। संगोष्ठी का विधिवत उद्घाटन डॉ. विजय नारायण मणि ने किया। मुख्य अतिथि के पद से उद्गार व्यक्त किया माननीय न्यायाधीश श्री बी.एल. यादव ने। कार्यक्रम का संचालन किया श्री सिद्धेश्वर ने।

संगोष्ठी के द्वितीय चरण में आयोजित काव्य गोष्ठी में अपने काव्य-सुधा-रस का पान कराने वाले कवियों में श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, मिथिलेश श्रीवास्तव, राज गोपाल सिंह, डॉ. राजेन्द्र गौतम, आत्माराम फोंदणी "कमल", डॉ. द्वारिका नाथ सोपोरी, डॉ. मेदिनी राय, डॉ. बद्रीनाथ झा, सुशीला सितारिया, अवधेश कुमार सिन्हा एवं सिद्धेश्वर प्रमुख हैं। आत्माराम जी ने काव्य गोष्ठी का संचालन किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया सीताराम सिंह ने।

इस संगोष्ठी में श्री आत्माराम फोन्दणी "कमल" कृत काव्य संग्रह "अर्द्धशती यूं बोली" का लोकार्पण डॉ. विजय नारायण मणि ने किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संपर्क पदाधिकारी नारायण खान का सहयोग सराहनीय रहा।

योग की उपादेयता

❒ गंगा प्र. रोसड़ापुरी 'गंगेश'

संस्कृत के युग धातु से योग बना है जिसका अर्थ है–जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ना। परमात्मा से संबंध बनाने के लिए आठ प्रकार की विधियाँ हैं–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इनमें प्रथम चार बहिरंग और शेष चार अन्तरंग हैं।

"योगश्चित वृति निरोध: योग:"

–योग पतंजलि

अधिक वस्तुओं के भोग से, होता आया है रोग, रोग के निवारण हेतु तो आवश्यक है मात्र योग।

वास्तव में चित्त वृतियों के वाह्य जगत् के विषयों में लिप्त होना तथा इन्द्रियजन्य विषयों में सुखानुभूति कल्पना नहीं होती है। ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा, मोक्ष आदि विषय काल्पनिक तथा झूठे लगते हैं।

शरीर सिद्धि के लिए योग के आदि प्रवर्तक आदि नाथ भगवान शंकर ने 84 लाख आसनों का वर्णन किया है–

"आसानानि च तावन्तो या वन्तोजीव जन्तवा।
एतेषा मखिलानी भेदान विजानाति महेश्वर:"॥

इस जगत् में 84 लाख जीव हैं। 84 लाख जीव को इतना समय कहाँ है कि वह अपने शरीर की नीरोगता के लिए 84 लाख आसन नित्य किया करे। इसलिए कम से कम 84 आसन करने का विधान बनाया गया है। 84 आसन भी संभव नहीं हो सके तो कम से कम 14 आसन अवश्य नित्य करना चाहिए। अगर इतना भी बन नहीं पड़े तो 7 आसन अवश्य करना चाहिए। अगर इसमें भी कठिनाई हो तो कम से कम कोई एक आसन नित्य सबों को करना चाहिए।

जनश्रुत है कि इतना समय कहाँ है कि आसन-प्राणायाम लोग किया करे। व्यर्थ की बातचीत और अकर्म में लोग समय बिताते आए हैं पर सकर्म में आत्मा को परमात्मा में जोड़ने से लोग जी चुराते आए हैं। इसलिए तो कहा गया है–

"चल उठ मुसाफिर अब रैन कहाँ जो सोवत है।"

आसन से शरीर के अधिकांश रोग जाते रहते हैं लेकिन यह एक दिन में नहीं कालान्तर में। बुढ़ापा अन्तकाल में आता है। इन 84 आसनों में से सबसे उपयोगी शीर्षासन, सर्वांगासन, पद्मासन, बज्रासन और पश्चिमोत्तासन मुख्य है। शीर्षासन तथा सर्वांगासन में से किसी एक को करना परमावश्यक है। जो लाभ शीर्षासन से मिलता है वही लाभ सर्वांगासन से मिलता है। पर शीर्षासन पीत प्रकृति वालों के लिए वर्जित है। जिसकी आँखें लाल हो गई हों उसे यह आसन नहीं करना चाहिए। हृदय रोग के रोगी के लिए भी यह आसन वर्जित है। शीर्षासन या सर्वांगासन एक मिनट से पांच मिनट तक अवश्य करना चाहिए। शीर्षासन से जहाँ पूरा लाभ होता है वहीं सर्वांगासन से आधा लाभ मिलता है। इन दोनों आसनों से रक्त का शुद्धिकरण होता है। आँख की ज्योति बढ़ती है तथा बाल नहीं पकते हैं। बुढ़ापा दूर रहता है। मेरुदंड पर जोड़ पड़ने या सीधा रहने से इसमें लचक बना रहता है जिस कारण युवापन की स्थिति सदा बनी रहती है। इससे कुष्ट रोग भी धीरे-धीरे छूट जाता है। बशर्ते कि सर्वांगासन करने के बाद एक ग्लास पानी या दूध पी लिया जाय। कुंडलिनी शक्ति जागृत हो जाती है जिसके बल से ब्रह्मांड को भी हिलाने की शक्ति आ जाती है। इसके अतिरिक्त स्मरण शक्ति तेज हो जाती है। सदा तन पर ताजगी, मन में शान्ति और मुख पर कांति बनी रहती है।

संपर्क : रोसड़ा-1, समस्तीपुर, बिहार, पिनं-848210

माँ, बच्चा और स्वास्थ्य

❒ डा. अवधेश प्र. सिंह

स्वास्थ्य शिक्षा आवश्यक

अपने बच्चों एवं परिवारों के बेहतर देख-रेख के लिए माताओं को स्वास्थ्य शिक्षा देना अनिवार्य है। माताओं को स्वास्थ्य शिक्षा देने का उद्देश्य यह नहीं हुआ कि वह अपने बच्चे एवं परिवार के अन्य सदस्य पर डॉक्टरी (इलाज) करें बल्कि उसका अभिप्राय यह हैं कि आपके परिवार में जो सीमित संसाधन उपलब्ध हैं उसी का उपयोग करके घर में स्वास्थ्य, भोजन एवं रहने की उचित व्यवस्था कर सकें।

इस स्वास्थ्य शिक्षा के अन्दर तीन बातों पर ध्यान देना जरूरी है –

(1) खाने पीने का जो भी सामान उपलब्ध है उसी में सस्ते से सस्ते खर्च पर पौष्टिक आहार ढूंढ़ना एवं उसे कुशल एवं युक्तिपूर्ण तरीके से खाने के योग्य तैयार करना। ऐसा करने से बच्चों को कुपोषण से बचाया जा सकता है। खाने के लिए चावल, दलहन, हरी साग-सब्जी सभी साधारण परिवार में उपलब्ध है। चावल में पौष्टिकता बहाल रखने के लिए उसके माड़ का उपयोग होना चाहिए या चावल को प्रेशर-कुकर में बनाया जाना चाहिए ताकि माड़ का सभी पोषक तत्व चावल में रहे, इसके साथ अरवा चावल के बदले उसना चावल का प्रयोग करें।

गेहूँ की रोटी बनाने में चोकर उसी में दें एवं रोटी को तेज अग्नि पर नहीं पकावें एवं उसे खास्ता करने के फेर में उसे जलावें नहीं, नहीं तो उसका पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाएगा।

हरी सब्जी को काटने के पहले अच्छी तरह धो दें और काटने के बाद नहीं धोंए ताकि उसके पौष्टिक तत्व कटे हुए सतह से पानी में घुलकर निकल न जाए तथा सब्जी बनाते समय उसे कड़ाही में खूब नहीं भूनें जिससे कि उसका विटामिन (मिनरल्स) जल न जाए।

(2) **बच्चों का जान लेवा संक्रामक रोग :** बच्चों के लिए प्रतिरक्षण कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी माता को होनी चाहिए जिसकी पूरी सुविधा सरकारी अस्पताल से मुफ्त में उपलब्ध है।

(3) घर में रहने-सहने, स्वस्थ वातावरण एवं घर की सफाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए, साथ में शुद्ध पेय-जल पर भी ध्यान देना बहुत जरूरी है।

इन तीन बिन्दुओं पर अगर घर की गृहिणी को प्रशिक्षित किया जाए तो वे अपने-अपने बच्चों को एवं परिवार के अन्य सदस्यों को संक्रामक रोग एवं कुपोषण वगैरह से कम खर्च में बचा सकती हैं।

यह सच्चे अर्थ में माताओं के लिए स्वास्थ्य शिक्षा है जिसके लिए कोई अलग से खर्च करने की आवश्यकता नहीं है।

संपर्क : सती स्थान, मसौढ़ी, पटना

स्वास्थ्य संबंधी सूचना : राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त औषधि विशेषज्ञ डॉ. एस.एन. आर्य ने पाठकों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान इस पत्रिका के माध्यम से देने की अपनी सहमति प्रदान की है। अतएव आप पाठकों से अनुरोध है कि आप भी अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्या का हल पाने के लिए अपने पत्र निम्न पते पर भेजें —
डॉ. संतोष कुमार, प्रभारी : सेहत-सलाह, रा.वि. पत्रिका, बी/३०१, लक्ष्मी अपार्टमेन्ट, मूलचंद प्रथ, चित्रगुप्तनगर, लोहियानगर, पटना-८०००२०

कंप्युटर युग 'वर्ष 2000'-एक समस्या

❑ सुधीर रंजन

इक्कीसवीं सदी की ओर जहाँ हम बढ़ते जा रहे हैं वहीं कंप्युटर के लिए एक ऐसी समस्या का आना वस्तुत: एक चुनौती है । आज पूरा विश्व कंप्युटर नेटवर्क से जुड़ चुकी है कोई भी व्यक्ति अपने कंप्युटर को इंटरनेट से जोड़कर घर बैठे विश्व के किसी भी कोने में स्थित कंप्युटर में रखी गई जानकारी मात्र कुछ सेकेंडों में हासिल कर सकता है । दुनिया की मशहूर कंप्युटर शख्सियत बिल गेट्स ने तो इस युग में चार चाँद लगा दिया है। आज हम यह कहने की स्थिति में हैं कि।

कंप्युटर की महिमा अनत, अनत कियो उपकार।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार।

'वर्ष 2000' एक समस्या जिसे Y2K समस्या अथवा सहस्त्राब्दि परिवर्तन/मिलनियम बग भी कहा जाता है ।, इसलिए पैदा हुई है क्योंकि कंप्युटर 1999 के बाद तारीखों को सही-सही प्रोसेस करने में अक्षम है । कंप्युटर प्रोग्राम एक ऐसी तारीख से शताब्दी को सही सही स्पष्ट करने में अक्षम है जिसमें वर्ष दो अंक में प्रस्तुत किया जाता है । अधिकतर कंप्युटर प्रणालियों में तारीखों को मूल रूप में छह अंकों में लिखा गया है जिसमें दिन, महीने और वर्ष प्रत्येक के लिए दो अंक हैं और व्यापारिक कामकाज में दो अंकों में वर्ष को अंकित करना औद्योगिक मानक बन गया है । उदाहरण के लिए वर्ष 1998 में '98' के रूप में । किन्तु 1999 पार करते ही यह अंक प्रणाली विफल हो जायगी । उदाहरण के लिए वर्ष 2000 को '00' के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा । सन् 2000 और 1999 के बीच का अन्तर-99 की आयेगी न कि + 1 इसका अर्थ यह होगा कि सन् 2000 में होने वाली घटना को 99 वर्ष पूर्व दर्शाया जायेगा, इससे किसी भी तारीख आधारित प्रयोग में गंभीर जटिलताएं सामने आयेंगी । इससे सामाजिक सुरक्षा, पुरस्कारों, शेयर व्यापार प्रणाली आदि के समक्ष बहुत ही गंभीर समस्या पैदा होगी ।

वर्ष 2000 समस्या एक गंभीर व्यापारिक खतरा है । इससे कई अन्य संस्थानों के अलावा वित्तीय, मडिकल और सरकारी संगठनों पर गंभीर असर पढ़ेगा। । अनेक महत्वपूर्ण व्यापारिक अनुप्रयोग वर्ष/दिन संरचनाओं पर निर्भर करता है क्योंकि लेन देन में तारीख और समय सही सही दर्ज होना बड़ा जरूरी होता है । खास तौर पर राजस्व संबंधी प्रयोग दिनांक आधारित गणकाओं पर अधिक निर्भर करता है ।

अनेक लोगों को इस बात पर आश्चर्य होगा कि इस समस्या का समाधान पहले क्यों नहीं सोचा गया जबकि साफ्टवेयर का विकास किया जा रहा है, प्रारंभ में सूचनाएं एकत्र करने के लिए दो अकों का इस्तेमाल किया गया क्योंकि कंप्युटर की मेमोरी पर लागत बहुत आ रही थी । हालांकि यह बात सच है कि शुरू में सॉफ्टवेयर कार्यक्रमों का विकास करने वाले लोगों ने यह उम्मीद नहीं की थी कि उनके कार्यक्रम सन् 2000 तक कायम रहेंगे या हो सकता है कि वे वर्तमान आवश्यकताओं में इतने व्यस्त रहे होंगे कि उन्हें भविष्य के बारे में सोचने की फुर्सत ही न मिली हो । वैसे इस समस्या के हल के लिए विश्वव्यापी प्रयास जारी है ।

संपर्क : 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

नई खोज :

हू मैन क्लोनींग (जीन)

जीन के सहारे मानव प्रतिरूपन तैयार करना

1977 ई. में अमेरिका के वैज्ञानिक ने 'हू मैन क्लोनींग' (जीन) के द्वारा मानव को उसके मूल रूप में अजर-अमर करने की खोज की है । इसके अनुसार मनुष्य के अनुवांशिक इकाई जीन को वैज्ञानिक विधि से सुरक्षित रखकर महिला के यूट्रस (बच्चादानी) में इन्जेक्शन द्वारा हू मैन क्लोनींग को प्रवेश कराने पर मनुष्य को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अजर-अमर किया जा सकता है ।

जो मनुष्य मरणासन्न है, बच्चा है या युवा, उसके शरीर से अभी भी जीन निकालकर विशेष विधि द्वारा सुरक्षित रख लिया जाय और जब इसकी मृत्यु हो जाय तो इस रखे हुए हू मैन क्लोनींग को महिला के यूट्रस या परखनली में प्रवेश कराने पर मृतक जीव पुन: वैसा ही जीवित जीव बनकर अन्तराल में तैयार हो जाता है ।

प्रारम्भ में एक भेंड़ पर इसका प्रयोग किया गया भेंड़ का प्रतिरूपन सही निकला । इसके बाद मनुष्य पर किया गया । मनुष्य का प्रतिरूपन भी सही निकला । अब तो दुनिया में इस आविष्कार को लेकर हलचल मच गयी है । अमेरिका सहित 16 देशों की सरकार ने इस पर रोक लगा रखी है । 24 देशों की सरकार ने अपने-अपने हस्ताक्षार कुल 40 देशों की सरकार द्वारा पूरे तौर पर इस खोज पर ही रोक लगा दी गयी है ।

यों तो स्वयं जनसंख्या विस्फोट के कारण दुनिया के लोग तवाह हैं । मानव प्रतिरूपन द्वारा तो और जनसंख्या विस्फोट होनी, धरती पर पैर रखने की जगह नहीं मिलेगी । रोज खून-खराबा, शोर-शराबा, हत्या आदि होती रहेंगी । इसके कारण इस खोज पर प्रतिबंध लगाना जरूरी हो गया ।

प्रस्तुति : राम मोहन प्रसाद 'राम'
रोसड़ा-1, समस्तीपुर

इन्हें भी चाहिए स्वच्छ पर्यावरण

❒ समीर कुमार सिन्हा

शहरों के विकास की गाथा कहने वाली, कुकुरमुत्ते की तरह पनपती बहुमंजिली, गगनचुम्बी अट्टालिकाओं ने क्या कभी अपने करीब की झुग्गी-झोपड़ियों की करुण क्रंदन सुनी है ? शायद नहीं । यह क्रंदन किसी और की नहीं बल्कि इन्हीं अट्टालिकाओं को आधार स्तंभ देने वाले कुव्यवस्था के शिकार मजदूरों एवं उनके परिवार वालों के हैं । जी हाँ ! यह जिंदगी की व्यथा है एक झुग्गी में रहने वाले एक कर्मठ बढ़ई की जिसने इन इमारतों की दरवाजों एवं खिड़कियों को अपने रंदे से चिकना किया है । यह दुर्वस्था है उन लोगों की जो शहरी अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण अंग हैं तथा जिनके पास कुछ आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ अल्पमात्र हैं ।

उचित आजीविका की तलाश, अधिक आमदनी की लालसा तथा शहर की चकाचौंध का हिस्सा बनने के लिए ग्रामीण गरीब जनता का शहरों की ओर पलायन ही उन्हें झुग्गी-झोपड़ियों की अमानवीय स्थितियों का वासिंदा बना देता है । शहर की ओर पलायित ग्रामीण जनसंख्या शहर के बाहरी हिस्से तथा बेकार पड़ी जमीन, फ्लाई ओवरों के नीचे, रेल-पटरियों के किनारे अपना बसेरा बना लेती है जिसे अंग्रेजी में "स्लम" कहा जाता है ।

सरकारी उदासीनता, सुविधाओं के अभाव तथा गरीबी के कारण इन स्थानों की स्थिति नरक तुल्य होती है । यहाँ न तो शुद्ध पेय जल की उचित व्यवस्था होती है न ही गंदे जल के निष्कासन की । गरीबी के कारण झुग्गीयों में रहने वाले लोग निजी पेय जल के साधनों जैसे हैंडपंपों एवं कुओं आदि के निर्माण में असमर्थ होते हैं । यहाँ उचित शौचालय के अभाव के कारण खुले में मल-त्याग की क्रिया की जाती है जिससे कई बीमारियों के फैलने का खतरा रहता है । जल-जमाव तथा गंदगी के कारण मक्खियों एवं मच्छरों को पनपने का भरपूर अवसर प्राप्त होता है जिससे टाईफाइड, कॉलरा, मलेरिया आदि कई बीमारियाँ फैलती हैं । झुग्गीयों की दुर्व्यवस्था एवं दयनीय स्थिति के लिए सरकारी तंत्र भी काफी हद तक जिम्मेवार हैं । इन स्थानों पर कुड़े-कचरे का अंबार कई बीमारियों एवं महामारियों को दावत देता है । नगर निगम की गाड़ियाँ शायद ही इन स्थानों की ओर अपना रुख करती हैं। गरीबी के कारण बच्चे कुपोषण की कई बीमारियों से ग्रसित रहते हैं ।

यहाँ घरों में समुचित जगह का अभाव रहता है । एक ही कमरे का उपयोग रहने, सोने, खाना बनाने, अन्य कार्यों तथा यहाँ तक कि पालतू पशु-पक्षियों को रखने के लिए भी किया जाता है । इन कारणों से गंदगी की समस्या सामने आती है । खाना बनाने के लिए लकड़ी, गोबर, कोयला, पत्ते आदि का प्रयोग किया जाता है । इनके जलने से कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रो कार्बन, धुलकण तथा कई अन्य दूषित गैसें निकलती हैं जो स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक होती हैं । इन गैसों से महिलाओं में दमा, श्वासनलिका में अवरोध तथा आँखों की बीमारियाँ होती हैं । यहाँ तक कि विषैले गैसों के कुप्रभाव से गर्भस्थ शिशु भी वंचित नहीं रह पाता है ।

प्रशासन तथा योजना बनाने वाले निकायों की अनदेखी के कारण झुग्गी-झोपड़ियों में समुचित बिजली तथा सड़क का अभाव एक आम बात है । सड़क के नाम पर यहाँ केवल ऊँची-नीची पगडंडियाँ होती हैं जहाँ गंदा पानी जमा होकर कई समस्याएँ पैदा करता है ।

झुग्गी-झोपड़ियों के लोगों की जीवन स्थिति सुधारने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम है वहाँ के निवासियों, खासकर महिलाओं को शिक्षित करना क्योंकि इन क्षेत्रों में रहने वाले पुरुष रोजाना काम पर चले जाते हैं और महिलाएँ घरों में रहती हैं । महिलाएँ गंदगी तथा उसके दुष्प्रभावों से करीब-करीब अनभिज्ञ रहती हैं । यह काम स्वयंसेवी एवं गैर सरकारी संगठन काफी कुशलता पूर्वक कर सकते हैं । भौतिक पर्यावरण एवं सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय संबंध है । महिलाओं को छोटे-छोटे उद्योगों एवं संबंधित क्रियाओं का प्रशिक्षण देकर उनके आर्थिक स्तर को ऊपर उठाया जा सकता है । इससे महिलाएं बेकार के समय का उचित उपयोग कर अर्थलाभ कर सकती हैं ।

सरकारी तंत्र को भी झुग्गीयों की स्थिति सुधारने के लिए उनके प्रति व्याप्त उदासीनता त्यागने की जरूरत है । सुलभ शौचालयों का निर्माण, पेय जल की व्यवस्था, जल निकासी के लिए नालियों का निर्माण, पक्के मकान की व्यवस्था आदि काम सरकारी हिस्से का है । इन क्षेत्रों में धुंआ रहित चुल्हे के निर्माण की तकनीक का प्रचार कर महिलाओं को धुएं से होने वाली बीमारियों से बचाया जा सकता है । बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य-रक्षा के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है । झुग्गी-झोपड़ियों के पुनर्वास की व्यवस्था सरकार द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है जिसमें गति की आवश्यकता है । झुग्गीयों में रहने वाले इस उपेक्षित जनसमूह की नगर की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है । ये भी तो हांड-मांस के बने प्राणी हैं, अतः इनकी उपेक्षा क्यों ?

संपर्क : प्रथम मंजिल, कृष्णा कुटीर, न्यू लालजी टोला, पटना-1

सृजनहारों से :

- रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है । सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं ।
- रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए । रचना के अन्त में उसके मौलिक एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें ।
- रचना के साथ पासपोर्ट आकार की श्वेत एवं श्याम अपनी तस्वीर की एक प्रति अवश्य संलग्न करें ।
- यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें ।

संपादक : राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-८००००१

मुम्बई की एक सुखद यात्रा

❒ सिद्धेश्वर

"गावो गन्धेन पश्यन्ति वेदै : पश्यन्ति वै द्विजा :" अर्थात पशु सुंधकर देखते हैं और शिक्षित जानकारी प्राप्त करके । कुछ इसी भाव से पिछले दिनों अवकाश यात्रा रियायत का उपयोग किया मैंने मुम्बई जाकर। अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ 23 जनवरी '98 की रात्रि में मुम्बई के लिए पटना से मैंने प्रस्थान किया । साथ में थी मेरी ब्याही बेटी सुधा तथा दामाद अरुण जी ।

सुविधा तथा सस्ती दर पर आवास मिलने के ख्याल से मुम्बई से कुछ पहले के स्थान पर ही ठहरना हमने उचित समझा । सो 25 जनवरी'98 को अपराह्न थाने स्टेशन पर हमसब उतर गए और लगभग सौ गज की दूरी पर स्थित होटल अलका में दो कमरे लेकर चैन की सांस ली । 31 जनवरी'98 की रात 9 बजकर 30 मिनट पर पुनः कुर्ला टर्मिनल पर हमसबों ने पटना के लिए मुम्बई वासियों से विदा ली । मुम्बई महानगर को मैंने प्रत्यक्ष देखा इन सात दिनों में । जैसा देखा उसे वैसे ही रूप में अपनी लेखनी में उतारा और ढेर सारी यादें उड़ेल दी । आप भी देखें हमारी उन यात्रा-स्मृतियों को जिसे मैंने संजोया अपने मानस-पटल पर और लिपिबद्ध किया कागज के इन पन्नों पर ।

जहाँ हमारी टीम के बहुतेरे लोगों को मुम्बई की भागदौड़ में अपनी उपस्थिति दर्ज करती पश्चिम की सुख-सुविधाओं तथा महानगर की अट्टालिकाओं के दिवास्वप्नों में ही डूबे-उतराए रहना भाता रहा, वहीं मेरी निगाह व्यक्तियों, संस्थानों, सरकारी कार्यालयों, स्थानों और स्थितियों पर टिकी और मैं उनमें शामिल हुआ, वहाँ के लोगों के मन को जानने में समय लगाया क्योंकि मेरे सामने थे **राष्ट्रीय विचार मंच** के उद्देश्य और उसके मुख-पत्र **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** के प्रचार-प्रसार के मुद्दें ! स्वाभाविक है कि इन दो बातों की विस्तृत जानकारी हम यहाँ प्रस्तुत करना चाहेंगे । यों मैं इसके पूर्व भी मुम्बई गया था पर सच बताऊँ, मैं बड़ा आकर्षित हुआ इस बार वहाँ के निवासियों खासकर मराठी भाषा-भाषी लोगों से मिलकर, प्रभावित हुआ उनके व्यक्तित्व और बात-व्यवहार से । इतनी भागदौड़, आपाधापी तथा व्यस्तता के बावजूद मेरे लिए वहाँ के लोगों ने समय निकाला, बैठकें आयोजित की जहाँ विचारों के आदान-प्रदान करने का मुझे सुअवसर मिला ।

अजनवी अनजाबी हालतों और स्थानों में, सरकारी कार्यालयों में कार्यरत व्यक्तियों खासतौर से युवाओं से मिलकर-'जकड़ और अकड़' से मिला-जुला एक अनोखा स्वाद दे गया । मुम्बई स्थित लेखा तथा लेखा परीक्षा के विभाग विभिन्न कार्यालयों के अधिकारी **यथा एन.एस. जगजापे, के.उन्नीकृष्णन, एस.रामाकृष्णन, आर.एस. वर्मा, डी.पी. अहीरणी, के.एन. चन्दन, पी. गोपालकृष्णन तथा एस.आर. नायर आदि** की भाण्डुप स्थित सी.जी.एस. कॉलोनी में आयोजित संगोष्ठी में उनकी शालीनता तथा आत्मीयता ने न केवल मेरे हृदय को छुआ बल्कि मेरे मानस-पटल पर एक छाप छोड़ी ।

मुम्बई की व्यस्त सड़कों एवं अनजाने रास्ते पर घूमते हुए मैं सोच रहा था कि मात्र तीन-चार ही दिन तो हुए हैं हमें वहाँ के लोगों से मिले हुए चाहे भाण्डूप के हमारे सहकर्मी हों या फिर पनवेल के ओ.एन.जी.सी. कॉलोनी के डॉ. रामाशीष राय, प्रकाशचन्द्र नवीन, प्रभात कुमार, आशुतोष कुमार, भाई, राजवीर सिंह अरोरा या एच.पी. राम फिर भी कितना भरोसा कर पाते हैं हम एक-दूसरे पर, कितने ध्यान से सुनी लोगों ने देश और समाज से सम्बन्धित हमारी बातों को । इसका अर्थ यह हुआ कि **लोगों में उत्सुकता है देश में छाई घटा को दूर करने की , मझधार में पड़ी नाव को किनारे लगाने की । जरूरत है तो केवल खेवनहार की, लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने की । राष्ट्रीय विचार मंच और इसकी पत्रिका ने इसी दायित्व का निर्वाह मुस्तैदी से करने में अपनी दिलचस्पी दिखाई है और बिहार से बाहर इसने कदम बढ़ाया है ।** मुम्बई की हमारी यात्रा भी इसी की एक कड़ी रही । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे कदम को पत्रिका तथा मंच के सामाजिक एवं साहित्यिक अनुष्ठान में अपेक्षित सहयोग प्रदान करने का भरपूर आश्वासन मिला मुम्बई के आत्मीय एवं प्रबुद्ध बन्धुओं का । सचमुच मैं आभारी हूँ अपने उन सहृदयी भाइयों का जिन्होंने अपने पटना राजधानी से हजारों किलोमीटर दूर हमें अन्यत्र होने का भान भी नहीं होने दिया ।

एक दिन मुझे मे. डेन्सा फार्मेस्यूटिकल्स (प्रा.) लि. के निदेशक श्री डी.के. सिंह से दहिसर जिला के वोरीवली में मिलना था, सो मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती बच्ची प्रसाद जी को भी अपने साथ लेता गया वहाँ । डेन्सा का कार्यालय वहाँ के शिववल्लभ रोड स्थित अनुराग मैन्सन में है जिसमें श्री सिंह का निवास भी । इसे उन्होंने खरीद रखा है । वहाँ न केवल देवेन्द्र कुमार जी से मुलाकात हुई बल्कि उनकी धर्मपत्नी तथा बच्चों और उनके कार्यालय के सहायकों से भी । यों देवेन्द्र जी से पटने में भी वर्षों पूर्व मिल चुका था पर मुम्बई में जिस अपनेपन से वे अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ मिले-बिल्कुल बेतकल्लुफ होकर, वह काबिले तारीफ है । जिद्दकर सिंह दम्पति ने हम दोनों को अपने साथ खाना खिलाया बिल्कुल अपने घर जैसा । उनकी पत्नी तो हमारी श्रीमती जी के साथ घंटों घर-बार की बात ऐसे बतियाई जैसे उनसे वर्षों-वर्षों से काफी परिचित रही हों । लगभग तीन-चार घंटे उनके निवास पर बातचीत करते कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला । सच मानिए, इस बीच देवेन्द्र जी तथा उनके परिवार के सभी सदस्यों ने जिस शिष्टाचार का परिचय दिया, वह अनुकरणीय है । चलते वक्त उन्होंने पत्रिका की आजीवन सदस्यता ग्रहण करने के साथ इसे नियमित रूप से प्रकाशित करने में हर संभव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देकर मंच को कृतार्थ किया । ऐसे ही सहृदयी लोगों के बल बूते इस पत्रिका को निकालने का साहस भी मैंने बटोरा है ।

महाराष्ट्र की इस आर्थिक राजधानी-मुम्बई के दर्शनीय स्थानों की चर्चा के बिना यह यात्रा-वृतान्त पूरा होगा, ऐसा लगता नहीं । सात द्वीपों से बना यह महानगर अपने सौम्य समशीतोष्ण सुखद मौसम से पर्यटकों को हर समय आमंत्रित करता रहता है क्योंकि यहाँ न तो झुलसा देने वाली लू चलती है और न ही

दाँत कटकटाने वाली सर्दी पड़ती है । 603 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले मुम्बई के निवासियों का तीव्र गति से भागता जीवन तथा फिल्मों की चमक-दमक सचमुच देखते बनती है ।

नरीमन प्वालंट से चौपाटी की तरफ बढ़ने पर एक ओर समुद्र तो दूसरी ओर ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएं हैं जो मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हैं । इस आकर्षक दृश्यावलि को देखने का मौका मैंने निकाला खासकर अपनी श्रीमती जी के अनुरोध के कारण । कुछ वर्ष पूर्व भी मेरीन ड्राइव तथा जुहू चौपाटी के लोकप्रिय भ्रमण स्थल का चक्कर मैंने लगाया था पर इस बार की यात्रा ने मुझे झकझोरा । मेरीन ड्राइव की अर्द्धचद्राकार सड़क रात्रि में मालाबार हिल्स से देखने पर किसी सुन्दरी के गले का जगमगाता हार-सी दिखती है । मेरीन ड्राइव से चौपाटी तक के स्थान में समूद्र के किनारे खुली रेतीली जमीन है जहाँ सन्ध्या समय मेले का रूप लेती लोगों की भीड़ तथा समुद्र से उठती लहरों से बच्चों के साथ बड़ों का खेलना और साथ ही युगल-जोड़ियों का उन लहरों के साथ अठखेलियाँ करना किसी के मन को मोह ले सकता है । भींगे पैन्ट-शर्ट में मेरे नाती-गुडडू से हमारी टीम के प्रायः सभी सदस्यों ने लुफ्त लिया यहाँ तक कि उसके माता-पिता ने भी और वह बेचारा सर्दी और ठंढ के मारे परेशान । आखिर उसके मामा रंजन तथा शारदा ने उसकी पीड़ा को समझा । किसी तरह समुद्र तट से बस द्वारा सान्ता कुंज स्टेशन में लोकल ट्रेन पकड़ने के पहले दोनों ने उसे नया सूट खरीदकर दिया तब कहीं जाकर गुडडू के चेहरे पर हंसी आई । चौपाटी पर ही **लौह पुरुष सरदार पटेल** तथा **लोकमान्य तिलक की लगी प्रतिमाओं ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया मानों पर्यटकों से वे दोनों कह रहे थे कि मुम्बई ही वह ऐतिहासिक नगर है जहाँ से बापू ने अंग्रेजों भारत छोड़ों का बिगूल बजाया था ।**

मुम्बई के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करने के दौरान भारत के सबसे बड़े रेलवे स्टेशन विक्टोरिया टर्मिनल से अवश्य गुजरना पड़ता है । इसका नाम बदलकर अब छत्रपति शिवाजी टर्मिनल कर दिया गया है । बताया गया कि यहाँ मध्य रेलवे का प्रधान कार्यालय इटालियन गाथिक पद्धति से बना है । यहीं से भारत की पहली रेल सन् 1853 में चली थी । इससे सटे शहर का सबसे बड़ा मार्केट 'महात्मा ज्योति बा फूले मार्केट है ।'

एक दिन हम सबों को भारत भूमि पर प्रवेश करने के प्रवेश-द्वार के रूप में प्रसिद्ध 'गेट वे ऑफ इन्डिया' जाने का अवसर मिला जिसके ठीक सामने प्रसिद्ध ताज हौटल है । यहीं से लगभग 11 किलोमीटर दूर एक छोटे से टापू पर ऐलिफेन्टा की गुफाएं हैं जिसमें ब्रह्मा, पार्वती तथा नटराज शिवाजी की विभिन्न मुद्राओं में विशाल मूर्तियाँ हैं । उस दिन उन गुफाओं के गेट बन्द रहने की वजह से हम लोग वहाँ तो नहीं जा सके पर मोटर बोट पर चढ़कर समुद्र की जो सैर की, वह यादगार रहेगा । गेटवे ऑफ इन्डिया के पास ही हजारों कबूतरों को गेहूँ चुगाने के दौरान हमारे छोटे नाती छोटू का कबूतरों के बीच नाचना और उसे दौड़-दौड़कर पकड़ना उपस्थित पर्यटकों की भीड़ के लिए एक अच्छा खासा कौतूहल भरा मनोरंजन कर गया ।

बिना सूचित किए काफी दूरी तय कर मलॉड के दी टाइम्स ऑफ इन्डिया परिसर स्थित सुन्दरम् अपार्टमेन्ट में बैंक ऑफ बड़ौदा के अधिकारी श्री राजीव रंजन एवं उनके परिवार के अन्य सदस्यों से मिलना भी कम रोचक नहीं रहा । यह तो कहिए तारीफ है उस टैक्सी वाले की जिसके सौजन्य से हम वहाँ तक जा पाए । बड़ी प्रसन्नता हुई उनसे मिलकर तथा पत्रिका को हर संभव सहयोग का आश्वासन पाकर । उनकी पत्नी की पारिवारिक निजता ने दूरी को दूर कर दिया । बिना किसी तड़क-भड़क के हमलोग मिले और विदा हुए ।

पाठकों, सिद्धेश्वर आपको कुछ पीछे लिए चलते हैं । यह यात्रा-वृतान्त संभवतः अधूरा रह जाएगा यदि मुम्बई स्थित हमारे दो युवा संवाददाता-शारदा और विवेक के बारे में दो शब्द मैं न कह पाऊँ । सच मानिए, थाने के होटल अलका पहुंचने के तुरत बाद से लेकर कुर्ला टर्मिनल पर विदा होने वक्त तक इन दोनों युवकों ने हमारी मुम्बई यात्रा को खुशगवार और सार्थक बनाने में जिस तन्मयता का परिचय दिया उसे शब्दों में बांधना शायद संभव नहीं । मुम्बई के हर चौराहे, हर गलियों और अपने लक्ष्य स्थलों का हम मजा लेते रहे और मुस्कुराते रहे तो इन दोनो नौजवानों के चलते । कहाँ जाना है, क्या खरीदना है, आने वाले कल की क्या योजना है यह सब कुछ उसी के कंधे छोड़ हम लोग निफिक्र हो जाते थे । दोनों आगे-आगे और हम सब उसके पीछे जैसे वे दोनों हमारे स्थाई गाइड हो गए हों । इन दोनों को तो पुरातत्व अथवा पर्यटन विभाग में अपना स्थानान्तरण कराकर स्थाई तौर पर गाइड हो जाना चाहिए । विवेकानन्द प्रसाद जिसे विवेक कहकर ही हमलोग पुकारते रहें हैं, अपने पिता और हमारे सहकर्मी श्री प्रताप नारायण यादव के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत दिख पड़ा । वाचाल पिता का मृदुभाषी एवं मितभाषी विवेक ने जिस उत्साह और समझदारी से हमसबों के कार्यक्रमों में सहयोग किया उसके लिए वह धन्यवाद का पात्र है । शारदा तथा विवेक दोनों के शिष्टाचार चुस्त-दुरूस्त और संक्षिप्त । न नम्रता की चाशनी और न लुका-छिपी अहंकार ।

दोस्तों, अब आप से इजाजत लेने से पहले मुम्बई की हमारी यात्रा में सहयोग प्रदान करने वाले सभी सहकर्मियों , शुभेच्छुओं तक पहुंचा रहे हैं हम अपना आभार इस आशा के साथ कि वे हमें अपना रचनात्मक सहयोग देते रहेंगे ।

संपर्क : **संपादकीय कार्यालय**
'बसेरा' पुरन्दरपुर, पटना-1

पत्रिका–परामर्शी

प्रो० रामबुझावन सिंह	–	बाकरगंज बजाजा, पटना–3, दूरभाष : 664362
मो. अयुब खाँ	–	42, फ्रेजर रोड, पटना–1, दूरभाष : 231708
कविवर गोपी वल्लभ सहाय	–	8/14 गर्दनीबाग, पटना–2, दूरभाष : 251684
बाँके नन्दन प्र० सिन्हा	–	8 एम/58, बहादुरपुर हाउसिंग, कॉलोनी, पटना–20
डा० साधुशरण	–	गीतिका, रोड नं.–2, केसरी नगर, पटना–23, दूरभाष : 287204

एक अकिंचन नौजवान

❒ शारदा नन्द सिंह

विधाता का विधान भी विचित्र है । जहाँ एक हाथ से वह देता है वहीं दूसरे हाथ से उसे छीन भी लेता है । क्या ही विषम स्थिति है, क्या ही विधि की विडम्बना है ? जीवन का यथार्थ जब वही है जहाँ यौवन मलिन होकर वार्धक्य की जीर्ण भूमि पर पुष्प-सा झरकर बार-बार झुलस जा रहा है वहीं ऐसे नित्य के दृश्यों के अवलोकन के बावजूद करूणा के अभाव में व्यक्ति अपना ही वंचक बन-बनकर नित्य विचर रहा है ।

तेज प्रताप के देहावसान का अवसाद भावुक मित्र-हृदय को उद्वेलित करे, यह वाजिब और स्वाभाविक है । सचमुच व्यक्ति जब पारस्परिक संबंधों से अलग हो जाता है तब वह अकेलापन महसूस करता है । इस संस्मरण का लेखक शारदा का अंतस इसी अकेलेपन के दुःख से टीसता हुआ दिखता है क्योंकि अपने अतीत से, अपने मित्र से उसका रिश्ता जो अटूट था । इसलिए मित्रहीन इस संसार में, स्वत्व खोकर ठिठुरते हुए अपने भावों और मनः स्थितियों को वह उड़ेलता है इस संस्मरण में ।

कुछ भी कहें, उस भद्र युवक की याद जब भी आती है तो मेरे मन में भी सिहरन होने लगती है । मन में क्रांति और चेहरे पर क्लान्ति उतर आती है क्योंकि तेज प्रताप न केवल शारदा का अन्तरंग मित्र था बल्कि मेरे पुत्र सुधीर रंजन का सहपाठी भी । यही नहीं राष्ट्रीय विचार मंच के एक निष्ठावान सदस्य के नाते मंच-कार्यालय में उसका आना-जाना बराबर लगा रहता था । सौम्य स्वभाव के तेज प्रताप की समग्रता उसके व्यवहार में थी । जो व्यवहार में था वही उसकी अभिव्यक्ति थी । बाहर से कुछ और भीतर से कुछ का द्वैत्य उसमें नहीं था । इसी समग्रता को अपने इस संस्मरण में प्रस्तुत कर रहे हैं मुम्बई स्थित इस पत्रिका के संवाददाता श्री शारदा । उसकी स्मृति को पत्रिका की ओर से मैं भी नमन करता हूँ । **–प्रधान संपादक**

सुख-दुःख का आवागमन जहाँ सृष्टि की एक सनातन प्रक्रिया का परिणाम होता है वहीं अपने स्वार्थ के पीछे पागल रहना ही, साधारण मनुष्य की प्रकृति होती हैं । जिस प्रकार विधाताके क्रूर हाथों ने हमारे अजीज तेज प्रताप को हमसे छीन लिया, विश्वास नहीं होता कि तेज का अचानक हमारे बीच से चले जाने से उसके रिक्त स्थान को बहुत लोग मिलकर भी नहीं भर सकते ।

सच मानिए, बहुत दिनों तक पटना जाने से भी मैं कतराता रहा क्योंकि 'तेज विहीन' पटना की कल्पना से भी मेरा मन घबरा उठता था । उसकी अनुपस्थिति का भान होते ही संत्रास से शून्य हो जाता था । जिसका एक वाक्य, एक स्पर्श व एक छवि मुझ कई माह तक जीवित तथा जीवन्त रखने के लिए आक्सीजन का काम करती थी, जिसे देखकर मुझे तृप्ति और अपने होने की सार्थकता का अहसास होता था, उसके चले जाने से मुझ पर कैसा बीत रहा है, यह केवल मैं ही महसूस कर सकता हूँ । न जाने, उसने कितनी बार मेरे दुःख को बांटा, अंधेरे को छांटा पर आज उसके बिना मेरे सामने अंधेरा ही अंधेरा है । मुझे पूरी तरह याद है वे दिन जब वह अपनी मृदुल प्रकृति के कारण अपने सहपाठियों तथा सानिध्य में रहने वालों को उससे सही मार्गदर्शन मिला करता था । सज्जनता और सरलता उसमें कूट-कूट कर भरी थी । उसका व्यक्तित्व अतीव सम्मोहक था । वह मधुरभाषी एवं विनम्र स्वभाव के होने के बावजूद स्वाभिमानी था । कोई बात खुलकर कहना और किसी प्रकार का दुराव न करना ये उसके व्यक्तित्व के विशिष्ट गुण थे । उसके मन में किसी खास सहपाठी या मित्र के प्रति व्यामोह, भेद-भाव या पक्षपात का दुर्भाव नहीं रहता था । उसके विचार और आचरण में बड़ा अनोखा तालमेल था । उसका चरित्र और आचरण सचमुच छात्रों तथा सहपाठियों अथवा सहकर्मियों के लिए प्रेरणा-स्रोत था । विचार बिल्कुल सात्विक तथा स्वभाव में उदारता का गुण था । उसमें युवकोचित उत्साह और प्रतिभा शक्ति थी । यही कारण है कि वह सर्वप्रिय था दावा है कि हम, सुधीर, अजय सब उसके अन्तरंग मित्रों में थे ।

ठीक-ठीक याद तो नहीं कि तेज प्रताप से दोस्ती कब और कैसे हुई पर इतना अवश्य है कि हम उम्र होने के कारण भी हम एक दूसरे के करीब आए और जितने कम समय में वह हमसे जुड़ा उतनी ही तेज गति से वह हमसे जूदा भी हो गया ।

तेज प्रताप की सुझबूझ की हम दाद देते हैं । एक बार मुम्बई में जब वह किसी प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने आया था, साथ में था नवीन और सुरेश । अजय और मैं उसे कुर्ला टर्मिनस पर छोड़ने गया था । ट्रेन खुलने में विलम्ब था । भूख भी लग चुकी थी इसलिए तेज और अजय को लेकर मैं पास स्थित मार्केट चला गया नास्ता का पैकेट लाने । वापस लौटकर हमसबों ने जलपान किया और कराया । परीक्षा की वजह से थोड़ी ही देर स्टेशन पर मुसाफिरों खासकर छात्रों की काफी भीड़ हो गई । सब लोग गाड़ी पर चढ़ तो गए पर इतनी ही देर में प्लेटफार्म पर अजय की किसी से बात-बात में बात बढ़ गई । होते-होते हाथापाई की नौबत आ गई । ठीक उसी समय बड़ी तेजी में **तेज प्रताप** घटनास्थल पर आ धमका और व्यवहार कुशलता से उस सलटाकर पुनः हमसबों को ट्रेन पर चढ़ने का इशारा किया । यही थी उसकी सूझबूझ । इस तरह के उससे जुड़े अनेक संस्मरण एक-एक कर मेरे मानस-पटल पर उभर रहे हैं जिसे लिपिबद्ध करना संभव नहीं । चाय की चुस्कियों तथा समोसे खाते-खाते दोस्तों के बीच ठहाका लगाना तथा घंटो-घंटों, समाज तथा देश की दयनीय स्थिति पर चर्चा करना जैसे उसकी आदत हो गयी थी । दोस्तों के बीच 'सर' कहने की परम्परा उसी ने कायम की थी । उसके इन्हीं गुणों के हम कायल थे ।

तेज प्रताप के जीवन का मूल-मंत्र रहा-कर्तव्य पालन के लिए हृदय की दृढ़ता अतिआवश्यक रहना । आखिर तभी तो मध्य रेलवे में अपने कर्तव्य-निर्वहन के दौरान ही रेल से टक्कर खाने की वजह से वह हमारे बीच से अचानक छीन लिया गया और अपने पीछे छोड़ गया शुभेच्छुओं, मित्रों, परिवारजनों तथा रेलवे के सहकर्मियों का एक विशाल समाज । आज वैसा जीवन्त एवं पारदर्शी व्यक्तित्व विरले नजर आता है ।

उसकी सर्वप्रियता का एक उदाहरण तो यह है कि उसके देहावसान के बाद पटना स्थित अल्कापुरी वह मुहल्ले जहाँ तेज प्रताप का अपना मकान है । लोगों ने सर्वसम्मति से उसके मुहल्ले का नाम तेज प्रताप नगर रख दिया । उससे जुड़ी एक और मार्मिक घटना का जिक्र किए बिना शायद यह संस्मरण पूरा नहीं होगा । मुझे स्मरण आता है वह दिन जब वह निधन के कुछ दिन पूर्व पटना आकर अपनी शादी तय कर गया था । उसकी नौकरी हो जाने के बाद उसकी पूजनीया माँ होनेवाली अपनी नई नवेली बहु को देखने के लिए दिल में अरमान लिए अपनी आंखें बिछाए थी । सभी दोस्तों को उसने आमंत्रण दे रखा था । परिवार जनों को शादी की तैयारी करने की बात कह रखी थी । पर भगवान को यह सब मंजूर नहीं था । सबके अरमान सिसकते रहे और जगन्नियता के क्रूर हाथों ने सबों से उसे छीन लिया और तेज प्रताप अग्नि के सात फेरे लगाने के बजाय उसी अग्नि में स्वयं समाहित हो गया । अब हम कहाँ पाएंगे तेज प्रताप सरीखे मित्र ? क्या वह एक बार फिर लौट आएगा मेरे पास ? नहीं, कभी नहीं । तभी तो 'अज्ञेय' जी ने इन पंक्तियों की रचना की है–

"कौन कभी फिर लौट वहाँ आया,
जिस पथ से एक बार वह पार गया है ।"

इन पंक्तियों को स्मरणांजलि के रूप में प्रस्तुत कर **तेज प्रताप** की स्मृति को मैं नमन करता हूँ–

पाटलिपुत्र के उपवन का
सबसे ताजा मुस्कुराता
फूल झर गया है, और
हमारी आँखें भर आईं हैं ।

संपर्क : **प्लैट नं. 617 सी,**
सी.जी.एस. कॉलोनी
भाण्डुप (पूर्व) मुम्बई-42

भूकम्प के साथ जीना सीखें

सार्थक, यथार्थ, सामयिक, सर्वोपयोगी

☐ के.बी. सक्सेना

लेखक

साहित्य की कसौटी यदि सबके हित को माना जाए तो संस्कारधानी जबलपुर में 22 मई 97 को घटित भीषण भूकम्प त्रासदी से भयाक्रान्त सामान्य जनों को धैर्य, सांत्वना व हिम्मत बंधाकर स्थिति का सामना करने तथा भविष्य की परिस्थितियों से जूझने का हौसला व तरीका बताने वाली एकमात्र पुस्तक "भूकम्प के साथ जीना सीखें" साहित्य की कसौटी पर शत-प्रतिशत खरी उतरती है । इस कृति में सरल, सहज भाषा में स्पष्टत: बताया गया है कि प्राकृतिक आपदाएं हमारी नियति का एक हिस्सा है किन्तु कोई भी आपदा इतनी प्रबल नहीं हो सकती जिसके आगे आदमी परास्त हो जाए । आवश्यकता इस बात की है कि आपदाओं का मुकाबला संगठित होकर, सही तरीके से, सही समय पर किया जाए ।

भूकम्प की त्रासदी की आकस्मिकता से स्तब्ध तथा आतंकित जन-गण, शासन व प्रशासन में समुचित तालमेल व तैयारी के अभाव के कारण अफवाहों का लम्बा सिलसिला चला जिसने कई रातों तक लाखों लोगों को जगाए रखा । कवि, कथाकार तथा समाजसेवी इं. संजीव वर्मा 'सलिल' तथा इं. एस.एम. देशपाण्डे ने जनमानस की शंकाओं का समाधान करने का बीड़ा उठाया तथा ध्वस्त मकानों का निरीक्षण कर मरम्मत की तकनीक समझाने का सार्थक व सफल प्रयास किया । विभिन्न मुहल्लों में जन जागरण के लिए अंग्रेजी में होने के कारण आम आदमी की पहुंच से दूर तकनीकी जानकारी को जनभाषा में उपलब्ध कराने के संकल्प के साथ विभिन्न चित्र, चार्ट, प्रदर्शनी व नक्शों को स्वत: तैयार किया ।

बड़े-बड़े शासकीय विभाग जो कार्य लाखों रुपए व्यय करने के बाद भी नहीं कर पाए वह कार्य इं. वर्मा व इं. देशपाण्डे ने कर दिखाया । जन सामान्य के आग्रह पर उन्होंने भारतीय मानक संस्थाओं की संहिताओं का गहन अध्ययन व विश्लेषण कर उसके तकनीकी, प्रावधानों, प्रतिनिधियों एवम् अनुशंसाओं का संक्षिप्त हिन्दी करण कर अपने संसाधनों से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित कर सर्व साधारण को नाम मात्र मूल्य पर सुलभ कराया है ।

भूकम्प को जानें, भूकम्प आते रहे हैं आते रहेंगे, जागरूकता जरूरी, भूकम्पों का वर्गीकरण और दुष्प्रभाव, भवनों का वर्गीकरण, भवनों को क्षति का वर्गीकरण, भूकम्पनीय बल का इमारतों पर प्रभाव, इमारतों में दरारें पड़ने की प्रक्रिया, दरारों के मरम्मत की विधियां, उपचार हीन निर्माण, भूकम्पनीय रक्षा कवच, भूकम्प रोधी भवन निर्माण के मूल तत्व, भारतीय मानक संस्थान की अनुशंसाएं, भूकम्प के पूर्व, दौरान तथा बाद में क्या करें आदि शीर्षकों के माध्यम से महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर सारगर्भित जानकारी दी गई है । लगभग पचास चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक जन साधारण, भवन निर्माता, ठेकेदारों तथा स्वयं सिविल इंजीनियरों के लिए भी बहुत उपयोगी है ।

पुस्तक में पहली बार एपाक्सी रेजीन्स, ओमेशील, ओमेक्रीट तथा आफी क्रीट जैसे आधुनिक पदार्थों की जानकारी दी गई है जिनसे भवन को मजबूत बनाया जा सकता है । भारतीय मानक संस्थान द्वारा 1984 में प्रकाशित भारत का भूकम्पीय मानचित्र जिसमें समूची नर्मदा घाटी को रिचर पैमाने पर 7 शक्ति वाले भूकंप हेतु संवेदी क्षेत्र दर्शाया गया है इस पुस्तक में शामिल है । जबलपुर नगर के ग्रेनाइट फाल्ट (चट्टानी दरारों) का मानचित्र भी पहली बार इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है । यह जानकारी समय पर सर्वसुलभ होती तथा नगर निगम, विकास प्राधिकरण, गृह निर्माण मंडल आदि ने तदनुसार नियम व भवन बनाए होते तो ऐसी व्यापक क्षति न होती ।

प्रशंसनीय है कि युवा अभियंता इं. संजीव वर्मा सिटी केबल पर परिचर्चा, भोपाल से प्रकाशित मासिक शिखर वार्ता में विस्तृत आमुख कथा प्रकाशन तथा 'भूकम्प के साथ जीना सीखें' पुस्तक के माध्यम से अपनी रचनाधर्मिता को जन-गण की सेवा में अनवरत निस्वार्थ भाव से समर्पित किया है । लेखक सिविल इंजीनियरिंग की बारीकियों, नगर की भौगोलिक व भूगर्भीय स्थितियों व तकनीकी जानकारियों से परिचित हैं । भाषा पर उनका अधिकार है । अत: यह पुस्तक गागर में सागर भर सर्वोपयोगी बन पड़ी है । इसे हर घर में होना चाहिए तथा हर जन को इसे पढ़ना ही नहीं समझना और हृदयंगम भी करना चाहिए । आशा है विषय के अन्य पहलुओं तथा नगर के मास्टर प्लान व विकास जैसे विषयों पर लेखक अपना योगदान आगे भी देंगे । इं. संजीव 'सलिल' पूर्व में भी पर्यावरण संरक्षण, अखिल भारतीय दिव्य अलंकरण, पौधों के गोदीकरण तथा अनाथ बच्चों के संरक्षण व गरीब कन्याओं के दहेजरहित विवाह जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों से जुड़े रहे हैं । अभियांत्रिकी की तकनीकी बारीकियों को सर्वसुलभ कराने का उनका अभिनव प्रयास सही अर्थों में स्वागतेय है । गारे के कच्चे मकानों को भूकम्परोधी बनाने संबंधी उनकी आगामी कृति की अभी से प्रतीक्षा है । जन सामान्य ऐसी पुस्तकों को क्रय करे तभी यह क्रम बना रह सकेगा ।

समीक्षक

समीक्ष्य पुस्तक	:	'भूकम्प के साथ जीना सीखें'
समीक्षक	:	के.बी. सक्सेना
लेखक	:	ई. संजीव वर्मा सलिल तथा ई. एस.एम. देशपाण्डे
प्राप्ति स्थान	:	समन्वय प्रतिष्ठान, बाबू स्टोर्स के पास बड़ा फुहारा, जबलपुर (म. प्र.)

मूल्य : 20 रुपये ।

उच्च मध्य वर्ग की पतनशीलता का निरुपण
२६ वाँ अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

❑ अजय कुमार

जमाने का एक दौर वह भी था जब फिल्म निर्माता-निदेशक हर हमेशा यह एहसास करता था कि फिल्म के जरिए मनोरंजन के अलावा भी कुछ कमिटमेन्ट है उसका समाज के लिए और वह इसका आदर करता था । उन दिनों फिल्म बनाने का भी वैसा ही कोई मकसद हुआ करता था जैसा सड़क बनाने का होता है, जो इंसान को इंसान से जोड़ता था । पर आज फिल्म बनाने का सिर्फ एक ही मकसद है–पैसा बनाना या सिर्फ मनोरंजन करना और वह भी स्वस्थ नहीं भौड़ा मनोरंजन कल के शांताराम, महबूब खान, विमल राय, सत्यजीत रे आदि की जगह ऐरे-गैरे नत्थू खैरे ने ले ली है जो मनोरंजन के नाम पर नंगापन परोसे जा रहे हैं । अश्लीलता देने का घटिया रास्ता लोगों ने अपना लिया है । चाहे वह चोली वाला गाना का फिल्म हो या फिर और कोई... हालांकि दोषी केवल वे नहीं जो ऐसी चीज परोस रहे हैं वरन् वे भी जो ऐसी फिल्म देख और सुन रहे हैं, देखना पसंद कर रहे हैं । देखने और सुनने वाले का संस्कार भी होना चाहिए । आज की शिक्षा प्रणाली ने खासकर नौजवानों को आधा तीतर आधा बटेर बनाकर छोड़ दिया है । विश्वास नहीं होता कि कभी फिल्में भी शालीनता का प्रतिनिधि हुआ करती थीं ।

ऐसे ही दौर में पिछले जनवरी की 10 तारीख को आशंकाओं की धुंध को दिल्ली स्थित तोड़ती हुई ग्रुशगवार दिन शनिवार को सिरी फोर्ट के सभागार में 29वाँ अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का आयोजन हुआ । बाहर से ज्यादा भीतर ताजगी व उत्सुकता । फिल्मी और गैर-फिल्मी हस्तियों की उपस्थिति में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता डी.वी.एस. राजू ने सुपरिचित सिने नायिका मनीषा कोइराला के सहयोग से दीप प्रज्ज्वलित कर इस समारोह का विधिवत् उद्घाटन किया । इस समारोह की मोहकता और बढ़ गई जब ख्याति प्राप्त सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खां ने अपना संगीत छेड़ा और उनके संगीत पर 350 कलाकारों ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया । इस कड़ी को आगे बढ़ाने में 'सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सोनल मान सिंह तथा शोभा की नृत्य प्रस्तुति अप्रत्याशित रूप से अहम् भूमिका अदा की ।

यह समारोह दो खण्डों में बंटा था । एक विश्व सिनेमा खण्ड तथा दूसरा प्रतियोगिता खण्ड । प्रतियोगिता खण्ड में सिर्फ एशियाई निदेशक ही शामिल थे । निर्णायक मंडल के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध निदेशक इस्तवान गाल (हंगरी) के अतिरिक्त फ्रांस के फिल्म निर्माता इहरीस औटएगो, निर्देशका एक्शन बनानी एतमाद (ईरान), फिल्मकार किम डांग (दक्षिण कोरिया) और अभिनेत्री शर्मिला टैगोर (भारत) उसके सदस्य थे ।

वर्ष 1998 के इस अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के निर्णायक मण्डल द्वारा इस बार मात्र छः भाषाओं के केवल 9 फिल्में चुनी गईं जिनमें झांकी खण्ड के लिए निम्नलिखित तीन हिन्दी फिल्में थीं–**हजार चौरासीवें की माँ, चार अध्याय और रूई का बोझ** ।

ज्ञानपीठ सम्मान से सम्मानित महाश्वेता देवी के उपन्यास **हजार चौरासीवें की माँ** में वाह्य सामाजिक अनुभवों, उच्च-मध्य वर्ग के छद्म, पुलिस व्यवस्था की निममता और व्यवस्था के अमानवीय पक्षों के विरूद्ध युवाओं का विद्रोह परिलक्षित होता है । गोविन्द निहलानी के निर्देशन में बनी इस फिल्म में उच्च-मध्यम वर्ग की पतनशीलता और उस माँ की पीड़ा का निरूपण है जो अपने वर्ग की पतनशीलता के बोध के साथ उससे घृणा करने लगता है । अभिनेत्री जया भादुड़ी ने वर्षों बाद पुनर्वापसी कर जता दिया कि अभिनय उनके खून में अभी दौड़ रहा है । **चार अध्याय** पर आधारित फिल्म के निदेशक कुमार साहनी इसमें पारम्परिक तत्वों का विखंडन, सिनेमा से जनसमूह की सामान्य उपेक्षाओं को नकारते और नकार के माध्यम से चेतना संवर्धन करते दिखाई देते हैं । निर्देशक सुभाष अग्रवाल के निर्देशन में बनी फिल्म **रूई का बोझ** में बूढ़े व्यक्ति, उसके पुत्र और पुत्र वधू के बीच रिश्तों को दु:खान्त-हास्यकर रूप में उकेरा गया है । यह फिल्म बिल्कुल किफायती तथा यथार्थ के नजदीक जाकर फिल्माया गया । इस फिल्म की विशेषता है कहानी के साथ इसके पात्र का जुड़ना और उससे भी बढ़कर निदेशक की सोच ।

विश्वखण्ड की फिल्में **'वेलकम टू सराजेवो'** निदेशक मिखाइल विंटर की काफी उद्वेलित करने वाली फिल्म थी । इस फिल्म में बोसनिया के लोगों के दु:ख-दर्द और व्यथा को दर्शाया गया । यह फिल्म पुन: प्रश्न करती है कि क्या हम अब मनुष्यता की परिभाषा भूल चुके हैं । अंग्रेजी की **आउट हाउस** फिल्म के निदेशक लेसली कारवेली ने इस फिल्म में एक एंग्लो-इन्डियन परिवार के आउट हाउस में रहने वाली किरायेदार बंगाली दम्पति के विवाद को दर्शाया है । पति की मामूली-सी आय में थोड़ा इजाफा करने के लिए पत्नी अपने पति की इच्छा के विरूद्ध नौकरी करना चाहती है जो गंभीर विवाद का रूप ले लेता है । मूल विचार में नयापन न होते हुए भी निर्देशन कर्म में ताजगी दिखती है । इसी प्रकार ऋतुवर्ण घोष की बंगाली फिल्म दहन में एक ओर जहाँ मध्यवर्ग के छद्म का पर्दाफाश किया गया है वहीं दूसरी ओर पुरुष शोषित समाज में सार्थक जीवन जीने और त्रासद अनुभवों से उबरने के लिए संघर्ष को उभारा गया है । पंजाबी-हिन्दी की फिल्म **ट्रेन टू पाकिस्तान** में विभाजन की त्रासदी का चित्रण है । टी.एस. नागभरण की कन्नड़ फिल्म **नाग मंडल** में कामातुर तरुणी के सौन्दर्य पर एक सांप मुग्ध हो जाता है । वह उसके पति का वेश धारण कर उसके साथ रहता है, जिससे वह गर्भवती हो जाती है । यह पता चलने पर उसका पति अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाता है ।

मेन स्ट्रीम खण्ड में सम्मिलित 12 फिल्मों में हिन्दी की **परदेश** व **राजा हिन्दुस्तानी** भी थीं ।

महोत्सव का समापन फिल्म थी ब्रिटेन की **दी इंगलिश पैशेन्ट** । निर्देशक एंथनी सिंघेला ने इस फिल्म में युद्ध और उसमें आहत हृदय का भावुकतापूर्वक चित्रण किया है ।

प्रतियोगिता खण्ड की जो फिल्में पुरस्कृत हुईं उनमें **दी किंग आफ मास्कट** स्वर्णमयूर **पेपर एरोप्लेन**-रजत मयूर तथा असमी फिल्म **अदजया**-रजत मयूर उल्लेखनीय हैं ।

दिल्ली से कलकत्ता, मुम्बई, चेन्नई, बंगलौर, तिरुअनंतपुरम और फिर दिल्ली के चक्कर काटते इस समारोह को **'जिप्सी'** उत्सव भी कहा जाता है ।

इतना सब कुछ होते हुए भी दर्शकों से यह महोत्सव उपेक्षित रहा । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि **प्रबुद्धजन खण्डित हैं । उनकी चेतना मात्र पैसे के लिए बोलती है । यही कारण है कि कलात्मक फिल्म या तो डिब्बे में बंद रह जाती हैं या कतिपय फिल्में शो के बाद उतार दिए जाते हैं** । आखिर तभी तो एन. चन्द्रा ने 'अंकुश' जैसी फिल्मों से मुंह मोड़ लिया । हिप्प-हिप्प हुर्रे तथा दामुल जैसे फिल्मों के निर्माता प्रकाश झा व्यावसायिक फिल्मों की तरह पूरी तरफ बेमन ही गए । हिन्दुस्तान में औसतन 900 बनने वाली फिल्मों में मात्र 20-25 फिल्में ही कलात्मक होती हैं । कलात्मक फिल्में देखने के बाद 'सर में दर्द' की बात यदि कहेंगे तो समाज को सही दिशा आखिर कैसे मिलेगी यह अहम् प्रश्न है ।

संपर्क : **बी-27/3-3, तपस्या कम्प्लेक्स, सेक्टर 10, ऐरोली नवी मुम्बई**

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

सदस्यता / ग्राहक प्रपत्र

हम राष्ट्रीय विचार पत्रिका के वार्षिक दो वर्षीय/पाँच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य बनाना चाहते हैं । वार्षिक/दो वर्षीय/पाँच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्यता शुल्क..............................रू पये मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ़ट/चेक सं. ....दिनांक..................................भेज रहे हैं ।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें

नाम... पता..

....पिन कोड........................

इसे यहाँ से काटें

सदस्यता शुल्क

		भारत	विदेश
वार्षिक	–	50 रुपये	3 डॉलर
दो-वर्षीय	–	100 रुपये	5 डॉलर
पाँच-वर्षीय	–	250 रुपये	10 डॉलर
दस-वर्षीय	–	500 रुपये	18 डॉलर
आजीवन	–	1000 रुपये	50 डॉलर

बैंक ड्रफ्ट/चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम देय होगा । संम्पर्क करें :-

प्रधान संपादक/संपादक /सह संपादक

राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1दूर:-228519

पत्रिका के आजीवन सदस्य

1. **मान० न्यायाधीश श्री बी.एल. यादव**
   वरीय अधिवक्ता, चैम्बर-19, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली
2. **डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह**
   सती स्थान, मसौढ़ी, पटना
3. **श्री नागेन्द्र कुमार वर्मा**
   21, कान्ती सदन, सरदार पटेल पथ, उत्तरी श्रीकृष्णपुरी, पटना-13
4. **श्री सिद्धेश्वर**
   'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
5. **श्री सिद्धेश्वर प्र. सिंह**, मुख्य कार्मिक प्रबंधक, स्वशासन
   एन.सी.एल. पोस्ट-सिंगरौली, जिला सिंधी (मध्य प्रदेश)
6. **श्री केदार प्र. सिन्हा**, कार्यपालक अभियंता
   रोड नं.-13 सी, राजेन्द्र नगर, पटना-16
7. **श्री रतन कुमार**, क्वार्ट न. एम 5/4, दूग्धा कोलवाशरी, बोकारो
8. **श्री सिद्धेश्वर चौधरी**, पूर्व कार्यपालक अभियंता
   न्यू रमड़िया (आर.एन. 15 के पीछे) सव नेहरू पब्लिक के पीछे अनिसाबाद, पटना-2
9. **श्री राम सागर प्रसाद**, क्वार्ट न. 3117, सेक्टर 4 जी,बोकारो इस्पात नगर
10. **श्री शिव प्रसाद सिंह**, कार्यपालक अभियंता विजय निकेतन, सालिमपुर अहरा, गली नं.-4, पटना
11. **श्री देवेन्द्र कुमार सिंह**, 1, अनुराग मैन्सन, शिव वल्लभ रोड, अशोक वन, दहिसर (पू.) मुम्बई-68
12. **श्री ज्वाला प्रसाद**, प्रबंध निदेशक
    गोल्डेन पोलिमेक्स (इण्डिया) लिमिटेड, उमा शंकर लेन, मोगलपुरा, पटना सिटी-8
13. **श्री सुरेश प्रसाद**
    त्रिमूर्ति पैलेस, बाकरगंज, पटना-4

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूर्व)
बाकर गंज, पटना-800 004
दूरभाष : 662837

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)
दूरभाष : 65769, फैक्स : 65123

आधुनिक आभूषणों के निर्माता
नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी तथा
हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश कुमार सुनील कुमार

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

☎ 8954777 (O)
544471 (R)

Office :

Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai - 400 068

Factory :

Plot No.10, Dewan & Sons, Udyog Nagar, Palghat, Distt.-Thane
Mumbai (Maharashtra)

Coral Computer Print, Fraser Road, Patna-1, Ph. : 231708